बच्चन के नाम

पंत के सौ पत्र



आज के पाठक रचना से आगे जाकर रचनाकार में भी रुचि लेने लगे हैं। यही कारण है कि पत्र, संस्मरण, डायरी, आत्मकथा आदि इन दिनों पाठकों को विशेष रूप से आकर्षित करने लगे हैं। इनके द्वारा रचनाकार के व्यक्तित्व का कहीं अधिक अंतरंग परिचय प्राप्त होता है।

कवि श्री सुमित्रानंदन पंत की सत्तरवीं वर्षगांठ के अवसर पर प्रकाशित उनके सौ पत्रों का, इन सभी दृष्टियों से विशेष महत्त्व है। इन पत्रों का विशिष्ट आकर्षण यह भी है कि ये पंत जी के प्रिय बन्धु, हिन्दी के मान्य कवि डॉ० बच्चन को संबोधित हैं। ये पत्र, वास्तव में प्रथमतः और अन्ततः पत्र ही हैं—निजी, घरेलू, सहज, अनलंकृत और इसी नाते मोहक भी।

कहने की आवश्यकता नहीं कि ये पत्र प्रकाशित किए जाने के विचार से नहीं लिखे गए थे, तथापि हमारी भाषा के दो वरिष्ठ कवियों की पारस्परिक घनिष्ठता, दीर्घ मैत्री और निर्मल सौहार्द के प्रतीक-रूप में इनका प्रकाशन, निश्चय ही एक सार्थक साहित्यिक दस्तावेज़ का प्रकाशन समझा जाएगा।

चार रुपये

बच्चन के नाम

पंत के सौ पत्र



सुमित्रानंदन पंत के सौ पत्र

बच्चन को लिखित

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

पंत के सौ पत्र

बच्चन के नाम

मूल्य : चार रुपये (4·00)

पहला संस्करण : मई 1970 ; © डॉ॰ हरिवंश राय बच्चन
हरिहर प्रेस, दिल्ली, में मुद्रित
PANT KE SAU PATRA (Letters) : Edited by Dr. Harivansh Rai Bachchan

श्री सुमित्रानदन पंत की सत्तरवीं वर्षगाँठ पर
उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के
प्रेमियों को

२० मई, १९७०

पाठकों से

आज श्री सुमित्रानंदन पंत के सौ पत्र, जो उन्होंने समय-समय पर मुझे लिखे हैं, आपके हाथों में रखते हुए मैं बड़ी प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ।

आगामी २० मई को पंत जी की सत्तरवीं वर्षगाँठ होगी। उनकी साठवीं वर्षगाँठ पर मैने 'कवियों में सौम्य संत' नामक कृति प्रस्तुत की थी। उनकी सत्तरवीं वर्षगाँठ पर उनके पिछले दस वर्ष के कृतित्व पर एक समीक्षात्मक पुस्तक लिखना चाहता था; किंतु अपने आत्म-चित्रण में व्यस्त होने के कारण यह संभव न हो सका। पुस्तक लिख सकता तो पत्र भी उसके अंग होते—'कवियों में सौम्य संत' में उनके १२४ पत्र भी थे, आपको याद होगा। इस समय इन पत्रों को प्रस्तावित पुस्तक के एक अंश के रूप में स्वीकार करें। पूरक पुस्तक के लिए मेरा वादा रहा।

खड़ी बोली हिन्दी कविता के इतिहास में पंत जी का जो स्थान है, वह सर्वविदित है। आनेवाली पीढ़ियाँ उनके व्यक्तित्व और कृतित्व में रुचि लेती रहेंगी, इसमें शायद ही किसीको संदेह हो। किसी लेखक के पत्रों से उस के जीवन, विचार, सृजन पर कितना सटीक प्रकाश पड़ता है, यह भी साहित्य के शोधार्थियों से छिपा नहीं है। मुझे पूर्ण विश्वास

है कि इस दिशा में पंत जी के पत्र महत्त्वपूर्ण सिद्ध होंगे ।

इन पत्रों के संबंध में कुछ बातें बता देना आवश्यक है ।

मैंने पंत जी से प्राप्त प्रत्येक पत्र को सुरक्षित रक्खा है ।

ये पत्र 'कवियों में सौम्य संत' के १२४ पत्रों के ठीक बाद आरम्भ होते हैं और क्रमानुसार सौ पर समाप्त होते हैं । इनके बाद के भी दो-ढाई सौ पत्र मेरे पास हैं जो किसी अन्य समय आपके सम्मुख रक्खे जाएँगे ।

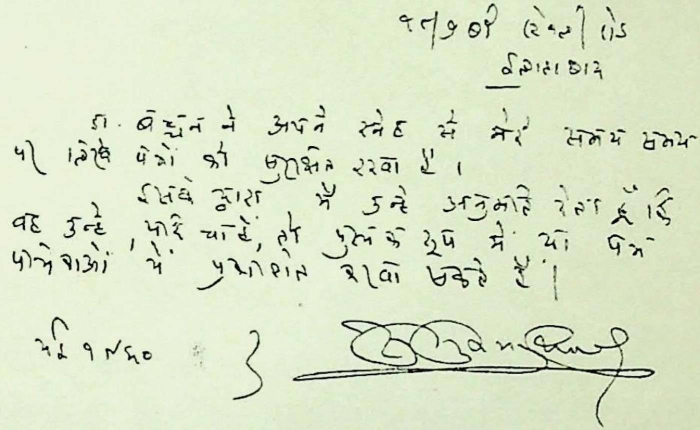
पत्र जिस रूप में मुझे मिले थे, उसी रूप में यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं—बिना किसी काट-छाँट, संशोधन, परिवर्तन के । उनमें जो भी शब्द रोमन लिपि में थे, उन्हें यहाँ रेखांकित कर दिया गया है । तिथि या शब्द का उल्लेख यदि कहीं छूट गया हो, तो उसका संकेत कोष्ठकों के अंतर्गत कर दिया गया है ।

मैं पंत जी के प्रति आभारी हूँ कि उन्होंने इन पत्रों को प्रकाशित करने की मुझे अनुमति दी ।

१३, विलिंगडन क्रिसेंट
नई दिल्ली-११
१-४-७०

—बच्चन

इस पुस्तक के पांडुलिपि-सम्पादन और प्रूफरीडिंग में श्री अजित कुमार ने जो सहयोग किया उसके लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ । —बच्चन



१८/७ बी स्टेनली रोड

इलाहाबाद

डा. बच्चन ने अपने स्नेह से मेरे समय समय पर लिखे पत्रों को सुरक्षित रखा है।

इसके द्वारा मैं उन्हें अनुमति देता हूँ कि वह उन्हें, यदि चाहें, तो पुस्तक के रूप में या पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित करवा सकते हैं।

मई १९६०

१८/७ बी, स्टेनली रोड,

इलाहाबाद

डा० बच्चन ने अपने स्नेह से मेरे समय-समय पर लिखे पत्रों को सुरक्षित रखा है।

इसके द्वारा मैं उन्हें अनुमति देता हूँ कि वह उन्हें, यदि चाहें, तो पुस्तक रूप में या पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित करवा सकते हैं।

मई, १९६० सुमित्रानंदन पंत

१

इलाहाबाद
१९।४।६०

प्रिय बच्चन,

अब मैं अच्छा हूँ, यद्यपि बहुत कमज़ोर। क्लोरोमाइसिटीन ३ दर्जन कैपसूल्स खानी पड़ीं—छोटा-मोटा पैरा टायफ़ाइड ही था। ७ दिन में बुखार टूटा।

आज तुम्हारी रिंग मि० चौधरी के हाथ भेज रहा हूँ। वह अभी १० बजे सवेरे आए थे, कानपुर होते हुए दिल्ली पहुँचेंगे। उन्हें सौंप दी है और तुम तक पहुँचाने को कह दिया है। पहुँच तुरंत देना। तुम्हें एक पत्र शांता ने लिखा था, तुमने उत्तर नहीं दिया। आशा है स्वस्थ हो।

मुझे बड़ा दुख रहा कि दिल्ली जाने के पहिले ही यहाँ बीमार पड़ गया। किसी से भेंट नहीं हो सकी।

आशा है तुम सपरिवार सानंद हो। तेजी जी को बहुत २ स्नेहपूर्ण नमस्ते कहना—बच्चों को प्यार—

पत्र शीघ्र देना—नए समाचार भी।

सप्रेम—
साइंदा

२

इलाहाबाद
७-५-६०

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे दोनों पत्र मिल गए थे। इधर मुझे स्लो टेम्परेचर कुछ दिन रहा इससे उत्तर शीघ्र नहीं दिया। अब ठीक हूँ। १९। २० तक वहाँ पहुँच जाऊँगा। कृपया श्री आर० सी० टंडन जी से अवश्य मेरे रहने के बारे में कह लेना—उन्हें असंतुष्ट करना ठीक नहीं। उनके यहाँ ठहर जाऊँगा, सवेरे तुम्हारे यहाँ आकर दिन-भर वहीं रहूँगा। पर उनकी स्वीकृति अवश्य ले लेना।

आज चि० अमित और मि० चौधरी सवेरे मिले थे—तेजी जी को १२ कुलफ़ी भेजने के लिए बहुत २ धन्यवाद दे देना—नवभारत टाइम्स की कोई प्रति मुझे नहीं मिली—अब वहीं आकर देखूँगा—रखे रहना।

आशा है सपरिवार खूब प्रसन्न हो। मैं अब अच्छा हूँ। ऋषिकेश हो आए बड़ा अच्छा किया।

पत्र देना—शेष मिलने पर—तेजी जी को बहुत २ स्नेहपूर्वक नमस्ते कहना।

सप्रेम—
साइंदा

३

इलाहाबाद
१२-५-६०

प्रिय बच्चन,

तुम्हें मेरा पिछला पत्र मिल गया होगा। उत्तर न मिलने से संदेह होता है कि शायद न मिला हो।

मैं वहाँ २० ता० को प्रातःकाल पहुँचूँगा। आशा है मेरे वहाँ रहने के बारे में मि० टंडन से तुम्हारी बातें हो गई होंगी। यदि वहीं रहना है तो दिन का खाना २० ता० को अपने साथ रख लेना दिन को वहीं विश्राम भी कर लूँगा। २१ ता० को संभवतः रात को तुम्हारे यहाँ मेरी गोष्ठी है। २२ ता० को आ० पंत जी से मिलूँगा और श्री पुराणी जी से मिलने श्री अरविन्द आश्रम भी जाऊँगा। संभवतः एक दिन वहाँ और रुकना पड़े।

आशा है तुम और तेजी जी प्रसन्न हो। अमित यहीं है. सकुशल है। एक बार उससे भेंट हुई थी, शायद सवेरे के समय ४-५ घंटे पढ़ता है—कल मिस्टर चौधरी फ़ोटो लेने आये थे, उन्हीं से मालूम हुआ था। तेजी जी को बहुत २ प्यार तथा नमस्कार कहना।

शेष बातें मिलने पर ही हो सकेंगी—तुम्हारी लेखमाला नहीं देख सका, अब वहीं पढ़ूँगा।

बहुत प्यार—
साईंदा

४

इलाहाबाद
१६-५-(६०)

प्रिय बच्चन,

कवि सम्मेलन का निमंत्रण शनिवार को मिला : बड़ी निराशा हुई, उसमें केवल रसपान की चर्चा थी—षड्‌रस की नहीं। ख़ैर, वहाँ पहुँचने पर हिसाब-किताब समझ लिया जायगा।

भई बच्चन, टंडन जी का पत्र मुझे भी मिल गया है। उनकी इच्छा है कि मैं इस अवसर पर उन्हीं के साथ ठहरूँ। वह हैं सयाने गंभीर व्यक्ति, अतः तुम्हीं मान जाओ। मैं २० ता० को सवेरे की गाड़ी से पहुँचूंगा जो वहाँ संभवतः ६ बजे प्रातः पहुँचती है। १० बजे टंडन जी दफ़्तर चले जाएँगे—तुम मुझे श्री तेजी से कहकर अपने यहाँ बुला लेना—वहीं भोजन-विश्राम दिन में हो जाएँगे। शाम को साथ ही सभा में चले जाएँगे। कवि सम्मेलन के अवसर पर भोजन की कमी की भी पूर्ति हो जाएगी—मैं सोचता हूँ इसमें तो कोई कठिनाई नहीं होगी। २१-२२ ता० को मुझे बहुत काम है (१) श्री अरविंद आश्रम जाना—वहाँ पुराणी जी (पुराणी जी) आए हुए हैं—(२) फ़ेडर्स लायड्स कार-पोरेशन—कैनौट सरकस में जाना—उनसे काम है (३) २२-२३ दोनों दिन तीसरे पहर डी० जी० ने बैठकें बुलाई हैं—एक तो सेलेक्शन कमेटी की है, जिसमें तुम भी हो।

स्वास्थ्य अब मेरा ठीक ही है। आशा है तुम सपरिवार सानन्द हो। १६ ता० अर्थात् आज शाम अमित, डा० सामंत इत्या० सब मेरे यहाँ चाय पीने आ रहे हैं, और भी लोग हैं। संभव हुआ तो शांता भी आएगी, नहीं तो अभी उसने कुछ निश्चित नहीं किया है।

तेजी जी से बहुत २ मुआफ़ी माँग देना कि टंडन जी का आग्रह नहीं टाला जा सका। वैसे हृदय तो मेरा उन्हीं के पास है—तुम्हारे

पास भी नहीं।

तेजी जी ने जो एल्यूमीनियम की १२ कुलफ़ियाँ भेजी थीं वह मेरे फ्रिज में नहीं आतीं--साइज़ बड़ी है—वे सब कुंवर ने ले लीं। उनसे छोटी साइज़ की दिल्ली में सुलभ हुईं तो १-२ दर्जन मैं लूंगा।

अबके कार्यक्रम बड़ा अस्थिर है—या तो दिल्ली से ही इला को लेकर पहाड़ चला जाऊँ या फिर प्रयाग लौटकर २।३ जून तक जाऊँ। आज इला का ट्रंक आएगा, उससे कार्यक्रम निर्धारित होगा।

शेष मिलने पर—

सप्रेम—
सा॰ इंदा

५

१८/७ बी, स्टैनली रोड,
इलाहाबाद
२७-५-६०

प्रिय बच्चन,

गर्मी और थकान से परेशान हूँ—तुम्हें शीघ्र पत्र नहीं लिख सका—

यहाँ पहुँचकर तुम्हारे निश्चल स्नेह और तेजी जी के मधुर स्नेह की बहुत २ याद आती है—उस जन्म के तुम मेरे भाई ही रहे होंगे इसीलिए तुमसे इतना सहज प्यार मिलता है। इला का फ़ोन आने पर ही वहाँ आने की तिथि का निश्चय होगा—कल-परसों तक वह फ़ोन करेगी—तुम भी याद दिला देना—

दिल्ली का उत्सव तुम लोगों के अकारण स्नेह का ही समारोह था—और किसी रूप में मेरा मन उसे ग्रहण नहीं कर सकता था—

कल तक और पत्र भी लिख सकूँगा—यहाँ का महापालिका का उत्सव अक्तूबर ९-१० को स्थगित कर दिया गया है—ऐसा सुनता हूँ।

आशा है तुम और तेजी और अमित सब सानंद हो—तेजी जी को बहुत २ प्यार देना—

शेष फिर लिखूंगा—

सप्रेम—सुमित्रानंदन पंत

६

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
३०-५-६०

प्रिय बच्चन,

मेरा पिछला पत्र शांता के पत्र के साथ मिल गया होगा। अभी तक पहाड़ जाने की कोई तिथि ही निश्चित नहीं हो सकी—एक तो एअर कंडिशनर दिल्ली से आनेवाला था उसके लिए रुका हूँ। यह जो फ़्रेडसं लायड्स कारपोरेशन ने भेजा है वह यूज़्ड और ओल्ड है। उन्होंने २ ता० तक दूसरा भेजने को कहा था, अभी तक कोई समाचार नहीं—दूसरा इला का फ़ोन भी नहीं आया कि उसने कहीं जाने का निर्णय कर लिया है या नहीं—संभवतः आजकल में आता हो। तीसरा अभी रिज़र्वेशन भी नहीं किया। कहीं ऐसा न हो मेरे साथ जाने के भरोसे में तुम्हारा नैनीताल जाने का कार्यक्रम भी न बन पाए। वैसे दोनों काम सधते ही मैं तुम्हें तार द्वारा सूचित कर दूंगा। डा० सामंत कल बंबई गई हैं—कुंवर यहीं है—१०।१२ दिन बाद जाएगा।

'कवियों में सौम्य संत' पढ़ डाला—बड़ी फ़ालतू चिट्ठियाँ हैं। वैसे छापे की ग़लतियाँ बहुत रह गई हैं। 'स्मृति चित्र' में भी 'वाणी' के प्रकाशन की तिथि छापे की ग़लती से बदल गई है। बंबई से इलाहा-

बाद आने की तिथि के बारे में मैं संदिग्ध था—अगले संस्करण में सुधार दूँगा।

आशा है तुम तेजी और अमित खूब प्रसन्न हो। तेजी जी को बहुत २ याद कर देना। दिल्ली में तुम लोगों से जितना अभूतपूर्व स्नेह मिला उसकी बार २ याद आती है।

अब जब दुबारा पढ़ूँगा तब तुम्हारी पुस्तक की छापे की त्रुटियों पर निशान लगा दूँगा।

प्रयाग में गर्मी बहुत है। यहाँ दिल्ली की सी रातें होतीं वहाँ प्रयाग के से दिन! तब राजधानी की सरगर्मी से वातावरण की गर्मी का मेल रहता।

इला के समाचार मिलने पर तुम्हें सूचना अवश्य दूँगा।

वहाँ के समाचार लिखना।

बहुत २ प्यार

तुम्हारा ही
साइँदा

७

इलाहाबाद
२-६-(६०)

प्रिय बच्चन,

आज ही प्रातः इला का फ़ोन मिला—राजा उसे बरेली तक छोड़ देगा—५ ता० को हम लोग यहाँ से सीधा वाया बरेली नैनीताल को चलेंगे—६ को तीसरे पहर तक वहाँ पहुँच जाएँगे—बिड़ला विद्या मंदिर में रहेंगे। आशा है तब तुम वहीं होगे—वहाँ फ़ोन से बि० वि० मंदिर में पं० गोविंदवल्लभ पांडे जी को सूचित करना कि कहाँ ठहरे

हो···-संभव हुआ मिलेंगे। ४।५ दिन नैनीताल रहकर रामगढ़ होते हुए अलमोड़ा जाऊँगा—वहाँ से जुलाई प्रथम सप्ताह में प्रयाग।

यहाँ गर्मी बहुत है। वहाँ आने का कार्यक्रम इला के कारण नहीं बन सका। तेजी जी और अमित प्रसन्न होंगे।

नवीन समाचार सामान्य।

सप्रेम
सुमित्रानंदन

८

इलाहाबाद
१०-६-(६०)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिल गया था। हमारे समाचार तुम्हें मि० चौधरी से मिल गए होंगे। अभी हम इलाहाबाद ही हैं। शांता संभवतः कल तक अल्मोड़ा जाए, मुझे तो यहीं रहना पड़ेगा लगता है। फ़ालतू चिट्ठियों की बात इसलिए लिखी थी कि तुमने छपवाकर उन्हें अधिक महत्त्वहीन बना दिया—वैसे फ़ालतूवाद (दर्शन) से मैं परिचित हूँ।

'हार' तुम्हें कैसा लगा ? मेरा तब का साहसिक अभियान ! केवल 'अबला तुही है सबला' पंक्ति पसंद आई ? है तो उपन्यास भी फ़ालतू ही पर तुम फ़ालतूवादी हो, संभवतः उसमें कोई बात अच्छी लगे।

तेजी जी तथा अमित सानंद होंगे। तेजी जी को बहुत-बहुत याद कर देना।

तुम्हारा क्या कार्यक्रम है ? पत्र देना—

सप्रेम
साईंदा

९

नैनीताल
२२-६-(६०)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे शाप से मुक्त होकर किसी तरह २१ ता० को यहाँ पहुँचे—२४ ता० को अल्मोड़ा जा रहा हूँ। ६ ता० वहाँ से चलकर ७ ता० की जुलाई को प्रयाग। तुम्हारा पत्र नैनीताल में मिला। यहाँ बहुत पानी बरस रहा है, कहीं आना-जाना संभव नहीं। मैं ठीक हूँ—इलाहाबाद में लू-लपट से जूझकर अब यहाँ आँधी-पानी से जूझ रहा हूँ—तुम मेरे लिए चित्रावली बना रहे हो—यह अच्छा हुआ।

तेजी जी को बहुत २ स्नेहपूर्वक नमस्ते कहना—अमित को प्यार—आशा है सपरिवार प्रसन्न हो—

सप्रेम
साइँदा

१०

इलाहाबाद
१७-७-(६०)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं यहाँ ७ ता० को पहुँच गया था। १० को मि० चौधरी से ज्ञात हुआ कि तुम दिल्ली पहुँच गए हो—उसके बाद स्ट्राइक के कारण पत्र लिखना संभव न था। तुमने 'कवियों में सौम्य संत' में मुझपर अपना बहुत २ स्नेह उँडेला है—पढ़ गया हूँ—कैसे कृतज्ञता प्रकट करूँ! तुम्हारे स्नेहपूर्ण हृदय की

झाँकी पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

तुम्हारे लोकगीतों की धुनों पर लिखे गीत बहुत अच्छे लगते हैं— श्री गिरिजाकुमार जी की भी यही सम्मति है—एक संग्रह तो उनका दो ही। मैंने तो जनवरी में जब दिल्ली में सुने थे तभी मुझे (?) हृदय से अपनी सम्मति तथा सहमति दे दी थी।

तेजी जी और अमित प्रसन्न होंगे। मेरा बहुत स्नेह देना।

जयपुरियां नवंबर में कलकत्ता आने को ज़िद कर रहे हैं—तुमने भी कुछ ऐसा ही कहा था—कार्यक्रम तुम्हारे जन्मदिवस पर रहेगा— अपनी स्वीकृति और तिथि लिखना—विस्तार भी (से ?)।

लंबा पत्र तुम्हारा पत्र आने पर—

सप्रेम—

तुम्हारा ही
साईंदा

११

इलाहाबाद
५-८-(६०)

प्रिय बच्चन,

तुमने मेरे पत्र का उत्तर नहीं दिया—क्या तुम्हें भी अब पत्र नहीं मिलते ? (अ ?) स्वस्थ हो या व्यस्त ?

आशा है सपरिवार सानंद हो। तुम मेरे लिए जन्मोत्सव के संबंध की चित्रावली भी भेजने वाले थे। यहाँ पानी खूब बरस रहा है— इधर मैं भी व्यस्त ही सा रहा—बाहर के कामों में। पर तुम्हारा पत्र न मिलने के कारण अच्छा नहीं लगता। नवंबर में कलकत्ता तुम्हारे जन्मोत्सव पर जाने के लिए पिछले पत्र में पूछा था, उसका उत्तर भी

तुमने नहीं दिया। वहाँ कलकत्ते में कुछ लोग मुझे बुलाना चाहते हैं। मैंने तुम्हारे जन्मोत्सव के अवसर पर जाने की संभावना उन्हें बतला दी है—अतः तिथि आदि तथा जाने के निश्चय के बारे में लिखो—

सप्रेम—

साईंदा

१२

इलाहाबाद
१५-८-(६०)

प्रिय बच्चन,

स्वतंत्रता दिवस की बधाई लो। तुम्हारा ८-८ का पत्र मिल गया था—इधर मैं मुग़लये आज़म देखने गया था—वहाँ से फ्लू पकड़ लाया—एक सप्ताह लेट लगानी पड़ी—आठ पेनिसिलीन टेबलेट खाईं—अब ७०% ठीक हूँ।

तुम्हारा पिछला पत्र जिसमें रामानुजलाल जी का पत्र था मुझे नहीं मिला। डाकियों की तो सभी पर इलाहाबाद से नगरों पर मेहरबानी रहती है—हाँ, दिल्ली वालों से डरते होंगे। श्री पुराणी जी का पत्र यहाँ भी नहीं आया। श्री तेजी जी को ध्यान सिखाने में एक डर है कि कहीं फिर मन उन्हीं का ध्यान न करने लगे। अतः तुम्हीं सिखाओ तो ठीक है।

श्री अज्ञेय जी के दो पत्र आ चुके हैं। वे राष्ट्रपति के हाथ से मुझे अपनी 'रूपांबरा' भेंट करना चाहते हैं—मुझे तो यह सब अनुचित लगता है। पहिली बार भी मना कर दिया था—दूसरी बार भी। अब २१।२२ तक आनेवाले हैं। लिखा है यह बात अपने ही तक रखिए। तुम अपने ही हुए इसलिए लिख रहा हूँ।

अमित को कभी २ प्यार से पुचकार दिया करो। सभी किशोर एक से होते हैं—माथापच्ची करनी पड़ती है। असहयोग किसी से नहीं करना चाहिए—परिवार वालों से तो कभी नहीं। तो तुम अपनी सालगिरह के अवसर पर कलकत्ता नहीं जाना चाहते? क्यों? ठीक से सोचकर लिखो तो फिर उन लोगों को मैं भी मना कर दूँ। क्योंकि अपने लिए तो मैं जाने से रहा—रस नहीं मिलता।

१२ ता० को बुख़ार के कारण तेजी जी को मेनी हैपी रिटर्न्स का तार देना भूल गया। अब मेरी ओर से और शांता की ओर से बहुत २ बधाइयाँ और शुभकामनाएँ देना। स्वास्थ्य जल्दी ठीक हो। और बहुत २ भगवान की कृपा हो। अब लगता है तेजी जी का शेष जीवन भगवत भक्ति ही में व्यतीत होगा। तुम-हम तो चेलों में हैं ही—और भी बहुत होंगे। आश्रम प्रयाग ही में खोलें—प्रसादी में हमारा भी हिस्सा रहेगा। मेरा बहुत २ नमस्कार कहना।

इधर मैं भी कुछ काम नहीं कर रहा हूँ। तुम्हारा गीत सोनमछली वाला धर्मयुग में पढ़ा, बड़ा रस मिला। मैंने २६ जनवरी ६० से अभी (तक ?) कुछ नहीं लिखा है।

आशा है तुम प्रसन्न हो। श्री जीवनप्रकाश जोशी जी को मेरा नमस्कार तथा बधाई कहना।

सप्रेम—

साईंदा

१३

(भारत सरकार)
साहित्य सलाहकार (हिन्दी), आकाशवाणी

पत्रांक पी० एल० पी० (एस)-१

७, थार्नहिल रोड,
इलाहाबाद
२३-८-'६०

प्रिय बच्चन,

*"मुझे आपको यह सूचित करते हुए हर्ष होता है कि तारीख ४ अक्टूबर, '६० को मंगल के दिन आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से ९-३० बजे रात्रि के समय एक अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन की योजना की जा रही है। मैं आपसे व्यक्तिगत रूप से भी प्रार्थना करता हूँ कि आप उसमें सम्मिलित होकर हमें अवश्य उपकृत कीजिए। ऐसे अखिल भारतवर्षीय आयोजन की सफलता के लिए आपकी उपस्थिति अत्यन्त अनिवार्य तथा अभिनन्दनीय है। आशा है आप इस अवसर पर अवश्य दर्शन देने की कृपा करेंगे।" श्री जोशी जी से मालूम हुआ कि तुम नहीं आ सकोगे। बच्चन, अवश्य आना। अब प्रयाग-लखनऊ से प्रायः साल में एक ही अ० भा० क० स० होता है। तुम्हारा रहना कवि सम्मेलन में आवश्यक है। आशा है अवश्य आओगे।

विनीत,
सुमित्रानंदन पंत

---

*कोट्स का हिस्सा रेडियो के गश्ती पत्र का है।—संपादक

१४

इलाहाबाद
३१-८-(६०)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे दोनों पत्र मिल गए थे। इधर तो घर अस्पताल बन गया था। पहिले तो मेरा फ्लू ही बड़ी कठिनाई से जा सका। उसके बाद ही शांता भी बीमार पड़ गई। तुम्हें पत्र देर से दे रहा हूँ क्षमा करना। मि० चौधरी से यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तेजी जी का स्वास्थ्य अब अच्छा है।

श्री गुप्त जी के अभिनंदन ग्रंथ के लिए या तो मुझसे कहा नहीं गया या मैं ही भूल गया। इसका खेद है कि मेरी कोई चीज़ उसमें नहीं जा सकी। कभी दिल्ली आने पर तुमसे लेकर देखूंगा। बच्चन, जोशी जी चाहते हैं कि तुम लखनऊ कवि सम्मेलन में ४ अक्टूबर को अवश्य सम्मिलित होवो। मेरा भी अनुरोध है—तुम्हारे बिना रंग फीका रहेगा। एक साल बाद हो रहा है—श्री दिनकर और नरेन्द्र भी आ रहे हैं। किसी प्रकार छुट्टी लेने का प्रबंध करो—वहाँ कुछ रिकार्डिंग भी करवा लेना—लखनऊ बार २ कहाँ जा सकते हो। 'मुग़ले आज़म' में तो मि० चौधरी ही ले गए—भला मुझे तुम्हारी मधुबाला उर्फ़ गुड़बाला को देखने का साहस ही कैसे हो सकता है! फिर भी हिन्दी चलचित्रों को सामने रखते हुए ऐसी बुरी नहीं लगी। गाने मामूली हैं—मधुबाला के लिए तो भला-बुरा तुम्हीं कह सकते हो—पृथ्वीराज तथा शीशमहल के दृश्य बुरे नहीं रहे। आशा है तुम सपरिवार सानंद हो। एक बात और—तुम अमित पर बहुत नाराज़ रहते हो सुना—या उससे असहयोग करते हो या फटकारते हो—दोनों तरीक़े ठीक नहीं। उसकी उम्र में सभी क़रीब २ वैसे ही होते हैं। तुम कैसे थे? नहीं जानता। पर तुम्हें सब संतान का विष पीकर उससे

स्नेह के साथ संयत बर्ताव रखना चाहिए—तेजी जी को भी। संतान पर, कहते हैं, गुस्सा इसलिए आता है कि वह माँ-बाप की कमियों तथा त्रुटियों को अपने विकास में फिर से पुनर्जीवन देकर उन्हें दुहराता है—यह जो भी हो, पर अब निश्चय कर लो कि कभी उस पर क्रोध, चिढ़ या सूखापन प्रकट नहीं करोगे—संयत स्नेहपूर्ण सीखें ही जादू का असर समय पर करेंगी—धीरज सब गुणों की नींव है—धीरज रखो—विचलित नहीं होना चाहिए—

शेष फिर—

बहुत प्यार—

साईंदा

१५

इलाहाबाद
७-९-(६०)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे पत्र मिल गए थे। मैं उत्तर देने ही वाला था कि अभी २ श्री वात्स्यायन जी का ट्रंक काल आया कि १८ ता० सितंबर को सवेरे मुझे राष्ट्रपति भवन में 'रूपांबरा' की भेंट के संबंध में उपस्थित होना है। मैंने मैथिली बाबू को कुछ दिन पहिले ट्रंक किया था कि आप इस बारे में वात्स्यायन जी को मना कर दें—पर परिणाम कुछ नहीं हुआ। अतः १६।१७ ता० तक मैं दिल्ली पहुँचूंगा—तुम रेलवे स्टेशन पर कृपया मिलना, या अजित को भेज देना। ता० तार द्वारा सूचित करूँगा। और बातें तो मिलने पर होंगी। अगर १६ को आया तो १८ को, १७ को आया तो १९ को प्रयाग लौट जाऊँगा—रात की गाड़ी से। या हो सकता है १७ को सवेरे वहाँ पहुँचूं—ठीक बात तार से

सूचित करूंगा।

अभी २ लोकप्रिय कवि के अंतर्गत तुम्हारे द्वारा मेरा संग्रह भी मिला। बहुत सुंदर निकला है—भूमिका तो मेरी कविताओं से भी कवित्वपूर्ण तथा सुंदर है। किस प्रकार तुम्हें धन्यवाद दिया जाए ! तुम्हारी रिकार्डिंग्स के लिए लखनऊ जोशी जी को लिख दिया है। सब प्रबंध हो जाएगा। यदि तुम प्रयाग के रास्ते गोरखपुर जा रहे हो तो दो रिकार्डिंग्स यहाँ पर हो सकते हैं। मिलने पर तै हो जाएगा। क्या करूँ—अब तो आना है ही—प्रसन्नता यह है कि तुमसे भेंट हो जाएगी। तुम्हारे ही पास ठहरूँगा।

सस्नेह—

साईंदा

१६

इलाहाबाद
८-६-(६०)

प्रिय बच्चन,

कल रात को एक पत्र तुम्हें डाल चुका हूँ। अभी सवेरे लीडर प्रेस से समाचार मिला कि श्री फिरोज़ गाँधी जी का हृदय-गति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। इससे दुःखद क्या हो सकता है ! हमारे वृद्ध प्रधान मंत्री और देश पर अर्पित यज्ञ आहुति सी इंदिरा जी। उनका तो हृदय ही दो टूक हो गया होगा। हृदय-रोग तो इस युग में मृत्यु के लिए इंदुमती की फूलों की माला सा हो गया है। बस जवान आदमी को छुआ और वह गया। मुझे बड़ा ही आघात लगा है। मैं तो प्रधान मंत्री जी के परिवार से निकट से परिचित नहीं—अपनी बातें तुम्हें लिख रहा हूँ। आशा है तुम और तेजी पंडित जी के परिवार को प्रबोध

दोगे। समय मिलने पर इंदिरा जी से मेरी ओर से भी हार्दिक संवेदना प्रकट कर देना।

अज्ञेय जी वाला समारोह तो अब स्थगित हो जाना चाहिए। ऐसी दुःखद घटना के बाद ही ९।१० रोज़ में इस प्रकार का समारोह राष्ट्रपति को भी नहीं स्वीकार करना चाहिए। आज रात को अज्ञेय को ट्रंक करूँगा कि उसे स्थगित करवाइए। मेरा तो पहिले ही जी नहीं था। अब तो मुझे हार्दिक कष्ट होगा।

तुम भी अज्ञेय जी को फ़ोन करके उन्हें डिसुएड करने का प्रयत्न करना—बड़े हठी हैं। मेरे ३-३ पत्रों के बाद भी राष्ट्रपति से निश्चित कर लिया। गरीब की गाय, कोई दुह ले।

आशा है तेजी जी वहाँ लौट आई होंगी। वहाँ के समाचार देना। भगवान ऐसे मर्मांतक विछोह में पंडित जी के परिवार को शांति तथा मनोबल दे—यही प्रार्थना है।

तुम्हारा
सुमित्रानंदन पंत

१७

इलाहाबाद
९-९-(६०)

प्रिय बच्चन,

मेरे पिछले दोनों पत्र मिल गए होंगे। कल श्री वात्स्यायन जी का फ़ोन फिर से आया कि समारोह होने जा रहा है—अतः मैं १६ ता० ४ बजे दिल्ली एक्सप्रेस से यहाँ से चलकर १७ ता० सवेरे ही दिल्ली पहुँच जाऊँगा—१९ की रात को चलकर २० को वापस। आशा है तुम अजित को मुझे लेने स्टेशन पर भेज सकोगे। तुम्हें तो स्वयं कष्ट

होगा। चलो, तुम लोगों से भेंट हो जायगी, यही इसमें अच्छाई दिखती है। और तो झंझट है। तुम्हारी मुक्तछंद की कविता राव साहब को पसन्द है—भला तुम्हारे लिखे में क्या काटछाँट हो सकती है। दूसरा लोकगीत भारती जी को भेजे दे रहा हूँ। बड़ा सुन्दर है। एक १५१ लोक-गीतों का संग्रह दो—मुझ पर तुम्हारा राजपाल वाला संग्रह सुरुचिपूर्ण है। संभवत: पहले पत्र में लिख चुका हूँ। श्री तेजी जी श्रीमती इंदिरा जी की वजह से व्यस्त होंगी—दिन की रेडियो न्यूज़ सुनने के बाद एक फ़ोनोग्राम कंडोलेंस का मैंने भी करना उचित समझा। आशा है तुम सपरिवार प्रसन्न हो। मैं ठीक हूँ—शेष मिलने पर—संभवत: तार भी दे दूँ—

सप्रेम
साईंदा

१८

इलाहाबाद
२३-९-६०

प्रिय बच्चन,

आज शाम मैं लखनऊ से इलाहाबाद आया हूँ।

पंत जी ने कहा है कि तुम ४ को लखनऊ आ रहे हो। मकान तो मेरा है ही—४ को नहीं, दो-एक दिन और ठहरो। भला ऐसा सुयोग कब मिलता है? 'ख़ूब गुज़रेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने तीन; पंत जी, तुम और हम! एक आध और शामिल हो जाय तो और अच्छा!

आशा करता हूँ मज़े में होगे।

तुम्हारा
भगवतीचरण वर्मा

प्रिय बच्चन,

भगवती बाबू यहीं आ गए थे—तुम्हें एक पत्र अलग से लिख चुका हूँ—

साईंदा

तेजी जी दवा ले रही हैं कि नहीं—कोई अच्छी-बुरी प्रतिक्रिया ?

सु०

१९

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
२३-९-(६०)

प्रिय बच्चन,

पहुँच तो २० को गया था—पर यहाँ झंझटों में फँस जाने के कारण पहिले पत्र नहीं दे सका—आशा है तुम लोग प्रसन्न हो। ४ ता० अक्टूबर को लखनऊ में भेंट होगी। तुम्हारे लिए बेल्ट लाऊँगा। श्री भगवती बाबू को भी आज ही लिख रहा हूँ। शांता की तबियत अब प्रायः ठीक है। उसके पाँवों में भी तुम्हारी ही तरह दर्द होने लगा है। यहाँ गर्मी काफ़ी है। श्री राव साहब अभी दिल्ली ही हैं—संभवतः तुमसे भेंट हो।

तुम्हारा बँगला-ज्ञान बढ़ रहा होगा। बड़ी मधुर भाषा है—श्री तेजी जी को मेरा बहुत २ प्यार तथा नमस्ते कहना। अमित को प्रसन्न रखना। कुँवर यहाँ पहुँच गए हैं। आज डा० सामंत का फ़ोन आया था—उन्हें भी इधर फ्लू हो गया था। अब ठीक हैं। श्रीमती इंदिरा जी धीरे २ मनोबल प्राप्त कर रही होंगी। तेजी जी से उन्हें

इसमें बड़ी सहायता मिलेगी। तुमसे चित्र लेना भूल गया। अब लखनऊ अपने साथ ले आना। तुम्हारा 'मंगल भवन अमंगलहारी' प्रायः याद आ जाता है—तुम सिद्ध पुरुष हो। तुम्हारे हाथ की सन लाइन देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। तुम अवश्य मुझसे कहीं बहुत अच्छा लिखोगे और नोबल पुरस्कार भी पाओगे। अभी २ याद आया कि राजेन्द्र सिंह के लिए आशीर्वाद के शब्द लिखने हैं। पर अब इसी अंतर्देशीय पत्र में लिख दिया है—यदि तुमने अभी तक नहीं मेरी ओर से लिखकर भेजा हो तो इसी की नक़ल भेज देना— बहुत धन्यवाद—पता तुम्हें दे गए होंगे। मैं ठीक हूँ।

सप्रेम—

साईंदा

श्री राजेन्द्र सिंह का गायन-वादन सुनने का शुभ अवसर दिल्ली में मिला। श्री राजेन्द्र निःसन्देह एक जन्मजात प्रतिभा संपन्न किशोर हैं। उनके स्वर-साधन तथा वायलन-वादन से चकित रह जाना पड़ता है। इतनी छोटी उम्र में संगीत संबंधी ऐसी कुशलता एवं मर्मज्ञता उनके भीतर संचित संगीत के उच्च तथा गहरे संस्कारों का प्रभाव है। मुझे विश्वास है कि यह किशोर राजेन्द्र आगे चलकर एक प्रसिद्ध गायक तथा संगीतज्ञ होंगे। और उनसे हमारे देश के अंतस्तल में गहरे परिव्याप्त संगीत को वाणी मिलेगी और देश-विदेश में उनकी कीर्ति की ध्वजा फहरेगी। श्री राजेन्द्र सिंह के भविष्य के लिए मेरी अनेक शुभ कामनाएँ तथा आशीर्वाद हैं।

सुमित्रानंदन पंत
२३-९-६०

२०

२६-६-६०
इलाहाबाद

भाई बच्चन जी,

सीपी की तनिक सी नाव इतनी दिव्य प्रेरणा का स्रोत बनेगी। कल्पनातीत था। और आज इसीलिए बहुत प्रसन्न हूँ। ददा तो इसके बारे में बताना भूल गया था। मैं एक पेटी (बेल्ट) आपके लिए भेज रही थी। ददा ने मन खिन्न कर दिया। कहा—राजधानी निवासी बच्चन इस सड़ी पेटी को छुएगा भी नहीं। अब पता चला आपको ददा की पेटी, बिलकुल ही वैसी जैसी मैं भेज रही थी, बहुत भायी। मैंने ददा से कहा कि तुमने क्यों नहीं कहा कि शांता भेज रही थी···। कहने लगा—मैं अपनी हँसाई क्यों करवाता ? तो अब मैं आपके लिए पेटी अवश्य भेजूँगी।

मेरा स्वास्थ्य सामान्य है। वैसे राहुयुक्त है। पर चिंता की तो कहीं कोई बात नहीं। नश्वर देह उस पर दालदा युग। बिरले ही मिलेंगे जो पूर्ण स्वस्थ हों।

आप लोग सानंद हैं, खुशी हुई। आपकी कविता मुझे तथा ददा को कितनी प्यारी और मोहक लगी, कह नहीं सकती। अब तो एक ही इच्छा है—रचयिता के मुँह से सस्वर सुनने की। लगता है ढोलक मचल रही है, उसके लिए।

तेजी जी से सस्नेह नमस्कार। अमित को स्नेहाशीष।

सादर, सस्नेह—

शांता

शीघ्र लिखना—श्री राव को कादंबिनी के लिए दे दूं—उन्हें बड़ी पसन्द आयेगी।

सु०

प्रिय बच्चन,

तुम्हें मेरा पिछला पत्र मिल गया होगा। तेजी जी के स्वास्थ्य के हाल लिखना। तुम्हारी कविता तो गागर में सागर है—नाव बिच नदिया सगानी लिखता है कबीर—बड़ी सुंदर कल्पना है—

अंधड़ आकाश चढ़ा—

तथा आर नहीं पार नहीं, तृण का आधार नहीं।

—दोनों स्टैंज़ा बड़े ही सुंदर हैं—बधाई।

पत्र देना—भगवती बाबू का पत्र भी मिल गया होगा।

सुमित्रानंदन पंत

२१

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
२९-१०-(६०)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे दोनों पत्र तथा कविता मिल गई। मैं इधर रा० टं० अभिनंदन में इतना अधिक व्यस्त रहा कि अब बीमार पड़ गया हूँ। बुख़ार, खाँसी, ज़ुकाम। कल से तापमान नार्मल आया है; इसीसे तुम्हारे पत्र का उत्तर नहीं दे सका। तुम्हारी कविता बहुत पसंद आई—राव साहब कल-परसों तक आकर ले जाएँगे। संशोधन की बात तुम खूब लिखते हो। मेरी टाँगें काफ़ी लंबी हैं और उन्हें खींचने की ज़रूरत नहीं।

तेजी जी को मेरी दवा छः महीने तक लगातार खाना चाहिए। २ महीने लगातार सेवन करने से कुछ २ लाभ नज़र आएगा। पर मैं इनसिस्ट करूँगा कि दवा उनकी वही है। उसी से धीरे-धीरे दमा भी ठीक होगा।

'रचना प्रक्रिया' पर तुम्हारी वार्ता नहीं सुन सका—तुम्हारे पास टंकित प्रति हो तो भेजवा देना। अस्तव्यस्तता के कारण ही अमित की वर्षगाँठ पर अपने शुभाशीर्वाद नहीं भेज सका—अब भेजता हूँ। मेरा बहुत २ प्यार और शुभकामनाएँ उसे देना। बड़ा अच्छा उसका भविष्य होगा।

शांता बीमार है—मेडिकल लीव में पड़ी है। मेरे बाद फ्लू उसी को हो गया। क्या किया जाए—अब सर्वेंट भी खाँस रहा है। मौसम बड़ी जल्दी और यकायक यहाँ बदल गया है—बहुत लोग बीमार हैं। मैं भी अभी काफ़ी कमज़ोर हूँ। श्री टंडन जी यहाँ छुट्टी पर आए थे। उनसे भेंट हुई थी। नरेन्द्र का पत्र दीपावली से पहिले आया था, अभी तक उत्तर नहीं दे सका हूँ। २।४ दिन में दूँगा। तुम लोग कैसे हो? आजकल क्या लिख रहे हो? बँगलानुवाद कैसा चल रहा है? कुछ बंगला-ज्ञानवृद्धि हुई? गुरु जी अभी आते होंगे। तेजी जी को मेरा बहुत २ स्नेहपूर्वक नमस्ते कह देना—और कह देना मेरी दवा अवश्य लें। अमित को प्यार देना। यहाँ दीपावली के अवसर पर रज्जन के चि० पुत्र तथा उनकी श्रीमती डा० सामंत के साथ आए थे। वहाँ के नवीन समाचार लिखना।

पत्रोत्तर देना। शेष स्वस्थ होने पर लिखूँगा।

बहुत २ प्यार—

साइंदा

२२

गोपनीय

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
१-११-(६०)

प्रिय बच्चन,

यह पत्र श्रीमती कांता भारती की ओर से लिख रहा हूँ। उन्हें भारती जी ने एक प्रकार से छोड़ दिया है; वह बड़ी संकट में हैं—भारती बंबई में हैं—यहाँ वाइंड अप कर रहे हैं। श्री कांता जी अब दिल्ली अपने माँ-बाप के साथ रहेंगी। माँ-बाप की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं। श्री कांता के इस विवाह से वह उससे असंतुष्ट भी हैं। मैं डी० जी० से उन्हें स्टाफ़ आर्टिस्ट मंथली कान्ट्रैक्ट पर रखने की प्रार्थना कर रहा हूँ। चाहता हूँ तुम भी उन्हें अवश्य फ़ोन द्वारा अपनी सिफ़ारिश पहुँचा दो—और दो शब्द श्रीकांता के बारे में उनसे कह दो। श्री कपिला वात्स्यायन को भी तुम फ़ोन से इस संबंध में कह दो कि कांता जी को २५०/- तक का काम दिला दें—संगीत नाटक एकेडेमी में या कहीं अन्य। वह प्रयाग विश्वविद्यालय की दर्शनशास्त्र में एम०ए० हैं। यहाँ वे बराबर ब्राडकास्ट करती रही हैं—लेख भी उनके कभी २ छपते रहे हैं—ड्रामा वाएस भी रही हैं। इत्यादि—कांता जी के साथ उनकी १½ साल की बच्ची भी है। वह कोर्ट में जाना नहीं चाहतीं।

मेरा पिछला पत्र मिल गया होगा। श्री कांता के लिए सारे इलाहाबाद की सहानुभूति है। शेष बातें मिलने पर कहूँगा। तुम यह काम अवश्य कर देना। शेष फिर—आशा है सपरिवार प्रसन्न हो।

सप्रेम,

साइंदा

पी० एस० : दूसरा पत्र कपिला जी तक पहुँचा देना— उनका पता भूल गया हूँ।

२६

१८/७ बी, स्टेनली रोड
इलाहाबाद
३-११-(६०)

प्रिय बच्चन,

तुमने जो एक रोज़ का पुण्य दान कर दिया था उससे हम दोनों अब स्वस्थ हैं—जान बची लाखों पाए। तुम्हारे पुण्य का प्रताप है ! तुम्हारी कविता कादंबिनी में जब पहुँची, राव साहब का कहना है, उससे पहिले ही प्रथम अंक की रूपरेखा बन गई थी और सामग्री बहुत पहिले प्रेस में चली गई थी। यदि समय पर मिली होती तो नरेन्द्र के स्थान पर तुम्हारी ही रचना जाती संभवतः। नीलपरी वाली रचना मैंने कादंबिनी से वापस ले ली। तुम धर्मयुग में भेज दो, वहाँ परी का रूप अच्छा निखर सकेगा—चित्रसज्जा के कारण। तुम्हारा 'दानवों का शाप' मुझे बहुत पसंद आया—दानव ही ठहरे, लंबा शाप दे दिया। अभी राव साहब से भेंट नहीं हुई—कविता मेरे ही पास पड़ी है—मैं बाहर बहुत कम जाता हूँ—ब्लड शूगर इधर फिर काफ़ी बढ़ गई है—शायद तुम्हें दो-एक दिन का पुण्य और बाँटना पड़े।—'कवियों में सौम्य पंत' (दूसरे संस्करण का नाम) की समीक्षा दूसरे अंक में जा रही है। समीक्षक महोदय का फ़ोन आया था कि बच्चन जी ने नाम तो आपको संत का दिया है और आपके जो पत्र छपाए हैं उनसे मालूम पड़ता है कि तेजी जी पर आपकी नीयत है—किसी पत्र में है कि तुम्हारे बाद तेजी जी पर मेरा ही अधिकार है।—सो मैंने कह दिया कि यह छापेखाने की भूल से संत होगा—

बच्चन जी का अभिप्राय पंत से ही था और तेजी जी के बारे में वह अब भी मुझे ट्रस्ट नहीं करते। हालाँ, ये बातें समीक्षा में देने को मना कर दिया है। तुम्हारी सालगिरह पर जो मैंने ४।५ आशीर्वाद दिए हैं उनमें लड़कियों पर डोरी (डोरा ?) डालने वाला उन्हें बहुत पसंद आया। कहते थे साल बड़ा सूना बीता होगा। 'धर्मयुग' के मेले में खोई तुम्हारी गुजरिया को खोज निकालूंगा।

तुम्हारी रचना-प्रक्रिया वाली वार्ता इस सिरीज़ की सब वार्ताओं में मुझे विशेष सुंदर, गंभीर और विषय पर प्रकाश डालने वाली लगी। मार्मिक है, बधाई। भई, निबंधों के संग्रह के लिए यहाँ से नाम सुझाना कठिन है, तुम खुद सोचो। अच्छा नाम देना—हाँ, मैं ३-४ नाम सुझाओ तो सम्मति दे सकता हूँ।

श्री गोविन्द जी की मुझे खूब याद है, उनसे मेरा बहुत-बहुत नमस्कार कहना। मैं इस अवसर पर दिल्ली होता तो उनसे मिलकर प्रसन्नता होती। अबके तेजी जी की और बहनों से भी भेंट हो सकी थी।

नरेन्द्र को भी आजकल में पत्र दूंगा। उसके लिए कहीं घर का ठिकाना कर दो। बीवी-बच्चों को भी ले आएगा-—अकेले कष्ट में होगा। एक पत्र तुम्हें कल कांता जी के लिए दिया था। उसका ज़रूर ख़्याल रखना।

५७।५८।५९ की पुस्तकों में कुछ अच्छी पुस्तकों के नाम याद आ रहे हैं—(१) बूंद और समुद्र—लेखक श्री अमृतलाल नागर—प्रकाशक : किताब महल, इलाहाबाद—(२) भूले-बिसरे चित्र—भगवती चरण वर्मा—प्र० राजकमल। (३) डा० रामकुमार का 'एकलव्य' प्रबंधकाव्य (प्र० लीडर प्रेस) भी इस श्रेणी में रखा जा सकता है। (४) संस्कृत साहित्य का इतिहास—पृ० १००० से ऊपर। लेखक वाचस्पति गैरोला —प्र० चौखंबा विद्याभवन—वाराणसी, १—यह पुस्तक वास्तव में उच्चकोटि की है—बड़ी उपयोगी। इस दिशा में हिन्दी में क्या संस्कृत में भी कोई ऐसी व्यवस्थित रूप से लिखी कृति नहीं है।—अन्य नाम तुम

स्वयं सोच सकते हो। इनमें भी तुम्हें जो उचित लगे वही भेजना।

शांता अब अच्छी है। तुम्हें और तेजी जी को नमस्कार भेजती है। आशा है तेजी जी धीरे-धीरे उस दवा से ठीक हो जाएँगी।

कादंबिनी तुम्हें मिल गई होगी—यहाँ से भेजने में विलंब हुआ है। शेष पत्र आने पर—

बहुत प्यार,
साईंदा

२४

इलाहाबाद
५-११-(६०)

प्रिय बच्चन,

कांता भारती के हाथ तुम्हारे लिए एक पत्र और एक १०१/- का चेक भेजा है। उसे तुरंत रुपए दे देना—मैंने उससे कह दिया है कि जब ज़रूरत पड़े बच्चन से कहना—तुम भी उससे कह देना कि १०१/- प्रति मास, जब तक उसका ठिकाना न लग जाय, तुमसे ले ले। मैं वे रुपए तुम्हें दूँगा।

एकदम निर्दोष लड़की है—सारी कहानी उभय पक्षों की सुन चुका हूँ। भारती जी ने बिचारी को छोड़ दिया है। मिलने पर समस्त कथा कहूँगा। तुम और तेजी जी उसका सहारा बनना और उसे मदद करना।

शेष बातें कल लिख चुका हूँ। आज वह 'जनता' से दिल्ली जा रही है। भारती जी की बहिन—जो दिल्ली में व्याही है—के यहाँ रहेगी—या अपने माँ-बाप के पास।

आशा है तुम दोनों अच्छे हो—अमित को प्यार—कांता का ज़रूर

ख्याल रखना—बड़ी संकोचशील है, वहाँ का उसका पता पूछ लेना—अमित वग़ैरह से खबर मँगवा सकते हो। शांता बिचारी उसके कारण बड़ी दुःखी है—क्या किया जाय—

तुम्हें और तेजी जी और अमित को प्यार।

साईंदा—सुमित्रानंदन पंत

'दानवों का शाप' आज राव साहब ने मँगवा ली। बच्चन, बड़ी ही पावरफ़ुल पोएम है—कौए चातक इत्यादि के बाद मुझे यही पसंद आई—क्या भाषा, क्या भाव, क्या व्यंग्य—

बहुत बधाई।

प्यार

साईंदा

२५

इलाहाबाद
५-११-(६०)

प्रिय बच्चन,

यह पत्र श्री कांता भारती के हाथ भेज रहा हूँ जो आज दिल्ली जा रही हैं। इनके बारे में तुम्हें लिख ही चुका हूँ। तुम और तेजी जी इन्हें जो कुछ भी सहायता कर सकोगे वह तुम एक अत्यंत योग्य व्यक्ति के लिए करोगे, जो पूर्णतः निर्दोष है। तुम्हें और लिखने की क्या आवश्यकता—तुम तो सदैव दूसरों के लिए अवलंब रहे हो। इन्हें ए० आई० आर० में या कहीं अन्यत्र काम दिलाने में भी अवश्य सहायता करना—२५०/-

तक, बच्ची के साथ, इनकी अनिवार्य आवश्यकता होगी।

शेष मैं लिख ही चुका हूँ।

सस्नेह,

तुम्हारा,
सुमित्रानंदन पंत

पी० एस०

श्री कांता जी तुम्हें मिलने आएँगी।

सु०

२६

इलाहाबाद
८-११-(६०)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिला—यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुमने गत मंगल का पुण्य भी मुझे ही 'ब्लड शुगर' कम करने के लिए दान दे दिया है। कल से लाभ भी है—संभवतः ७/८ दिन में नार्मल आ जाएगी।

श्री गोविन्द जी की लड़की के ब्याह की रस्म अदा हो गई, तुमने अच्छा किया। अब घर में तुम्हीं सयाने ठहरे—मेरी भी शुभकामनाएँ लो। 'सा० हिन्दुस्तान' में तुम्हारा गीत वास्तव में बहुत अच्छा था—बहुत ही अच्छा—धीमर की घरनी वाला गीत भी 'ज्योत्स्ना' में अच्छा लगा। तुम्हारे गीतों का महत्त्व समय पर छिपा नहीं रहेगा, वे अपने साथ नया वातावरण, नयी शैली और शिल्प भी दे रहे हैं। १०१ के आसपास लिखो तो अच्छा हो। रहस्यवादी स्पर्श तो है—बड़ा रस-वैचित्र्य भी है। सा० निबंधों के संग्रह का नाम गवाक्ष से रखना हो

तो रस या 'शिल्प गवाक्ष' कैसा रहेगा ? 'गद्य गवाक्ष' अपने अनुप्रास के बावजूद भी रश्मिहीन ही रह जाता है। मेरे निबंधों का संग्रह भी छप रहा है 'शिल्प और दर्शन' के नाम से। २।३ फ़र्मे छप भी गए हैं।

'मधुकलश' की प्रतीक्षा करूँगा। तुम्हारा 'कवियों में सौम्य संत' लोगों को बड़ा पसंद आ रहा है। मेरे पास कई पत्र आ चुके हैं। मुझे तो (अ)भी सीरियस काम करना मना है—ब्लड शुगर के कारण। २७ नवम्बर को तुम्हारा जन्मदिवस है—पटने का कवि सम्मेलन २८ को है—मेरे भाँजे की शादी भी २६ को है—मेरठ में प्रतिभा भटनागर की माता जी का बड़ा आग्रह है कि उनकी लड़की की शादी में नवम्बर २४ को अवश्य मेरठ पहुँचूँ—पर स्वास्थ्य को देखकर लगता है कहीं नहीं जा पाऊँगा। कभी से कुछ लिखा भी नहीं। जनवरी में तो दिल्ली आना ही होता है—अबके तो क्वीन आ रही है—आना चाहूँगा।

तुम्हारे जन्मदिवस पर मन से ही उपस्थित रह सकूँगा। आशीर्वाद और शुभकामनाएँ भेजने के लिए तो अभी बहुत दिन हैं। रह गया ब्राह्मण भोज वह जनवरी में आकर वसूल करूँगा।

श्री कांता जी वहाँ पहुँच गई होंगी और तुमसे मिली होंगी। वात्स्यायन जी तो शायद ही कुछ कर सकें। हमीं लोगों का करना होगा। वह तो शायद विदेश जाने वाले हैं—यहाँ ख़बर है। शांता का स्वास्थ्य भी इधर अच्छा नहीं रहा। अब अच्छी है। युनिवर्सिटी जाती है—तुमसे, तेजी जी से नमस्कार कहती है। घर में आने-जाने वालों की संख्या काफ़ी बढ़ गई है—उन्हीं में व्यस्त रहती है। कुँवर आजकल कलकत्ता अपने काम के सिलसिले में गए हैं—आज डा० सामंत के फ़ोन से पता चला।

श्री शकुंत माथुर का काव्य-संग्रह 'चाँदनी-चूनर' प्रकाशित हुआ है—तुम्हारे पास भेजने को कहूँगा—देखकर अपनी सम्मति देना—पटना से दिनकर का पत्र आया है कि उसका भी स्वास्थ्य बहुत ख़राब

है। मधुमेह और रक्तचाप बहुत बढ़ गया है। संभवतः अस्पताल जाना पड़े।

दिल्ली के नवीन समाचार लिखना। तुम्हारी पहिली कविता 'कादंबिनी' के दूसरे अंक में निकल रही है—वह कम्पोज़ होकर छप चुकी थी—इसी से 'देवताओं का शाप' ३रे या ४थे अंक में निकलेगा। श्री राव को भी बहुत पसंद आया—कहते थे काश पहिले आ गई होती तो इसी अंक में जाती। 'कादंबिनी' की दूसरी प्रति तुम्हारे पास भेजी गई थी मिली होगी—अपनी प्रतिक्रियाएँ मुझे लिख कर भेजना। धीरे २ खूब ठीक हो जाएगी। पहिले अंक के सामने अनेकानेक कठिनाइयाँ रही हैं।

आशा है तुम सपरिवार खूब प्रसन्न हो। तेजी जी मेरी दवाएँ ले रही हैं—बड़ा अच्छा हुआ। उन्हें बहुत २ नमस्ते कहना। बच्चों को प्यार—और चूँकि तुम भी बच्चन ही हो, अतः तुम्हें भी प्यार—

तुम्हारा
सँदा—

२७

इलाहाबाद
११-११-(६०)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र कल पाकर बड़ी चिन्ता दूर हुई। मैं प्रति मास तुम्हें चेक भेज दूँगा—जब तक आवश्यक हो कांता को दे देना—शेष बातें तो तुमसे मिलने पर ही हो सकेंगी। तुम और तेजी वहाँ उसकी खबर रखने वाले हुए ही। उसके लिए कोई काम अवश्य खोज देना। मैं तो वहाँ २७ ता० को आने की कोशिश करता, तुम रुपए ऐडवांस भेज ही रहे

थे—पर मेरी ब्लड शुगर अभी काफ़ी है, यद्यपि पहिले से बेहतर। फिर २७।२८ को पटना जाना भी आवश्यक है—मुक्त जी ने लिखा है तुमसे भी अवश्य अनुरोध करूँ। पर वहाँ भी स्वास्थ्य ठीक नहीं हुआ तो जाना कठिन ही है।

तुम्हें 'कादंबिनी' मिली कि नहीं? दुबारा भेज दी गई थी। श्री राव कहते थे अबके रजिस्ट्री करके भेजवा देंगे। तुम्हारी रचनाओं के 'कादंबिनी' में प्रकाशन के बारे में लिख ही चुका हूँ।

'मधुकलश' की भूमिका मर्मस्पर्शी है—तुम्हारे जीवन से घनिष्ठतः संबद्ध होने के कारण। संग्रह में तीन रचनाएँ प्रथम श्रेणी की हैं—पहिली —'है आज भरा मुझमें जीवन' वाली—दूसरी—'आज लहरों में निमंत्रण'—वह तो बहुत ही अच्छी है—क्या बात है—लहरों के निमंत्रण के अतिरिक्त जिसमें स्वयं बड़ी मादकता है—उसमें अनेक चित्रण—सिन्धु कन्याओं के नृत्य के—मौन गंधर्वों के—अप्सराओं के उठे पगों के सचमुच अद्भुत बन पड़े हैं—पढ़ने में बड़ा सुख मिला। तीसरी कविता 'मेघदूत' के प्रति भी बहुत अच्छी है—शेष रचनाएँ तो तुम्हारी तत्कालीन प्रतिक्रियाओं से भरी हैं जो अपने आलोचकों, पाठकों, युग के प्रति तुम्हारे मन में उठी हैं—सच्ची होने के साथ अच्छी भी हैं। आजकल कोई सीरियस काम करना तो मना है—'मधुकलश' कई वर्षों बाद फिर पढ़ गया—बड़ी फ्रेशनेस ताज़गी उसके संगीत भावोच्छ्वासों में है—

तुम्हारी वर्षगाँठ के लिए अपनी शुभकामनाएँ अगले पत्र में भेजूँगा —अभी तो १६ दिन हैं। आशा है तेजी जी का स्वास्थ्य इधर ठीक ही चल रहा होगा—नये नाटक की तैयारी कब से होने वाली है? श्री माथुर साहब (डी० जी०) से तुम कांता को मिला चुके होगे। आशा है श्री कपूर साहब भी उसके लिए अवश्य कुछ कर सकेंगे। मि० कपूर से मेरा नमस्कार कहना। क्या मेरा वह पत्र मिला जिसमें मैंने '५७-'५८-'५९ की कुछ पुस्तकों के नाम सुझाए थे—यह ज़रूरी नहीं कि तुम उनके

बारे में लिखो पर तुमने पूछा था, मुझे जो याद आया लिख दिया था।

शांता ठीक ही चल रही है—'मधुकलश' के लिए तुम्हें बहुत धन्यवाद भेजती है—आजकल विश्वविद्यालय के कार्य में व्यस्त है। अगले सप्ताह तुम्हारी भूमिका पढ़ूँगी कहती थी—इस समय पढ़ाने गई है।

मेरा स्वास्थ्य धीरे-धीरे ठीक हो रहा है—कुछ लिखना-पढ़ना चाहता हूँ—डाक्टर अभी मना कर रहे हैं।

शेष फिर—अमित को प्यार—तेजी जी को सस्नेह नमस्ते और तुम्हें बहुत २ धन्यवाद—प्यार और आभार ज्ञापन—

तुम्हारा
साइंदा

पु०—

बँगला सीखना जारी रखना।

सु०

२८

इलाहाबाद
१५-११-(६०)

प्रिय श्री बच्चन,

तुम्हारे दोनों पत्र मिल गए। 'अभिषेकिता' तुमने व्यर्थ खरीदी। मेरी पुस्तकें तुम राजकमल से बिना मूल्य मँगवा सकते हो। मैंने उनसे कहा है। तुमने जो त्रुटियाँ निकाली हैं वे ठीक हैं। पता नहीं, उसका संपादक मैं नहीं—डा० नगेन्द्र हैं।

श्री कांता जी का पत्र आया था, वह थोड़ी नौकरी के लिए परे-

शान हैं। उनका पता पत्र में नहीं था इससे तुम्हारे पते पर भेज रहा हूँ—उन्हें फ़ोन पर सूचना देकर पत्र दे देना। नौकरी के बारे में भी ढाढस दे देना। अनुभवहीन होने के कारण वे समझती हैं कि नौकरी खोजते ही मिल जाती है। तुम अपने प्रयत्न शिथिल नहीं होने देना। श्री नरेन्द्र और मि० टंडन ३ दिन को यहाँ आए थे, उन्हें भी मैंने समझा दिया है—वे भी डी० जी० से कहेंगे। तुम भी उन्हें समझा-बुझाकर श्री कांता जी का प्रबंध शीघ्र ही करवा देना। दूसरों से रुपया लेने में उन्हें संकोच होता है, ठीक ही है। पर विवशता को विवशता ही मानना चाहिए। श्री तेजी जी उन्हें खूब समझा सकती हैं—उन्होंने लिखा है मेरा जी बहुत घबड़ाता है कि आगे क्या होगा, तुम लोग बुलाकर सांत्वना दे देना। नरेन्द्र से भी इस बारे में पूछ सकते हो। खैर, मुख्य काम तो यह है कि कांता जी को रिहैबिलिटेट कर दिया जाए। किसी की बुराई करने से क्या लाभ—बिचारी एकदम निरपराध और निःसहाय है। अपनी कम्यूनिटी से भी कट गई है।

बच्चन, मैं बहुत चाहता था कि २७ को वहाँ आ जाऊँ—इससे डी० जी० से भी बातें हो जातीं। पर मेरी ब्लड शुगर बहुत बढ़ी हुई है—ट्रैवेल करना उचित नहीं। परसों नरेन्द्र के सामने ही डा० एस० के० मुकर्जी आए थे—नरेन्द्र से मेरे स्वास्थ्य के बारे में खुद पूछ सकते हो। फिर आफ़िशली मुझे पटना २८।११ कोजाना चाहिए, वहाँ भी जाना संभव नहीं। ऐसी हालत में दिल्ली आना कैसे संभव है। तुम्हें तार द्वारा बधाई दूंगा। वहाँ चाचा नेहरू जी की सालगिरह धूमधाम से बच्चों ने मनाई होगी। सवेरे 'लीडर' में चित्र देखकर मैंने भी मेनी हैपी रिटर्न्ज़ विश कर दिए थे।

श्री तेजी जी के क्या हाल हैं? आशा है धीरे-धीरे स्वास्थ्य सुधर रहा होगा। मुझको डा० बी-१२ के इंजेक्शन लेने को बता गए हैं। कल से शुरू करूँगा।

डी० जी० को मैं भी लिख रहा हूँ। तुम उनसे कह देना कि कांता

जी का काम जल्दी ही हो जाना चाहिए—कुछ संभव न हो तो मंथली कांट्रैक्ट पर २५०/- ऐज़ स्टाफ़ आर्टिस्ट उन्हें काम देना उन्हीं के हाथ में है—विमेन्स सेक्शन में काम्पीयर या स्क्रिप्टराइटर ऐण्ड अनाउंसर का काम कर सकती हैं—रिकार्ड कीपर का काम कर सकती हैं—केवल वार्ताएँ आदि देने से बिचारी का काम कैसे चलेगा। तुम कपूर साहब के आने पर उनसे भी प्रबंध करवा देना। तुम्हीं वहाँ उसके हितू हो—और किसे लिखूं?

शेष फिर—सप्रेम—

साईंदा

२६

१८ बी/७बी, कस्तूरबा गाँधी मार्ग,
इलाहाबाद
२१-११-(६०)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र आज ही मिला, समाचार ज्ञात हुए। तुम मि० कपूर की सहायता से श्री कांता जी के लिए यथोचित प्रबंध करने में संलग्न हो, इससे बड़ा संतोष हुआ। मैंने भी इधर डी० जी० को फिर से लिखा हैं। मि० टंडन और नरेन्द्र से भी सिफ़ारिश करने को कह दिया था। कहीं न कहीं तो उनको फिर से स्थापित करना ही है। भाग्यचक्र की मारी निर्दोष सरल आत्मा है! अपने माँ-बाप के साथ रहने में उन्हें संकोच हो रहा था, पर माँ-बाप माँ-बाप ही ठहरे। श्री टंडन यहाँ दो रोज़ को अपने चाचा की मृत्यु के कारण आए थे, मुझे उन्होंने कल ४ बजे अपराह्न को फ़ोन से सूचना दी थी कि वह छह बजे जनता से वापस जा रहे हैं। आज प्रातः वहाँ पहुँच गए होंगे। पता नहीं श्री

कपूर अथवा डी० जी० से इंटरव्यू का उन लोगों पर क्या प्रभाव पड़ा। आशा है तुम अगले पत्र में लिखोगे। तुम्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ा, पर यह मानव धर्म के अंतर्गत आता है और इससे सबको भीतरी लाभ ही होता है।

कल फिर से मेरी ब्लड शुगर का डाक्टर परीक्षण करेंगे, अगले पत्र में तुम्हें सूचना दूंगा। मैं पटना नहीं जा रहा हूँ—वह संभव भी नहीं। तुम्हें तो अवश्य तार द्वारा अपनी शुभकामनाएँ सालगिरह पर भेजूंगा। अंकल आजकल कलकत्ता गए हुए हैं। कल डा० सामंत के फ़ोन से ज्ञात हुआ था।

तुम्हारी दोनों पुस्तकें मुझ पर लोगों को पसंद आ रही हैं जानकर प्रसन्नता होती है। तुमने मुझे बहुत स्नेह उनमें दिया है। 'अभिषेकिता' की आलोचना 'सा० हि०' में पढ़ूंगा। श्रीमती माथुर से 'चाँदनी-चूनर' की प्रति 'सा० हि०' को भेजने को फ़ोन कर दूंगा। २० नवम्बर का 'धर्मयुग' अभी नहीं देखा—कल मँगवाऊँगा। और इधर क्या लिख रहे हो। किंग लियर का क्या हुआ। शायद बहुत व्यस्त हो। तुम्हारे लोकगीत धीरे २ जन-मन में छा रहे हैं। प्रायः सभी से उनकी प्रशंसा सुनने को मिलती है। श्री तेजी जी अब ठीक हैं जानकर बड़ा संतोष हुआ। आजकल तो इंदिरा जी भी वहाँ नहीं हैं उन्हें काफ़ी आराम करने का समय मिलता होगा। मुझे आशा है उनका स्वास्थ्य धीरे २ दुरुस्त हो जाएगा—दवा अवश्य छः महीने तक अटूट रूप से खाती रहें—बीच में छोड़ना नहीं चाहिए। मेरा उनसे बहुत २ नमस्ते और प्यार कहना—चि० अमित से भी! शांता इधर ठीक ही चल रही है। तुम्हारे 'मधुकलश' की रचनाएं उसने भी पढ़ी हैं। अब साहित्य की ओर अधिक रुचि बढ़ने लगी है—विशेषतः कहानियों की ओर। पर कविता भी पढ़ने लगी है।

आशा है तुम बहुत ठीक हो—अध्ययन, मनन, भ्रमण, प्राणायाम सब ठीक से चल रहा है। वहाँ के नवीन समाचार तथा कांता के लिए

प्रयत्नों के फल की सूचना देते रहना—
बहुत २ प्यार—

तुम्हारा ही—
साईंदा

३०

१८/७ बी, कस्तूरबा गाँधी मार्ग
इलाहाबाद
२५-११-(६०)

चिर प्रिय बच्चन,

कल शाम को तुम्हारे जन्मदिवस पर अपनी शुभकामनाएँ तार द्वारा भेजूंगा। तुम्हारा २३ ता० का पत्र आज तीसरे पहर मिला। कुशल समाचार ज्ञात हुए। यह जान कर प्रसन्नता हुई कि श्री कांता जी के लिए श्री कपूर कुछ सप्ताह-भर के भीतर ही कर सकने की संभावना पर प्रकाश डालेंगे। वैसे नरेन्द्र और टंडन जी भी डी०जी० से उनके बारे में कहेंगे। पर चूंकि उनकी लड़की अभी छोटी ही है इसलिए मेरी समझ में ए० आई० आर० से—यहाँ समय का कोई क्रम निभाना कठिन है—यदि कहीं अन्यत्र अच्छा २५०/- तक का कार्य उन्हें मिल जाय जहाँ—१० से ५ तक कार्य कर वह अपनी लड़की की देख-रेख कर सकें तो वह अधिक उत्तम हो। वैसे इस बारे में ए० आई० आर० वालों के प्रयत्न चलने देना—यहाँ नहीं मिला तो वहाँ मिल जाए।

'चाँदनी-चूनर' की समीक्षा जो तुमने की है उसकी प्रतीक्षा करूंगा। तुम्हारी एक कविता 'कादंबिनी' के दूसरे अंक में निकली है। देखोगे। 'हैमलेट' से अधिक ध्यान अवश्य अपने गीतों को दो वह एक नया परिच्छेद काव्य साहित्य में खोल सकेंगे।

तुम्हारी सालगिरह के अवसर पर २७ को क्या २ जलसे वहाँ हो रहे हैं ? मैं वहाँ होता तो कितना अच्छा होता ! संभवतः अंकल (कुँवर) पहुँच सकें— कहते थे कि कल वहाँ जाने का विचार कर रहे हैं। मेरी और शांता की ओर से बहुत २ बधाइयाँ लो। जल्दी मेरी तरह साठा होकर पाठा बनने (के) क्रम में एक सीढ़ी और आगे बढ़ो—नया सोपान रस आनंद सृजन मंगल का और सुख संपन्नता का हो। और कितने ही अदृश्य आशीर्वाद और शुभकामनाएँ नये वर्ष के लिए लो जो समय २ पर प्रकट होकर तुम्हें हर्ष और विस्मय से अभिभूत करते रहें। अपने हिस्से की दावत अब मैं जनवरी ही में तेजी जी से वसूल करूँगा— क्योंकि ब्राह्मण का आशीर्वाद दक्षिणा की भी रूढ़िगत अपेक्षा रखता है। श्री तेजी जी को भी मेरी ओर से बहुत २ बधाई देना कि ऐसे अवसर हम सब को बहुत-बहुत मिलते रहें। और चिरंजीवी अमित, अजित को इस अवसर पर विशेष ढेर २ प्यार देना कि अपने महाकवि पिता का कीर्तिसौरभ उन्हें सुखमाधुर्य में प्लावित करता रहे।

श्री भगवती बाबू यहाँ कल आए थे, आज जाने वाले हैं—संभवतः जाएँगे ही। नरेन्द्र का स्वास्थ्य अब पहिले से अच्छा होगा। तुम्हें जन्म-दिवस पर तो फिर से मिलेगा ही, ज़रा ज्योतिष चर्चा भी करवा लेना—

तेजी जी का स्वास्थ्य ठीक ही है जानकर प्रसन्नता हुई। वहाँ अब ठंडक काफ़ी होगी—यहाँ भी बहुत है। वहाँ अधिक ही होगी— मि० टंडन से मेरा नमस्कार कह देना। सब लोग मिलकर श्री कांता जी को फिर से स्थापित करवा देना—नहीं तो बिचारी को बड़ा कष्ट आज की दुनिया में हो जाएगा।

आशा है खूब प्रसन्न हो और आनंदपूर्वक नए साल का अभिनंदन करने की तैयारी कर रहे हो—

बहुत २ बहुत २ प्यार
तुम्हारा ही
साईंदा

३१

१८/७ बी, कस्तूरबा गाँधी मार्ग
इलाहाबाद
२८-११-(६०)

प्रिय बच्चन,

कल तुम्हारा जन्मदिवस पर्व श्री तेजी जी और मित्रों ने उत्साह से मनाया होगा, हम लोग भी यहाँ से टेलीपैथी से अपने आनंद की लहर तुम तक भेजते रहे। कल तुम्हारा पत्र और 'चाँदनी-चूनर' की समीक्षा भी मिली। सबको बहुत पसन्द आई। मिस्टर मिसेज़ माथुर को भी सुनाई उन्हें भी बहुत पसन्द आई। 'टोकनियों' के बारे में कहती थीं श्री शकुंत माथुर कि दिल्ली में पानी के मटकों को स्थानीय बोली में टोकनी ही कहते हैं और सब बातों से सहमत थीं। तुमने बड़ा अच्छा नीरक्षीर विवेचन किया है। श्री सी० बी० राव उसे 'कादंबिनी' के चौथे अंक में देना चाहते हैं। अतः तुम्हें जल्दी न हो तो उसे 'सा० हि०' में मत भेजो। 'कादंबिनी' के लिए सामग्री जुटाने का दायित्व मेरा भी है। सा० हि० में तुम्हारा चित्र और लेख दोनों देखे! चित्र में तो बस तुम कल्पना में डूबे नहीं, कल्पना के तट पर एक टाँग पर खड़े पूरे बकध्यानी लगते हो—पर बगुलाभगतों में भी बड़े रोबीले लगते हो। लेख तो मैं पहले ही पढ़ चुका था। श्री कांता के लिए अवश्य कुछ करना है। आज भारती आए थे—अब साथ रहना संभव नहीं कहते थे। अतः अब कांता जी को उनके योग्य कोई काम दिला कर स्थापित कर देना हमारा ही कर्तव्य है। २।३ ता० तक तुम्हारे पास आएँगी। उन्हें तुम १०१/- फिर दे देना। मैं ३।४ ता० तक चेक भेज दूंगा फिर उन्हें कोई काम मिल ही जाएगा। मेरी शुगर अब १५० रह गई है लेकिन ९० नार्मल है—अब भी अधिक ही हुई। अपनी ओर से दवा कर रहा हूँ। ८।१० दिन में ठीक हो सकेगी ऐसा लगता है। यहाँ अब सर्दी काफ़ी पड़ने

लगी है। अबके सुनता हूँ जनवरी १०।१५ तक सर्दी खत्म हो जाएगी। नरेन्द्र से तुमने कुछ ज्योतिष चर्चा भी की? उसने कुछ बतलाया? यहाँ बहुत बीमार रहा कुछ विशेष बातें नहीं हो सकीं। शांता तुमको और तेजी जी को अपना नमस्कार भेजती है। यहाँ के नवीन समाचार तो बहुत सामान्य हैं—शुगर के कारण कोई सीरियस वर्क भी टेक अप नहीं कर सकता। तुम वहाँ के समाचार विस्तारपूर्वक लिखना। श्री तेजी जी स्वस्थ होंगी। अमित भी प्रसन्न होगा। मेरा उसे प्यार देना। आशा है अब वह इम्तहान की तैयारी में जुटा होगा। और क्या लिखूँ? माली घर जाने की प्रतीक्षा में है—वही पत्र भी डाक में छोड़ता है अतः समाप्त करता हूँ।

हाँ, बच्चन, कांता को मत भूलना। उसे कोई काम अवश्य दिला देना। डी० जी० को भी मैंने लिखा है। पर ए० आई० आर० के बाहर ही उनके लिए अच्छा होगा। क्या करूँ, तुम्हीं को उनके लिए कष्ट उठाना है—नहीं तो वह क्या करेंगी। कल एक छोटा-सा उनका पत्र मिला है। जिसमें अपनी नौकरी के कारण बहुत परेशान लगती हैं—दूसरों से लेना उन्हें अच्छा नहीं प्रतीत होता। अचानक संकटग्रस्त हो जाने के कारण बिचारी घबड़ा गई हैं। कहीं उनका ठिकाना लगे इसी से उनको ढाढस हो सकता है।

आशा है तुम खूब प्रसन्न हो। शेष तुम्हारा पत्र आने पर—

बहुत प्यार—
तुम्हारा
साईंदा

३२

१८/७ बी, क० गाँ० मार्ग
प्रयाग
२६-११-६०

प्रिय बच्चन,

तुम्हें इधर दो पत्र लिख चुका हूँ। इस खाली फ़ोल्डर का उपयोग करने के लिए भी तुम्हें यह सूचित कर रहा हूँ कि 'चाँदनी-चूनर' की तुम्हारी समीक्षा इसी तीसरे अंक में 'कादंबिनी' में निकलेगी—अत: तुम उसे 'सा०हि०' में मत देना। कल पता चला कि बाँके बिहारी भटनागर साहब ने 'सा० हि०' के सम्पादकीय में व्यर्थ का हम लोगों पर विषवमन श्री निराला जी के संबंध में किया है। क्या कहा जाय, लोग ऐसा उत्तरदायित्वहीन कार्य करते हैं और लोगों में ग़लतफ़हमी फैलाते हैं। महादेवी जी को भी इसका बहुत दु:ख है। आशा है तुम प्रसन्न हो।

सप्रेम,

साईंदा

*इस पत्र का उत्तर दे चुका हूँ।

---

*मेरे पत्र पर ख़ाली स्थान में यह पत्र लिखा गया था। 'इस' से तात्पर्य मेरे पत्र से है। —सम्पादक

३३

१८/७ बी. कस्तूरबा गाँधी मार्ग
इलाहाबाद
८-१२-(६०)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे दोनों पत्र मिल गए। कविता 'महागर्दभ' बड़ी तगड़ी है, 'दानवों का शाप' की तरह उसमें भी व्यंग्य का पुट तीखा है और थोड़ी बहुत आटोबायोग्रैफ़िकल होने के कारण अधिक प्रभावोत्पादक बन गई है। बधाई। 'दानवों का शाप' तो 'कादंबिनी' में छप रही है ४थे अंक में। उसे अन्यत्र न देना।

मुझे बड़ा खेद है कि फ़ोल्डर में टिकट लगाना पड़ता है यह बात नहीं ध्यान में आई। यहाँ जैसे इनलैंड लेटर के फ़ोल्डर मिलते हैं—जिसमें तुम्हें लिख भी रहा हूँ—वही ध्यान में रहा। २० पैसे (नये, पुराने नहीं) तुम्हारे उधार चढ़ गए। कांता जी को २००) पर आकाश-वाणी में १० ता० से काम मिल जाएगा यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्हें पैसों की जब आवश्यकता होगी तुमसे ले लेंगी, इसी से मैंने भी अभी नहीं भेजे, उनके पिछले पत्र में यही लिखा था। बहरहाल, जब तुम दो मुझे लिख देना। मैं भेज दूँगा। पीछे श्री इंदिरा जी के आने पर कहीं अच्छा २५०।३०० तक का काम दिला देना, बिचारी को अपने पैरों खड़े होने में सहूलियत हो जाएगी।

बाबा से ५ ता० को फिर भेंट हुई होगी। अंकिल यहाँ पहुँच गए हैं—कल दोनों शाम को आए थे—प्रसन्न हैं—वहाँ के समाचार भी विस्तार से ज्ञात हो सके। तेजी जी का स्वास्थ्य ठीक है जानकर खुशी हुई। अजित ५वी पोजीशन तथा ६२ प्रतिशत मार्क्स लाया, यह जान कर प्रसन्नता हुई। चलो, होशियार निकलेगा। भटनागर की नासमझी के बारे में तुमने लिखा है—यह कौन भटनागर हैं ?

नरेन्द्र को कभी चाय पर बुलाकर ज्योतिष चर्चा करो—पहिले ही से उससे फ़ोन पर कह देना—तब टाल-टूल नहीं करेगा। तैयार होकर आएगा। 'भारती संगम' द्वारा क्या कुछ काम होने की उम्मीद दिखती है? उद्घाटन समारोह तथा कवि सम्मेलन अच्छे ही रहे होंगे। मेरा स्वास्थ्य पहिले से तो काफ़ी अच्छा है, पर पूर्णत: नहीं। धीरे-धीरे ठीक हो जाएगा, चिन्ता की बात नहीं। अमित परीक्षा की तैयारी में लगा होगा, उसे खूब प्रोत्साहन दिया करो। तुम्हारे जन्मदिवस पर बाबा के आने के अतिरिक्त और क्या २ जशन हुए तुमने नहीं लिखा। प्रेमवर्णी जी के पत्र मुझे भी आते रहते हैं—प्रेमी युवक हैं—साधु तो हैं ही,—बाबा क्या अपने आप ही तुम्हारे जन्मदिवस के अवसर पर आ गए थे? या पहिले से सूचना थी। कभी मैं भी दर्शन करना चाहता हूँ—अंकिल कहते हैं फ़रवरी में गोरखपुर चलिए। आजकल मैं कोई विशेष कार्य नहीं कर रहा हूँ—कुछ तो स्वास्थ्य के कारण—कुछ जी भी नहीं कर रहा है। 'नई कहानी' पर आकाशवाणी में ११ ता० को यहाँ से परिसंवाद होने जा रहा है—जिसके लिए भगवती बाबू, यशपाल आदि भी आएँगे। तुम इधर लगता है अतुकांत ही अधिक लिखते हो।

हाँ, एक आवश्यक बात पूछनी है कि चन्द्रदेव सिंह जी ने तुम पर एक पुस्तक लिखी है जिसके कुछ निबंध मैंने उ० प्र० की 'ग्राम्या' आदि पत्रों में देखे हैं। उनका कल पत्र आया है कि मैं उस पर भूमिका लिखूँ—अभी २ तुम्हारी पुस्तक मुझ पर निकली है—कहीं यह मिली; भगती (भगत ?) तो नहीं समझी जाएगी? फिर न जाने उनकी पुस्तक कैसी होगी—तुमसे सम्मति लेकर ही उन्हें हाँ-ना—लिखूंगा, अभी मैंने उत्तर रोक रखा है तुम शीघ्र लिखना।

नवीन समाचार साधारण हैं। आशा है तुम सब लोग खूब प्रसन्न हो। श्री तेजी जी को मेरा सप्रेम नमस्कार कहना—बच्चों को और तुम्हें—तुम भी नाम से उसी कैटेगरी में आते हो—प्यार—

तुम्हारा, साईंदा

३४

१८/७ बी, कस्तूरबा गाँधी मार्ग
इलाहाबाद
१५-१२-(६०)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा प्रिय पत्र मिला—समाचार विदित हुए। कल अश्क जी का पचासवीं सालगिरह पर अभिनंदन था—अभिनंदन पत्र मुझी से लिखवाया और पढ़ाया गया—महादेवी जी ने अध्यक्षता की। तुम्हारी शुभकामनाएँ भी पढ़ी गई थीं—श्री प्रकाशचंद्र जी द्वारा। उत्सव अच्छा ही रहा—महिला विद्यापीठ के हीवेट रोड के हॉल पर मनाया गया—'परदा उठाओ परदा गिराओ' अश्क का नाटक भी दिखाया गया था—आज नीलाभ प्रकाशन की ओर से पाँच बजे शाम को चाय है—

नरेन्द्र तुम्हारे घर रविवार को आने वाला है यह अच्छा हुआ। यहाँ भगवती बाबू आए थे उनसे नरेन्द्र के समाचार मिले थे। श्री चंद्रदेव सिंह के लेख मुझे भी विशेष पसंद नहीं आए—मैं उन्हें यही लिख दूँगा कि छपने पर मैं अपनी सम्मति भेज दूँगा। वैसे मेरा उन से कोई पूर्व परिचय नहीं, केवल यही पत्र पिछले सप्ताह आया था। मुझे लिखना हीं होगा तो स्वयं क्यों नहीं लिखूँगा—एक सीरीज़ मेरे मन में है, उसी में वह निबंध रहेगा।

बाबा जी वहाँ बंबई से लौटती बार फिर आए जानकर हर्ष हुआ—तुमने मेरा प्रणाम तथा स्वास्थ्य समाचार उन्हें दे दिया, अच्छा ही हुआ। इधर तो मैं ठीक ही लग रहा हूँ—अंकिल आजकल मेरठ गए हुए हैं—संभव है फ़रवरी में उनके साथ मैं भी गोरखपुर जाकर बाबा जी से मिल आऊँ—अंकिल ने एक बार फ़ोन से इस प्रकार का प्रस्ताव किया था। मैं तो इधर कभी से कोई कार्य नहीं कर सका—तुम्हारी 'अभिषेकिता' की समीक्षा 'सा० हिन्दुस्तान' में नहीं देखने को मिली, शायद

अभी न निकली हो। 'महागर्दभ' तो निःसंदेह अच्छी रचना है पर 'दानवों का शाप' तो बहुत ही पसंद सबको आई। बाबा जी को जो कविता लिखकर सुनाई उसकी प्रति अवश्य भेज दो—मैं भी देखूँगा। बाबा से मिलने के बाद तुम रात को क्या बीमार पड़े कोई छींक-वींक आ गई होगी—भारती संगम के सिलसिले में वहाँ जो आयोजन हुए थे उसकी चर्चा भगवती बाबू ने की थी। अच्छा आयोजन हुआ, कहते थे। दिनकर के इधर कभी से समाचार नहीं मिले—वह बीमार था—पटना से दो पत्र मिले थे—क्या वह दिल्ली में है? इधर विचारा बहुत अस्वस्थ रहा।

अब तुम लोगों का तो यहाँ आने का कोई प्रोग्राम होगा नहीं, पिछली बार तुम आए थे बड़ा अच्छा रहा था। मैं तो वहाँ जनवरी के अंतिम सप्ताह ही में आ सकूँगा अनलेस कि तुम मुझे भी दिल्ली में कोई काम दिला दो और अपने पास ही मेरे रहने का भी प्रबंध कर दो।

कांता जी को वहाँ कोई काम मिल गया यह बहुत अच्छा हुआ। आशा है २००) तो कम से कम देते ही होंगे उन्हें। पीछे श्री इंदिरा जी के आ जाने पर तुम उनके लिए कोई अच्छा प्रबंध कर दोगे। यह बड़ा ही उपकार उनका होगा। जो व्यक्ति नौकरी करने को तैयार न हो और उसे करना पड़े इसमें कष्ट तो पहिले-पहल होता ही है पर यदि मन के अनुकूल काम मिल गया तो उससे चल जाता है। उन्हें काम दिला कर अपने पैरों खड़ा कर देना हमारा काम है फिर वह अपनी देखभाल स्वयं करेंगी और अपना भविष्य निर्माण भी।

यहाँ सर्दी काफ़ी है—तुम तो शीतोष्ण से पार गीता के निःसंग व्यक्ति हो—हमारी हड्डियाँ तो बजने लगती हैं।

आशा है तेजी जी आजकल बंटी के साथ प्रसन्न होंगी और स्वस्थ भी। उन्हें मेरा बहुत २ नमस्कार देना। चि० अजित-अमित को प्यार।

पत्र देना और बहुत-सी नयी बातें लिखना चाहे वे ग़लत ही हों—जैसी प्रायः होती हैं।

बहुत प्यार—
साईंदा

३५

१८/७ बी, क० गाँधी मार्ग
इलाहाबाद
२१-१२-('६०)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा १७ का पत्र कल मिला, बाबा के दर्शनों से तुम्हें लाभ होता है यह जानकर प्रसन्नता हुई। जनवरी में वहाँ आऊँगा तब तै कर लेंगे कि फ़रवरी में कब बाबा के पास जा सकते हैं—तुम, मैं और अंकिल सब जाएँगे। तेजी जी भी जाना पसंद करेंगी तो वह भी बड़ा अच्छा होगा। तदनुसार ही तुम वहाँ रहने का प्रबंध करना। बाबा जी को जो कविता तुमने सुनाई उसकी कापी की प्रतीक्षा है। 'अभिषेकिता की आलोचना पढ़ ली है, वह पसंद आई। दिनकर ने लिखा था कि वह दिल्ली से लौटता हुआ प्रयाग होता जाएगा—पर शायद तबीयत फिर गड़बड़ हो गई हो। आज उसे भी लिखूँगा।

गोपनीय बात का उत्तर पत्र में नहीं दिया जाता—वहीं मिलने पर दूँगा। २४ को तुम्हारे विवाह-दिवस पर अवश्य सम्मिलित हो सकूँगा। यदि २४ की रात को वहाँ पहुँचा तो काम चल जाएगा? या २३ की रात को आना पड़ेगा? तुम अभी नहीं पीछे टंडन जी से भी कह देना कि विवाह-दिवस के कारण पंत जी मेरे यहाँ रहेंगे। जनवरी २रे सप्ताह में कहना। २४ को अवश्य कोई मनोरंजक कार्यक्रम रखना

चाहिए। शाबाशी की पात्री तो तेजी जी हैं जिसने तुम्हें निभा दिया। तुम तो लूटा सुयश मार कर लाठी (बोलों की लाठी) वालों में हो।

तेजी जी को शिव शर्मा की ओषधि से लाभ है यह जानकर प्रसन्नता हुई। अब तो श्री इंदिरा जी भी वहाँ पहुँच गई होंगी। प्रसन्न होंगी। कांता के समाचार ठीक ही होंगे। उसे काम पसंद आया कि नहीं?

डींग मारना तुमने अभी नहीं छोड़ा—एड़ी का दर्द मामूली रहा होगा या ठीक हो गया होगा—अन्यथा तुम क़दम-क़दम पर हनूमान चालीसा पढ़ते—भला इतनी जल्दी स्वभाव कहीं बदल सकता है?

मेरी वहाँ आने की तिथि निश्चित ही है—अधिक से अधिक २३ ता० की रात को पहुँच सकता हूँ। सुना है वहाँ कुछ मीटिंगें भी हैं, कुछ दिन इनके कारण रुकना पड़े। शांता ठीक है। तुम दोनों को नमस्कार तथा बच्चों को प्यार भेजती है—संभव हो सका तो वह भी उस अवसर पर आ सकेगी। अब के क्वीन के आगमन के लिए क्या-क्या तैयारी हो रही है? क्लाउन का पार्ट किसे मिल रहा है? शेक्सपियर के मंच से तो तुम्हीं परिचित दीखते हो।

मेरे हाल कुछ-कुछ ठीक मालूम पड़ते हैं। एक विचित्र दवा मुझे भी बताई गई है—लाभ होने पर विज्ञापित करूँगा। एक क्रिश्चियन सज्जन हैं—धनी व्यापारी—विश्व-भर में बीसियों बार भ्रमण कर चुके हैं। २ वर्ष पहिले मुझे अचानक लखनऊ रेलवे स्टेशन पर मिले थे—तब उन्होंने वादा किया था कि वह मेरे यहाँ आकर मुझे मधुमेह की दवा बताएँगे। उन्हें भी बहुत सताया है इस बीमारी ने। इसी दवा से अच्छे हुए। तब से वह विदेश भ्रमण करते रहे। अब आकर मिले—मैं भूल गया था—उन्होंने घर का पता याद कर रखा था। आदमी अच्छे हैं, बहुत कर्मशील! अब देखें, उनकी दवा से लाभ होता है कि नहीं।

हाँ, तुमने अपने पिछले पत्र में लिखा था कि मि० कपूर मेरी कुछ कविताओं का अनुवाद कर रहे हैं और उसे छपवाना चाहते हैं। पिछले उनके कुछ अनुवाद तुम्हारे यहाँ सुने थे, वे तो मुझे बहुत ही पसंद आए

थे। मैंने तब उनसे कहा था कि 'कला और बूढ़ा चाँद' से अधिकाधिक चुनें, वे अनुवाद के लिए अच्छे होंगे। वैसे यह उन्हीं की रुचि पर है कि कौन-सी कविताएँ उन्हें अनुवाद की दृष्टि से अच्छी लगती हैं।

आजकल यहाँ कानवोकेशन वीक की धूमधाम है—पहिली बार समावर्तन समारोह हिन्दी में होने जा रहा है—देखें कैसा करते हैं। नाटक आदि उत्सव भी कई हैं। तुम ओथेलो क्या अब के स्टेज नहीं करनेवाले हो ? शायद तेजी जी के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है।

शेष फिर—आशा है सब लोग सानंद हो। सबको बहुत २ प्यार और नमस्कार—

तुम्हारा ही
साईंदा

३६

१८/७ बी, कस्तूरबा गाँधी मार्ग,
इलाहाबाद
२-१-६१

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा २६ का पत्र मिल गया था। इधर मैं अस्वस्थ हो गया था—एक इंटराइटिस का एटैक हो गया था, इसी से उत्तर शीघ्र नहीं दे सका।

तुम्हारा गीत बाबा के प्रति बड़ा सुन्दर, भावपूर्ण है। बाबा को अवश्य बहुत पसंद आया होगा। मैं वहाँ २३ ता० की रात्रि को पहुँचूंगा—लाल किले में इस जाड़े में जाने से रक्षा करो—बहुत 'कमबाएटिक्स' के इंजेक्शन्स ले चुका हूँ। तुम तो शीतोष्ण से परे ठहरे—चाहो कैलास की चोटी पर जाड़ों में शंकर भगवान की तरह समाधि

साध सकते हो। २८।२९ तक वहाँ रहने का विचार है। नरेन्द्र ने ठीक ही बतलाया होगा—यहाँ भी एक ज्योतिषी जी आए थे, मुझे स्वास्थ्य के बारे में चेतावनी दे गए हैं। ठीक ही है—मेरी राशि और नक्षत्र में ही '६२ में अष्टकूट हो रहा है। स्वास्थ्य में बाधाएँ आ सकती हैं।

श्री भारती जी का एक पत्र मुझे भी मिला था—यही सब जो तुम्हें लिखा है लिखा था। आजकल में उन्हें भी उत्तर दूँगा। परेशान हैं। 'त्रिभंगिमा' या 'त्रिभंग' नाम बहुत अच्छा रहेगा—बाबा जी के संपर्क का सूचक भी।

यहाँ स्व० फिरोज गाँधी के अस्थि-विसर्जन के समय रहना चाहता था पर बीमार पड़ गया। वैसे बहुत-से लोग थे—समाचार-पत्रों से ज्ञात हुआ था। दिल्ली में अब के क्वीन के अभिनन्दन की तैयारी हो रही होगी—कभी २ यहाँ भी खबर छनकर आ जाती है कि क्या २ हो रहा है। एकेडेमी के पुरस्कार के बारे में ओंप्रकाश जी भी कहते थे। पर वहाँ भी अंत तक सुना निर्णय बदलता रहता है। खैर, मैं पुरस्कार, उपाधि आदि के लिए कोई रुचि भी नहीं रखता। अब के कार्य कोई विशेष नहीं हो सका। कुछ अस्वस्थता कुछ व्यस्तता के कारण।

तुम्हें, तेजी जी और बच्चों को नवीन वर्ष की अनेकानेक शुभ-कामनाएँ और हार्दिक बधाई—आशा है सन् '६१ हम सबके लिए विशेष रूप से अच्छा रहेगा। तुमने यह नहीं लिखा कि कांता जी को काम मिल गया है या नहीं। मेरे पास कोई समाचार इधर उनके नहीं कहीं से आए। आशा है तुम सपरिवार खूब प्रसन्न हो।

नरेन्द्र को मैं भी आज एक चिट्ठी लिख रहा हूँ। यहाँ कल से विशेष रूप से सर्दी है। माघ-स्नान शुरू हो गया है। चाहो एक दिन को आकर संगम में डुबकी लगाने का पुण्य तुम भी लूट लो। हम तो तटवासी ठहरे, नहाने की आवश्यकता हमें नहीं रहती।

वहाँ के नवीन समाचार लिखना। 'कादंबिनी' (जनवरी) में तुम्हारी पुस्तकों की समीक्षा श्री लक्ष्मीकांत जी ने की है। कैसी लगी—

राम स्वरूप जी ने 'कला और बूढ़ा चाँद' की समीक्षा उसी अंक में की है, अच्छी है।

शेष फिर—बहुत २ प्यार—

तुम्हारा
साईंदा

३७

इलाहाबाद
९-१-(६१)

प्रिय बच्चन,

हरदा (मेरे बड़े भाई) का लखनऊ में ३ ता० की रात्रि को देहांत हो गया—अब ८ भाई-बहिनों में अकेला मैं ही रह गया ! विधि !

तुम्हारी चिट्ठी ३-१ की मिल गई थी—मैं कुछ तो मेहमानों के कारण कुछ भाई के बिछोह के कारण अस्थिर रहने से उत्तर शीघ्र नहीं दे सका। आज भी छोटा ही पत्र दे रहा हूँ।

(१) टंडन जी का पत्र आया है कि इस बार मैं उन्हीं के साथ ठहरूँ। सो तुम भी कह देना और मैं भी लिख रहा हूँ कि २४ को तुम्हारा विवाह-दिवस है इसलिए तुम्हारा आग्रह है कि तुम्हारे ही पास रहूँ।

(२) 'त्रिभंगिमा' भी 'अतिमा' ही है। भगवान की भंगिमा में तुम्हारी भी भंगिमा देखने को मिलेगी। स्वागत।

(३) तुमने जो पुरस्कार का स्वप्न देखा है—वह वही टूटा स्वप्न तो नहीं जो 'काँच' का नाद रंग-भरा था—सोने का, मिट्टी का, फूल का नहीं ? तुम्हारी यह कविता न जाने कहाँ पढ़ी, बड़ी पसन्द आई। अक्षयवट भी आज मिल गया—वह तो तुम्हारा ही व्यक्तित्व है।

सुन्दर है ! 'कादंबिनी' के लिए मि० राव से कह दिया है—वह भेजवा रहे हैं। वैसे अब 'हिन्दुस्तान टाइम्स' वाले ही वितरण कर रहे हैं। रज्जन की मौसी के देहांत पर मेरी समवेदना उसे भेज देना—मुझे उसका पता नहीं ज्ञात।—कांता जी को काम मिल गया, अच्छा हुआ। वहाँ आने पर उनकी कठिनाइयों का पता चलेगा।

(४) तुम्हें न एड़ी की तरफ़ बढ़ना चाहिए, न चोटी की—बढ़ना तो चाहिए था, रीढ़ के निचले भाग की ओर से—वही तो आदि रूप तुम्हारा रहा है। अब भी चाहो उस रूप को प्राप्त कर सकते हो—वैसे आपरेशन कराना ऐसे केसेज़ में ठीक नहीं होता—क्योंकि फिर बढ़ने का डर रहता है—मेरी समझ में तुम होमियोपैथी ट्राई करो।—यह उसी का केस है। उससे अवश्य लाभ होगा। यहाँ एक डा० वर्मा हैं—अच्छे हो० पैथ हैं। वहाँ ज़रूर ही कहीं अच्छे होंगे।

भाई की मृत्यु से मन में बड़ा सूनापन भर गया है—धीरे २ ही ठीक होगा। श्री टंडन जी से अवश्य अच्छी तरह बातें कर लेना—

आशा है सपरिवार सानंद हो। तेजी जी को और बच्चों को बहुत प्यार—

सप्रेम—

साईंदा

३८

इलाहाबाद
६-१-(६१)

प्रिय बच्चन,

लिफाफे में लिखना भूल गया—।म्हें असुविधा न हो तो मेरे लिए एक रेमिंगटन का पोर्टेबिल टाइपराइटर खरीद रखना—अच्छा लेटेस्ट

माडेल । मुझे ज़रूरत है । जब आऊँगा अपने साथ ले जाऊँगा—यहाँ तो मिलता नहीं—रेमिंगटन न हो तो कोई दूसरा अच्छे से अच्छा माडेल ले लेना—पर सुनता हूँ रेमिंगटन सबसे अच्छा होता है—पोर्टेबिल ही लेना ।

शेष लिख चुका हूँ ।

सप्रेम,

साईंदा

३६

इलाहाबाद
१०-१-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा कार्ड कल मिला—मेरे दोनों पत्र तुम्हें मिल गए होंगे । बाबा जी वहाँ २० से २३ तक रहेंगे यह जानकर प्रसन्नता हुई । तदनुसार ही मैं २१ ता० को प्रातःकाल का मेल से चलकर २१ ता० की ही शाम को ६ बजे के क़रीब दिल्ली पहुँच जाऊँगा, तुम मुझे स्टेशन पर लेने आ जाना । आशा है तुमको इसमें असुविधा नहीं होगी । उधर २६ के बाद मुझे यहाँ लौटना भी है—आवश्यक कार्यवश । अतः पहिले ही वहाँ ५।६ रोज़ रह सकूँगा ।

आशा है तुम प्रसन्न हो—घर में सबको सस्नेह नमस्ते कहना । अब तार देने की आवश्यकता नहीं ।

लाल क़िले की क़ैद से मुझे बचाना मत भूलना । कह देना मौन व्रत धारण किया है—एक दिन का—

हम सब लोग अच्छे हैं—शेष तुम्हारा पत्र आने पर —

सप्रेम—

साईंदा

४०

१८/७ बी, क० गाँ० मार्ग
इलाहाबाद
१६-१-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम बाँदा से लौट आए होगे, मैं १८ ता० को यहाँ से मथुरा शांता को लेकर जा रहा हूँ—वहाँ उसके माँ-बाप आए हुए हैं। वहाँ से २१ ता० को ३।। बजे चलकर ६।। बजे दिल्ली पहुँचूँगा। तुम किसी को मुझे २१ ता० को ६।। बजे शाम को लेने रेलवे स्टेशन पर अवश्य भेज देना। मैं ३।। बजे तूफ़ान एक्सप्रेस से मथुरा से चलूँगा, ६-६।। बजे के क़रीब वह दिल्ली पहुँचती है।

(२) मेरे लिए तुम वाटरलेस आनन्द कुकर (स्माल साइज़) दो आदमियों के लिए—(२) स्टेनलेस स्टील के ३ डोंगे—सर्विंग डिशेज़ (३) पोर्टेबल हिन्दी टाइप-राइटर (लेटेस्ट माडल) (रेमिंगटन) का ख़रीद कर अपने पास रखे रहना— किसी से मँगा लेना। पीछे ख़रीदने में दिक़्क़त हो सकती है। पैसे मैं अपने साथ लाऊँगा।

(४) इधर बहुत मेहमान आ गए थे इसलिए ठीक समय पर पत्र नहीं दे सका। आशा है तुम सपरिवार प्रसन्न हो। तेजी जी को मेरा सस्नेह नमस्ते— बच्चों को और तुम्हें प्यार —शेष मिलने पर—

सँदा

४१

इलाहाबाद
१६-१-(६१)

प्रिय बच्चन,

मथुरा जाने का कार्यक्रम स्थगित हो गया है। मैं २१ को कालका मेल से सवेरे चलकर उसी शाम को ६ के क़रीब दिल्ली जंकशन पहुँचूँगा। तुम मुझे वहाँ लेने आना। पिछले पत्र में जो चीज़ें लिखी हैं उन्हें ले रखना।

शेष मिलने पर। तुम्हारा पत्र इधर कभी से नहीं मिला। आशा है सपरिवार प्रसन्न हो।

सप्रेम,

साईंदा

४२

१८/७ बी, क० गाँ० मार्ग,
इलाहाबाद
२-२-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिल गया था। मैं यहाँ पहुँचने पर बीमार पड़ गया—ज़ुकाम और खाँसी तो थी ही, बुख़ार भी आ गया। २७ को १०१ हो गया, इसलिए लखनऊ जाना भी स्थगित कर देना पड़ा—कल से बुख़ार तो छूट गया है—पर तबीयत अभी ढीली-ढाली ही है, रास्ते में धूल और हवा के कारण कष्ट रहा। अच्छा हुआ मैं २६ को चला आया अन्यथा वहाँ बीमार पड़ जाता तो तेजी जी को कष्ट होता।

आशा है २-१ दिन में बिलकुल ठीक हो जाऊँगा—पहिला पत्र तुम्हीं को लिख रहा हूँ। वैसे ढेरों पत्र इन दिनों आए हैं। पता नहीं लोग पद्म भूषण की उपाधि को इतना महत्त्व क्यों देते हैं, मुझे तो किसी भी प्रकार की खुशी नहीं हुई।

हाँ, अब के वहाँ बड़ा ही व्यस्त रहना पड़ा—तुम लोगों के साथ बैठने का भी समय नहीं मिला। वैसे तुम तो एटर्नली व्यस्त रहने वालों में हो, हाँ तेजी जी के पास बैठ सकता था। श्री रमानाथ अवस्थी जी से ज्ञात हुआ कि अमित का आपरेशन हो गया है। आशा है विशेष कष्ट नहीं हुआ होगा। ग्लैंड के परीक्षण के बाद क्या रिपोर्ट आई ?

तुम्हारी घड़ी खूब चल रही है, तुम्हारी धरोहर की तरह ठीक से रखता हूँ—जब चाहोगे त्वदीयं वस्तु गोविन्द कहके लौटा दूंगा। तेजी जी को मेरे लिए कुकर वग़ैरह लाने में बड़ा कष्ट उठाना पड़ा। उन्हें कोरा धन्यवाद किस मुँह से दूँ ? मेरा बहुत २ प्यार और नमस्ते कह देना। बच्चों को भी प्यार।

अब के वहाँ आने का सबसे बड़ा लाभ बाबा जी के दर्शनों का हुआ। श्री पोद्दार जी भी मुझे बड़े अच्छे लगे। पर बाबा जी तो पिघले सोने की तरह अपनी सहज विशेषता रखते हैं। कभी से मिलना चाहता था। अब भी जब याद आती है तो बड़ा अच्छा लगता है।

'त्रिभंगिमा' को शीघ्र प्रकाशित करवा दो। शांता तुम्हें और तेजी जी को बहुत २ नमस्कार कहती है। आनंद कुकर से बड़ी प्रसन्न है। उसका झंझट टल गया।

शेष तुम्हारा पत्र आने पर—क्वीन तो अब चली गई। वहाँ के नवीन समाचार लिखना।

तुम्हें बहुत प्यार—

तुम्हारा
साईंदा

४३

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
१०-२-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र न मिलने के कारण चिंतित हूँ। अमित की तबियत कैसी है? बंबई से क्या रिपोर्ट ग्लैंड के परीक्षण के बाद आई? तुम्हें मेरा पिछला पत्र मिल गया है?—४ या ५ ता० का। मेरा स्वास्थ्य अब अच्छा है—पर प्रयाग में सर्दी बहुत है—दिल्ली में और भी होगी—तुम्हारी कविता 'सा० हिन्दुस्तान' में आज पढ़ी—अंधा युग एटसेट्रा पर, बड़ी अच्छी लगी। 'कादंबिनी' का नया अंक मिला होगा—'दानवों का शाप' उसमें निकला है—यहाँ सबको वह बहुत पंसद आई। क्या बाबा फिर दिल्ली आए थे? कोई नवीन समाचार उनके बारे में है? तेजी जी प्रसन्न होंगी—उनसे मेरा बहुत-बहुत स्नेहपूर्वक नमस्ते कहना—उनका स्वास्थ्य ठीक होगा—कल अंकिल तथा डा० सामंत आई थीं—तुम लोगों के बारे में पूछ रहे थे—वे लोग भी इधर अस्वस्थ थे।

जब से दिल्ली से लौटा हूँ कोई भी काम नहीं कर सका—बस प्रेस के प्रूफ़ भर देखे—एक मेरा 'शिल्प और दर्शन' नाम से निबंधों का संग्रह निकल रहा है प्रायः ३००-३५० पृष्ठों का—जिसमें 'युगपथ' भी सम्मिलित है और ४-५ वर्ष में दी गई मेरी वार्ताएँ। श्री रामनारायण लाल प्रकाशक हैं—उनका कभी से अनुरोध था। पुस्तक अच्छी निकाल रहे हैं—मार्च अंत तक तैयार होने पर तुम्हारे पास भेजवाऊंगा।

शांता तुम्हें और तेजी जी को नमस्कार कहती है—इस रविवार को वह अपने विभाग के साथियों के साथ कौशांबी जाएगी—मैं तो

यहीं हूँ।

पत्र शीघ्र देना—क्या स्वास्थ्य ठीक नहीं? सब समाचार भेजना—

श्री नरेन्द्र शर्मा जी के क्या हाल हैं? तब से कभी भेंट हुई कि नहीं?

तुम्हारी घड़ी ठीक चल रही है। सप्ताह में ५-६ मिनट फ़ास्ट हो जाती है—तुम्हारी नाड़ी का टेम्पो अभी नहीं भूली। संभवतः मेरे हाथ में ३-४ महीने बँधी रही तो स्लो हो जाय।

शेष पत्र आने पर—

बहुत २ प्यार

तुम्हारा
साईंदा

पु० हाँ, कांता भारती का पत्र आया था
कि उनकी लड़की बड़ी बीमार है—
बड़ी घबड़ाई हुई लगती हैं—ज़रा
किसी डाक्टर को उसे दिखवा देने का प्रबंध
कर देना—उन्हें भी लिख रहा हूँ—

—सु०

४४

इलाहाबाद
२२-२-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र कल शाम की डाक से बहुत दिनों बाद मिला, बड़ी प्रसन्नता हुई। उसमें इत्र का फाहा भी था। उससे पहिले मैंने एक

तार दिया था, दूसरे दिन सबेरे श्री तेजी जी का ट्रंक मिल गया था। और तुम सब लोगों के समाचार मिल गए थे। इधर तुम पर कई लेख निकले हैं। 'नयी कविता' (सं० डा० जगदीश गुप्त) में साही का एक लम्बा लेख है जिसमें तुम्हारी बड़ी चर्चा है। और बड़ी प्रशंसा भी। 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' में तुम पढ़ ही चुके होगे। हमारे ए० एस० डी० गिरिजा कुमार जी का भी कहना है कि 'मधुकलश' में तुमने जो परिवर्तन किए हैं वे अच्छे नहीं। उन्हें तुम्हारा पुराना वर्ज़न मुखाग्र याद है—तुम उनके बड़े प्रिय कवि रहे हो—उन्होंने कई उदाहरण मुख से दिए—जैसे तुमने बीहड़वन के स्थान पर कंटकवन कर दिया है—अच्छा भला के स्थान पर फूलाफला—तड़ित छिपा के स्थान पर तड़ित हटा इत्यादि—मुझे ठीक से याद नहीं आ रहे हैं। मुझे उनकी बातें ठीक लगीं। 'कल्पना' में तुम्हारी दीपक, पतिंगे और कौए—बड़ी पसंद आई। बहुत २ अच्छी कविता है।

इधर तुम व्यस्त रहे मैं भी व्यस्त ही सा रहा, बाहर वालों का बहुत काम निबटाना था। प्रूफ़ भी 'शिल्प और दर्शन' के देखने थे—एप्रिल तक वह प्रकाशित हो जाएगी। तुम्हारी 'त्रिभंगिमा' देखने की उत्सुकता है, नाम यहाँ लोगों को पसन्द आया। अमित के बारे में बम्बई वालों की रिपोर्ट आ गई,उसमें कुछ नहीं निकला, जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। आपरेशन के बाद कमज़ोरी तो होने ही वाली ठहरी—विटामिन ए+बी+डी दो।

मेरा स्वास्थ्य अब अच्छा है—आशा है अब मौसम ठीक हो जाने से तेजी जी का स्वास्थ्य भी ठीक हो जाएगा। वह नाटक कब तक स्टेज करेंगी ? कांता जी का पत्र मुझे भी मिला था, उनकी लड़की अब ठीक है। इधर एक हमारे पड़ोसी डिप्टी कलेक्टर के यहाँ एक भृगु संहिता वाला आया था, उसकी बड़ी प्रशंसा वह करते थे। और भी कई लोगों से उनकी चर्चा सुनकर मैने भी कौतूहलवश अपनी पत्री उसे दी है, आज शाम को वह उसका विचार सुनाने वाला है—देखें, यह कौतूहल

भी पूरा हो जाएगा—कोई ख़ास बात कहेगा तो तुम्हें लिखूंगा ।

नरेन्द्र शर्मा जी के कुशल समाचार पाकर चिन्ता मिटी—उसकी श्रीमती जी सुशीला बेन का पत्र आया था कि नरेन्द्र को मकान न मिल सकने के कारण उसे बड़ा कष्ट है—पता नहीं कब तक घर मिलेगा। श्रीमान पं० पंत (गृहमंत्री) जी के स्वास्थ्य का समाचार सबेरे के पत्र में पढ़कर चिन्ता हुई । आशा है ठीक ही होंगे ।

बच्चन, वहाँ गोपाल प्रसाद व्यास, दिल्ली प्रादेशिक हि० सा० सम्मेलन के मंत्री को मैंने एक पत्र तथा चित्र (राजर्षि टंडन जी का) भेजवाया था, पर उन्होंने अभी कोई उत्तर नहीं दिया । गणतंत्र दिवस के अवसर पर उन्होंने कहा था कि वह चित्र उनके पास भेजवा दूं—कृपया किसी से कह कर उन्हें फ़ोन करवा देना । चित्र हमारे मित्र मि० माथुर का है—वह इस बारे में चिंतित हैं । आशा है तुम्हें इसमें कष्ट नहीं होगा ।

शेष फिर—

बहुत प्यार—

तुम्हारा
साइंदा

४५

१८/७ बी, कस्तूरबा गाँधी मार्ग,
इलाहाबाद
४-३-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम्हें सपरिवार मेरी होली की बहुत-बहुत बधाई और शुभ-कामनाएँ । तुम्हारा पत्र एक दम आकाशकुसुमवत् अथवा शशक शृंग-

बत् (ग़ायब) हो गया। मुझे लगता है कुछ ज़रूर दाल में काला है या (१) मुझसे किसी कारण नाराज़ हो (२) या और कोई पारिवारिक या कार्यसंबंधी चिन्ता में डूबे हुए हो। बहरहाल जो भी हो तुरन्त लिखो—

अमित और तेजी जी का ट्रंक कॉल मेरे तार के बाद आया था, पर तुम्हारा कब से कोई भी पत्र नहीं आया—तुम्हारा एक पत्र मुझे इत्र वाला मिला था जिसका मैंने उत्तर भी दे दिया था।

प्लीज़ जल्दी पत्र देकर बतलाओ क्या बात है? मेरे दाँत में बड़ी तकलीफ़ दो रोज़ से है पर बाहर होली वालों का ऐसा आतंक है कि दाँत निकलवाने सिविल लाइन जाना संभव नहीं।—अब कल ही निकाल पाऊँगा। पर दाँत के दर्द से अधिक तुम्हारा पत्र न आने से दिल में दर्द है उसकी दवा तो तुम्हीं कर सकते हो।—

आशा है तुम शीघ्र पत्र दोगे और अपनी काष्ठमौन चुप्पी का कारण फौरन लिख भेजोगे—बहुत २ प्यार।

तुम्हारा
साईंदा

भाई बच्चन जी को सपरिवार होली की बधाइयाँ। होली तथा नया वर्ष (चैत्र) आप सब लोगों के लिए मंगलमय तथा सुखद हो—

सादर, सस्नेह

—शान्ता

४६

भारत सरकार
आकाशवाणी—इलाहाबाद

पत्रांक इला० ११ (५) ६१-पी० १

दिनांक, ९ मार्च १९६१

प्रिय बच्चन,

* "आकाशवाणी केंद्र इलाहाबाद से तारीख़ २३ अप्रैल, १९६१ को रात्रि के ९ बज कर ४५ मिनट पर एक अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन प्रसारित करने का आयोजन किया गया है। मेरी आपसे सविनय प्रार्थना है कि आप इस समारोह में सम्मिलित होकर इसे शोभा तथा सफलता प्रदान करें। हमारे इलाहाबाद केन्द्र से यह आयोजन प्रायः एक वर्ष के बाद हो रहा है इसलिए मेरा व्यक्तिगत रूप से भी आग्रह है कि आप इसमें अवश्य उपस्थित होने का कष्ट करें जिसके लिए मैं विशेष रूप से कृतज्ञ रहूँगा।" प्रयाग आना बड़ा ज़रूरी है—यहाँ का कवि-सम्मेलन अवश्य सफल होना चाहिए—श्रोता चातक की तरह तुम्हारी आशा लगाए हुए हैं। कृपया समय किसी तरह अवश्य निकालना। आशा है सपरिवार प्रसन्न हो।

आपका,
सुमित्रानन्दन पंत
साहित्य-सलाहकार

डा० हरवंशराय "बच्चन",
१३ विलिंगडन क्रिसेंट,
नई दिल्ली।

---

*कामूस का हिस्सा रेडियो के गश्ती पत्र का है।-संपादक

४७

१८/७ बी, के० जी० मार्ग
इलाहाबाद
१०-३-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे दोनों पत्र मिल गए। श्री पंत जी के न रहने से मन दुःखी है—देश में भी शोक छाया हुआ है। मैं १७ ता० को शाम को दिल्ली पहुँचूंगा, २६ तक वहाँ रहूँगा। तार से भी समय पर सूचना दूंगा। आशा है तुम और तेजी जी और अमित वहां सकुशल हो। 'त्रिभंगिमा' मिल गई है—शेष फिर—

प्यार

साईंदा

४८

१८/७ बी, के० जी० मार्ग
इलाहाबाद
१३-३-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम्हें मेरा पिछला कार्ड मिल गया होगा। तुम्हारे सब पत्र, तार, 'त्रिभंगिमा' इत्यादि मुझे मिल गए थे—इधर प्रयाग में ही कुछ इतना इधर-उधर ब्याह-शादी दावत आदि में जाना पड़ा कि पत्रोत्तर देने में विलंब हुआ।

श्री पंत जी के निधन से तो मन में बड़ा विषाद छाया रहा। क्या किया जाय—ट्रंक कॉल तो मैं करता रहा पर अपने स्वास्थ्य की

सीमाओं के कारण वहाँ नहीं आ सका—अब २१।२२ तक वहाँ पहुँचूँगा—२७ ता० तक रहूँगा। शांता भी आना चाहती है। पर २१ से पहिले प्रेप्रेशन लीव नहीं हैं और ४-५ दिन की कोई छुट्टी उसे मिल नहीं सकती।

किसी ने कहा तुम्हारे पाँव में बड़ी तकलीफ़ है। मेरा दाँत का दर्द तो इधर चला गया है—फिर उठेगा तो अबके तुड़वाना ही पड़ेगा। 'त्रिभंगिमा' की ७५% रचनाएँ तो मेरी पढ़ी हुई हैं—शेष पढ़ गया हूँ—अनेक रचनाएँ बड़ी सबल हैं—प्राय: ७५% लोकगीत, ७०/७५% मुक्त छंद और ५०%गीत बड़े अच्छे हैं। अगले वर्ष का अकादमी पुरस्कार तुम्हें ही मिलना चाहिए। अभी प्रयाग में नहीं पहुँची। मैंने ही कल देव साहब (बड़े) के लड़कों की शादी की दावत (चाय) में साही वग़ैरह से चर्चा चलाई। लोकधुनें जो उन्होंने पत्रों में पढ़ीं उन्हें भी पसंद हैं। एक बार देवराज की 'अजय की डायरी' पढ़ने के बाद फिर 'त्रिभंगिमा' पढ़ने का विचार है।

अपने आने की सूचना तार से दूँगा। आशा है अमित अब खूब पढ़ रहा है। एक बात लिखना—वहाँ अब कितनी सर्दी है? रजाई की कि कम्बल की? गरम कपड़े चाहिए कि ठंडे? तुम तो शीतोष्णजित् हो, अपने स्टैंडर्ड से मत लिखना और लोगों को देखकर लिखना—अजित का पत्र आया था। उसे बहुत धन्यवाद दे देना—अब आने पर भेंट होगी। आशा है तेजी जी स्वस्थ और प्रसन्न हैं।

अकादमी का अवार्ड तो भइया मिला—पर पंत जी की मृत्यु से इसमें बड़ा क्षोभ तथा निरुत्साह भर गया है—दावत का क्या—तुम्हीं अरेंज करना—इधर लिखना भी कुछ नहीं हो रहा है—न जाने कब से क़लम नहीं उठाई—उसका भी इनमें अवसाद है। तुम्हारी 'त्रिभंगिमा' का मुझे आशा है विशेष स्वागत होगा—'आरती और अंगारे' से मुझे कहीं अच्छी लगी। सिर्फ़ काग़ज़ बहुत मामूली लगा दिया है। मैं राजपाल एण्ड संस से अच्छे काग़ज़ की उम्मीद करता था—इस बात में

राजकमल अच्छा है। 'रश्मिबंध' का दूसरा संस्करण निकला है—'शिल्पी' का भी—दोनों का काग़ज़ बहुत अच्छा है।

आशा है तुम खूब प्रसन्न हो।

सप्रेम

तुम्हारा,
साईंदा

पु०—नरेन्द्र अच्छा होगा—उसके समाचार ही नहीं मिलते—
सु०

४६

१८/७ बी, कस्तूरबा गाँधी मार्ग
इलाहाबाद
१६-३-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा कार्ड अभी मिला—इधर मैं तुम्हें ३-४ पत्र भेज चुका हूँ जिसमें तार आदि के बारे में सभी कुछ लिखा है। २ तो काफ़ी लंबे भी हैं। आशा है तुम्हें मिल गए होंगे। श्री बाबा जी वहाँ आए जानकर प्रसन्नता हुई। मैं वहाँ २३ ता० को शाम को शांता के संग अवश्यमेव पहुँच जाऊँगा। उससे पहिले शांता को छुट्टी नहीं मिल सकी—शांता तो रात को शायद तुम्हारे ही यहां रहे पर दूसरे दिन इला के यहाँ चली जाएगी। पता नहीं कमला देवी जी से किसने कह दिया कि मैं १५ ता० दिल्ली पहुँच रहा हूँ।

'त्रिभंगिमा' के बारे में पिछले पत्र में लिख चुका हूँ। आज नरेन्द्र का भी पत्र आया था। २३ रात को तुम उसे अपने यहाँ खाने को

बुला लेना—वह फिर जयपुर चला जाएगा। उससे मेरी भेंट नहीं हो पाएगी। आशा है तेजी जी का स्वास्थ्य अब ठीक रहता है। तुमने अपने पाँव के हाल नहीं लिखे—मैं दो चिट्ठियों में पूछ चुका हूँ। मैंने यह भी पूछा था वहाँ के लिए गरम कपड़ों की ज़रूरत होगी कि नहीं? कृपया शीघ्र लिखना। मेरा स्वास्थ्य इधर सामान्य ही रहा। चि० अमित अब अच्छा होगा और परीक्षा की तैयारी कर रहा होगा। इधर तुम्हारे केवल एक तार, २ कार्ड और एक लंबा पत्र मिला था—सबके उत्तर तुरन्त दे चुका हूँ। यदि नहीं मिले तो डाक विभाग के हाथ की सफ़ाई है।

प्यार—

साईंदा

५०

No. 696

18-3-61

INDIAN POSTS AND TELEGRAPH DEPARTMENT

Received here at 11.00.

O. IH AP 11 ALLAHABAD 18 28

BACHCHAN THIRTEEN WILLINGDON CRESCENT NEW DELHI—REQUEST KAPOOR TO RENDER INTO ENGLISH THIRD POEM OF CRESCENT AND OLD MOON AND SEND IT TO KRIPLANI AKADEMI SOON

SUMITRANANDAN

५१

इलाहाबाद
१८-३-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम्हें एक तार, एक पत्र भेज चुका हूँ। तुम नाराज़ हो कि मैं १७। १८ को नहीं आया—सच जानो, मुझे इधर कुछ दिन से टेम्प्रेचर हो गया है—शायद होली में लोगों ने बहुत भिगा दिया इसलिए—पर चिन्ता की कोई बात नहीं—अब कम है—अब भी शाम को ९९ हो जाता है—कभी ९९.४ या ६ भी। उस समय कमज़ोरी अनुभव होती है—इसलिए भी वहाँ आने का प्रोग्राम स्थगित करना पड़ा। राजा बहुत चाहता था कि पंत जी की बरही (हमारे यहाँ तेरही नहीं होती) में वहाँ रहूँ अर्थात १८ ता० को—पर टेम्प्रेचर के कारण संभव नहीं था। अतः तुम्हें नाराज़ होने का कोई कारण नहीं है—

शेष पिछले पत्र में लिख चुका हूँ—

सप्रेम,

साईंदा

५२

१८/७ बी, के० जी० मार्ग
इलाहाबाद
१८-३-६१

प्रिय बच्चन,

तुम्हें अभी सबेरे एक तार भेज चुका हूँ—कृपया अपने मित्र मि० कपूर से मेरी कला और बूढ़ा चाँद' की तीसरी कविता 'धेनुएँ' का

अंग्रेज़ी रूपांतर शीघ्र कराकर श्री कृपालानी (सेक्रेटरी सा० अकादमी) जी के पास २-३ दिन के भीतर ही भेजवा दो तो बड़ा अहसान मानूं—मुझे धेनुएँ २६ ता० को अकादमी के पर्व के अवसर पर पढ़नी है—वह पब्लीसिटी के लिए उसका इंग्लिश रेंडरिंग भी चाहते हैं—यहाँ उतना अच्छा कोई नहीं कर सकता— प्रकाश चंद्र जी बीमार ही हुए। अतः श्री कपूर साहब को कष्ट देना पड़ा—उनसे मेरी ओर से कष्ट के लिए बहुत २ क्षमा माँगकर मेरी बहुत कृतज्ञता प्रकट कर देना।

हम लोग २३ ता० को—कालका मेल से जो ६ के क़रीब शाम को पहुँचती है—वहाँ पहुँचेंगे—इधर दो-एक दिन से मुझे थोड़ा बुखार हो जाता है—आशा है १-२ दिन में ठीक हो जाएगा। यहाँ फ़ोनोग्राम विभाग में एक ऐसा 'मूर्ख' (तुम्हारे शब्दों म) है कि वह 'कला और बूढ़ा चाँद' ही नहीं समझा—कभी केला कहने लगा कभी कुछ—फिर उसे क्रिसेंट एण्ड ओल्ड मून लिखवाना पड़ा—आशा है तुम समझ गए होगे। तुम्हें इधर सभी पत्रों का उत्तर दे चुका हूँ। डाक विभाग वाले न पहुँचाएँ तो क्या करूँ—श्री कृपालानी का भी इससे पहिले का पत्र नहीं मिला नहीं तो अनुवाद की योजना पहिले ही करवाता।

आशा है श्री तेजी जी बिल्कुल ठीक हैं और अमित भी। तुमने अपने पैर के दर्द के बारे में नहीं लिखा—हो सकता है तुम्हारी प्रतिभा गहरी जड़ें मिट्टी में डालना चाहती हो—तुम्हें मिट्टी बड़ी प्रिय है।

और बातें कल के पत्र में लिख ही चुका हूँ।

बहुत प्यार—

सईंदा।

५३

इलाहाबाद
२२-३-(६१)

प्रिय वच्चन,

अभी तुम्हारा पत्र मिला—सबेरे तुम्हें तार दे चुका हूँ कि मैं २५ ता० की शाम को मेल से पहुँचूंगा। क्योंकि कल भी ९९.४ हो गया था, डाक्टर ने कहा कि २-१ दिन और पोस्टपोन करना ठीक होगा। राजा को भी अभी लिखे दे रहा हूँ। उसका कहना है कि शांता सीधे वहीं आए। अतः उसे २५ को ही वहाँ पहुँचा देंगे। शायद ऐसे अवसर पर यही उचित होगा। २५ की शाम तुम स्टेशन पर अवश्य किसी को भेज देना। शेष समाचार ठीक ही है। इधर मुझे डेली इंजेक्शन लग रहे हैं। २५-२६ को तो नहीं लूंगा—२७-२८-२९ और जितना भी वहाँ रहूँगा लेने पड़ेंगे—इंट्रा मस्कुलर—हिप्स में—बड़े पेनफुल हैं—कैल्सी-आस्टेटिन बी १२ कंबेक्स—इसमें लिवर एक्सट्रैक्ट होता है—वह बड़ा पेन करता है : आशा है वहाँ कोई प्रबंध इंजेक्शन लेने का हो ही सकेगा। और कोई चिन्ता की बात नहीं। तेजी, अमित और तुम्हें बहुत प्यार—

साईंदा

५४

१८/७बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
१-४-(६१)

प्रिय वच्चन,

हम लोग ३० ता० की शाम को पहुँच गए थे—काफ़ी थकान

मालूम हुई—दिन भर बैठकर आना पड़ा। तुम्हें और तेजी जी को बड़ा कष्ट दिया—कुछ ऐसे कारण हैं, क्या किया जाय, परवश मनुष्य हूँ। यहाँ गर्मी काफ़ी पड़ने लगी है। तुम्हें और श्री कपूर को विस्तार-पूर्वक सोमवार को लिखूँगा। कल इतना थक गया था कि तुम्हें पहुँचने की सूचना नहीं दे सका। तेजी जी को मेरा बहुत २ स्नेह और नमस्ते देना। अमित बड़ा सुन्दर दिखने लगा है—उसके ग्रह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। उसकी और अजिताभ की कुंडलियाँ शीघ्र ही बनवा दूँगा—तेजी जी से कह देना। बहुत लोग मिलने आए हैं, इसलिए पत्र समाप्त करता हूँ।

तुम्हें बहुत प्यार और धन्यवाद,

सदैव
साईंदा

५५

इलाहाबाद
४-४-६१

प्रिय बच्चन,

तुम्हें मेरा १ ता० का पत्र मिल गया होगा। इस पत्र के साथ एक पत्र मि० कपूर के नाम भी भेज रहा हूँ। उनका पता मालूम न होने से तुम्हें भेज रहा हूँ। तुमने फ़ोन पर भी कह दिया होगा। आशा है तुम-तेजी जी और अमित—सानंद हो— हम लोग ठीक ही हैं—यहाँ इतने काम निकल आए हैं कि थक जाता हूँ। ओंकार कीर्ति अभी वहीं होंगे—संभवतः प्रयाग भी आएँ।

तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा है। श्री तेजी को मेरा बहुत प्यार देना।

कवि सम्मेलन के अवसर पर लोग यहाँ तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। गर्मी प्रयागराज में दिन पर दिन चढ़ाई पर है।

शेष फिर—

सप्रेम—

तुम्हारा
साईंदा

५६

१८/७बी, के० जी० मार्ग,
इलाहाबाद
११-४-(६१)

प्रिय बच्चन,

वहाँ से लौटने पर मेरा तापमान स्ट्रेन के कारण फिर बढ़ गया है। डा० कंप्लीट रेस्ट लेने को कहता है—इंजेक्शंस चल रहे हैं। अतः मैं वहाँ अब २६ की प्रातः ही आ सकूँगा। तुम २३ ता० को अवश्य आना।

तुम्हारी कविता 'अध्ययन कक्ष में बसंत' रीतिकालीन कवियों के वक्ष में बसंत से कहीं बढ़कर रही। 'कादंबिनी' के जून-ग्रंक में अत्यंत आभा के साथ प्रकाशित हो रही है। मेरी पिछली चिट्ठियाँ तुम्हें मिल गई होंगी।

इधर तुम्हारा पत्र कभी से नहीं आया, शायद तुम व्यस्त होगे। ओंकार कीर्ति कुछ घंटों के लिए यहाँ आए थे, उसी शाम बम्बई चले गए। शांता तुम्हें और तेजी जी को बहुत नमस्कार कहती है। मेरी ओर से भी तेजी जी को बहुत प्यार और नमस्कार देना। अमित की

पढ़ाई ठीक चल रही होगी। वहाँ के नवीन समाचार लिखना। पत्र शीघ्र देना—

शेष फिर—

प्यार—
साइँदा

५७

इलाहाबाद
२१-४-(६१)

प्रिय बच्चन,

मेरा पत्र मिल गया होगा। तुम्हारी रचना जून की 'कादंबिनी' में निकलेगी। मैं आने की तिथि अब तार द्वारा सूचित करूँगा। पिछले पत्र में २५ की शाम को लिख दिया था, अब नरेन्द्र के आने पर उसके साथ ही आने का कार्यक्रम बनाऊँगा, अतः तार से तिथि की सूचना दूँगा। तुम्हारा पत्र इधर नहीं मिला। आशा है सपरिवार सानंद हो।

मैं अब अच्छा हूँ। आजकल टंडन जी भी यहीं हैं। तुम कवि सम्मेलन में नहीं आ रहे हो यह बड़ा बुरा हुआ। मैंने पिछले पत्र में बहुत अनुरोध किया था। पर तुमने ए० आई० आर० दिल्ली को अस्वीकृति दे दी सुना। दिनकर भी नहीं आ रहे हैं। शेष फिर—आशा है सपरिवार प्रसन्न हो। तुम्हें तेजी जी और अमित को बहुत प्यार—

तुम्हारा
साइँदा

५८

इलाहाबाद
२६-४-(६१)

प्रिय बच्चन,

मैं आज ११½ बजे सबेरे सकुशल पहुँच गया— थक गया हूँ। बड़ी गर्मी थी। आशा है तुम सब लोग प्रसन्न हो। तेजी जी को बहुत धन्यवाद तथा मेरा प्यार देना—उन्हें मेरे आने पर बड़ा काम पड़ जाता है। तुम्हारा संदेश राव साहब से कह दूँगा। मेरे लिए सोमवार का 'हिन्दुस्तान टाइम्स' जिसमें मेरी इंटरव्यू छपी हो भेज देना—चाहे इंटरव्यू का ही कटिंग भेज देना। तुम छुट्टी कब से ले रहे हो ? शेष फिर —तुम्हें अमित और तेजी जी को बहुत प्यार—

तुम्हारा
साईंदा

५९

प्रयाग
६-५-(६१)

प्रिय बच्चन,

इधर श्री रवीन्द्रनाथ तथा मोतीलाल जी की शत वार्षिकियों के कारण इतना व्यस्त रहना पड़ा कि तुम्हें पत्र नहीं दे सका। क्षमा करना—वैसे तुम्हारा भी एक कार्ड के अलावा इस बीच कोई पत्र नहीं मिला। तुम छुट्टी लेकर विश्राम कर रहे हो यह जान कर आश्चर्य हुआ। तुम और आराम ? खैर—सभी कुछ संभव है।

श्री तेजी जी से कहना कि अमित-अजित की कुंडली बनने को दे दी हैं—शीघ्र ही बनने पर भेज दूँगा। पी० एन० सिंह बाहर गए हुए हैं

इससे फिर शुक्ल जी ही को दी है। सप्ताह भर के अन्दर ही बना देंगे। अमित पास हो गया, बधाई और प्यार देना।

आशा है तुम सब लोग सानंद हो—तेजी जी को मेरा विशेष स्नेह देना—

शेष फिर—

—सप्रेम
साईंदा

६०

प्रयाग
२२-५-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिल गया था। मैं २४ ता० को अल्मोड़ा जा रहा हूँ—पता—रानी धारा, अल्मोड़ा—वहीं के पते पर पत्र देना।

तेजी जी और अमित लौट आए होंगे। तुम खूब आराम कर चुके होगे। समाधि टूटने पर जो सिद्धि लाओगे उससे तभी परिचय प्राप्त हो सकेगा। यहाँ गर्मी काफ़ी है। अब पहाड़ ही जाने पर शांति मिलेगी—वहाँ काम तो कुछ हो नहीं सकता—बहुत भीड़ रहती है—पर गर्मी से बच जाऊँगा। २-३ जुलाई तक लौटूंगा। मालूम पड़ता है मेरी इंटरव्यू 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में नहीं छपी—क्योंकि वह हिंदी के पक्ष में थी—सरकार की भी उसमें आलोचना थी। ज़रा पता लगाके लिखना—इसीलिए मेरे पास भी कोई अंक 'हिं० टा०' का नहीं आया। तेजी जी से ज़रा कांता की चिन्ता करने को कहना। आशा है तुम सपरिवार प्रसन्न हो। मेरे जन्म दिवस पर तुम्हारा तार १९ ही को पहुँच गया था—बहुत धन्यवाद। वहाँ गर्मी अधिक नहीं है सुना—पानी भी बरसा सुना। तेजी जी के स्वास्थ्य के बारे में लिखना। उन्हें मेरा

बहुत स्नेह पूर्वक नमस्कार देना—अमित पास हो गया—बड़ी प्रसन्नता हुई। उसे बधाई देना और मेरा प्यार भी। तुम क्या नैनीताल जाओगे? कब तक? अवश्य लिखना। तुम्हारे पाँव के कार्न के बारे में पढ़ कर चिन्ता हुई। अच्छे होमियोपैथ तो कलकत्ते में रहते हैं—उस ओर के ट्रिप का प्रबंध करो तो वहाँ किसी डा० चैटर्जी को दिखलाओ—वह बड़ा प्रसिद्ध होमियोपैथ माना जाता है। वैसे तुम तो एक पैर से भी दुनियाँ का चक्कर लगा सकते हो। पादप की तरह ऊपर को बढ़ कर—

आशा है अच्छे हो—

बहुत प्यार—

तुम्हारा
साईंदा

६१

रानीधारा
अलमोड़ा
६-६-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र तो मिल गया था। पर नैनीताल का पता ज्ञात न होने से ठीक से उत्तर नहीं दे सका। अभी तक प्रतीक्षा थी तुम नैनीताल से अपना पता दोगे। पर अब यह कार्ड दिल्ली के ही पते पर भेज रहा हूँ—शायद तुमने पी० ओ० को इन्स्ट्रक्शन्ज़ दे रखे हों। अब जब तुम्हारा पता मालूम हो तब लम्बा पत्र लिखूं—यहाँ का पानी बड़ा गंदा है—फ़्लू की वेव शहर में है। मैं भी उसी में पड़ा रहा—अब

आधा ठीक हूँ—तुम लोगों के समाचार जानने को उत्सुक हूँ। श्री तेजी, अमित, अजित और तुम्हें बहुत प्यार—

पत्र शीघ्र दो—

सप्रेम—
साइँदा

६२

रानीधारा, अलमोड़ा
१६-६-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र नैनीताल से मिला था, तुम दिल्ली पहुँच गए होगे—एक कार्ड मैंने दिल्ली के पते पर भी लिखा था। यहाँ अल्मोड़े में हमारे यहाँ तो बहुत भीड़ थी पर तुम आना चाहते तो मैं प्रबंध करवा सकता। पर तब तुम्हारा नैनीताल का पता ही नहीं मालूम था। आशा है तेजी जी स्वस्थ और प्रसन्न हैं। तुम्हारे प्रस्तर शिल्प पर अजित का लेख देखने को नहीं मिला। वैसे उसकी पहिली रूपरेखा तो सुन ही ली थी। पर फिर भी देखना चाहता। 'हिन्दुस्तान टाइम्स' की इंटरव्यू तो अच्छा ख़ासा फ़ार्स रही—जो बातें मैंने कहीं, जिनपर बल दिया, उनका पता नहीं—शायद पत्रकार लोग सरकार से डरते हैं। मैं तो केवल आलोचना करता हूँ—विरोधी तो हूँ नहीं—कटिंग इलाहाबाद पहुँचने पर तुम्हें लौटा दूँगा। अब से वहाँ के पत्रकारों से होशियार रहूँगा।

मेरी पुस्तक 'शिल्प और दर्शन' निकल गई—पर उसका शुद्धि-पत्र कल ही मैंने यहाँ से भेजा है—प्रयाग पहुँचने तक छप जाएगा—तब तुम्हें भेजूँगा। ३७० पृष्ठों की है। २८ जून तक मैं प्रयाग पहुँच जाऊँगा। दिल्ली में कितनी गर्मी है? अभी तो प्रयाग में भी पानी नहीं

बरसा है— तब तक तो बरस ही जाना चाहिए ।

तुम्हारे पाँवों में जो काँटा निकल आया है उसके लिए तो मैं पहिले ही लिख चुका हूँ कि किसी होमियोपैथ को ट्राई करो । कलकत्ता अभी न जा सको तो दिल्ली के ही किसी हो० पैथ से दवा ले लो—और कलकत्ते में अपने किसी विश्वस्त मित्र को लिखकर देख लो—अपने दर्द के सिम्टम्ज़ ठीक २ भेज दो—कि सवेरे अधिक दर्द होता है एटसेट्रा। डीटेल्स और अपने ऐक्टिव हैबिट्स के बारे में भी—स्टेचर, कलर एटसेट्रा । वहाँ से किसी अच्छे हो० पैथ से दवा कन्सल्ट करके तुम्हारे मित्र वहाँ से दवा भेजवा सकते हैं—कबसे काँटे की ग्रोथ हुई है—यह भी लिखना जरूरी है—इसके बाद डा० ने कहा कि देखना जरूरी है तो एक दिन के लिए फ़्लाई करके हो आना ।

अकादमी के अवार्ड के लिए 'भूले बिसरे चित्र', 'झूठा सच', 'बूँद और समुद्र', 'शतरंज के मोहरे' (नागर), 'अजय की डायरी' (डा० देवराज), 'बंद अँधेरे कमरे' (मोहन राकेश) 'आत्मनेपद' ? (वात्स्यायन), 'मानव मूल्य' (भारती) इतने नाम तो सामने आते हैं—उग्र जी की आत्मकथा मैंने भी पढ़ी है—एक तरह से अच्छी और ज़ोरदार भी है—पर करुण होने पर भी उसकी स्पिरिट में एक सस्ते विद्रोह की भावना खटकती है—पता नहीं तुम इससे सहमत हो या नहीं—मेरी समझ में तो अवार्ड डिज़र्व नहीं करती—हाँ—यू० पी० सरकार या एजूकेशन मिनिस्ट्री के प्राइज़ेज़ के योग्य ठीक है ।

मेरे पास तो अकादमी का पत्र नहीं आया है—मैं परामर्शदाता भी अब नहीं हूँ । शायद सी० बी० राव के पास गया हो—तुम सपरिवार वहाँ प्रसन्न होगे—अल्मोड़े में बड़ा जी ऊबता है । काम भी नहीं होता—घर में बड़ी भीड़ है ।

तेजी जी और अमित को बहुत प्यार देना । अपने स्वास्थ्य के बारे में लिखो—

बहुत प्यार—　　　　　　साइंदा

६३

रानीधारा, अलमोड़ा
२०-६-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र दिल्ली से कल मिला, कुशल समाचार मिले—वहाँ तुम्हें बहुत ही गर्मी लग रही होगी। तुम्हारे पिछले पत्र का उत्तर दे चुका हूँ—पाँव के काँटे के बारे में भी अपनी राय लिख चुका हूँ और सा० अकादमी के अगले पुरस्कार के लिए पुस्तकों की प्रस्तावित सूची भी पिछले पत्र में भेज चुका हूँ। 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के लेख के बारे में भी अपनी प्रतिक्रिया उस पत्र में दे चुका हूँ—उसकी कटिंग प्रयाग से भेज दूँगा।

हम लोग २७ ता० को सवेरे यहाँ से चलकर २८ ता० प्रयाग पहुँचेंगे। अभी पानी तो वहाँ भी नहीं बरसा है। पर तब तक संभवतः बरस जाय। यहाँ कोई काम नहीं हो सकता, बहुत लोग हैं—६-७ बच्चे ही हैं। डा० देवराज की 'अजय की डायरी' और 'उर्वशी ने कहा,' दोनों अच्छी पुस्तकें हैं—उनका (उनके?) पहिले उपन्यास 'पथ की खोज', 'भीतर बाहर' भी अच्छे हैं—पर कविता-संग्रह पहिले मामूली ही हैं—तुम्हें 'अमरीकी युवती' पसंद आई, यह स्वाभाविक तो है पर अच्छी बात नहीं। वैसे बहुत अच्छी रचना तो 'उर्वशी ने कहा' में कोई भी नहीं, पर हाँ, उसमें काव्यबोध अवश्य है पहिले संग्रहों की तुलना में। 'अजय की डायरी', विचारोत्तेजक है, बचकानी भी।—'भारती' के लिए प्रयाग से भेजने का प्रयत्न करूँगा—टैगोर अंक के लिए भेजना चाहता था, चूक गया।

बंटी जी की नैनीताल में अच्छी ग्रोथ हो रही है, यह जानकर प्रसन्नता हुई। वह संभवतः अधिक अध्ययनशील और गंभीर पीछे होगा। श्री तेजी जी का स्वास्थ्य वहाँ पहुँचने पर ठीक ही होगा, उनसे

मेरा बहुत स्नेहपूर्वक नमस्ते कह देना—और अमित को भी प्यार दे देना—तुम्हारे 'प्रस्तर शिल्प' पर अजित का लेख नहीं देखने को मिला—अपने पाँव की दवा करो—दर्द और फ़िज़िकल दर्द के रिलेशन में मेंटल कांडीशनिंग स्वस्थ चीज़ नहीं है—चटपट दवा करवा लो—होमियोपैथ से कल ही वहाँ मिल के पूछो—पत्रोत्तर अब प्रयाग के पते पर—

बहुत प्यार—
साईंदा

पु०—बच्चन, तेजी जी को कष्ट तो होगा, पर कांता के लिए कुछ अवश्य करवा देना। २००-२५० का ही काम सही—ए० आई० आर० में आगे अब कोई आशा नहीं—डी० जी० ने संकेत किया है—अवश्य उसकी रक्षा करो—

सु०

६४

रानीधारा
अल्मोड़ा
२४-६-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र कल मिला—बहुत धन्यवाद। श्री बाबा जी तथा पोद्दार जी के आशीर्वाद पाकर प्रसन्नता हुई: उन लोगों की अमूल्य कृपा है।

'खादी के फूल' को यथावत् छपने दो। मैं भी चाहता हूँ कि यह सम्मिलित नामों में ही छपे और संपूर्ण पुस्तक की रायलटी यथावत् तुम्हीं को मिले—वह तो केवल मेरे स्नेह का प्रतीक है। उसमें उदारता

का प्रश्न ही नहीं आता। अब उसमें कभी किसी प्रकार का बदलाव करना ठीक नहीं प्रतीत होता।

मेरा पिछला पत्र मिल गया होगा। मैं भी २६ ता० को प्रयाग पहुँच जाऊँगा—यहाँ से २७ को चलूँगा—अब तुम प्रयाग ही के पते पर उत्तर देना। अब तो दिल्ली में भी पानी बरस गया है—प्रयाग लखनऊ में भी—मेरे चलने तक तो लू का पता भी नहीं रहेगा।

आशा है तुम सपरिवार खूब प्रसन्न हो। श्री तेजी जी को मेरी ओर से बहुत २ याद कर देना और अमित को प्यार देना—

और क्या लिखूँ —

बहुत प्यार—
तुम्हारा
साइंदा

६५

इलाहाबाद
७-७-(६१)

प्रिय श्री बच्चन,

इधर कभी से तुम्हारा पत्र नहीं मिला। मेरे पिछले पत्र मिल गए होंगे। तुम सपरिवार सकुशल तो हो? पत्र न आने से चिंतित हूँ। नवीन समाचार भी लिखो। यहाँ अबके पानी का अभाव होने से बड़ी गर्मी है। तेजी जी से मेरा सस्नेह नमस्ते और अमित से प्यार कहना। तुम कैसे हो—पाँव का क्या हाल है, लिखना। शीघ्र पत्र देना। हम लोग ठीक हैं। शांता तुम दोनों को बहुत नमस्ते कहती है।

शेष फिर,

प्यार—
साइंदा

६६

प्रयाग
१६-७-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिला—मेरे परिचय के रूप में जो कुछ तुमने लिखा है वह आवश्यकता से अधिक सुंदर है—उसमें कोई परिवर्तन मुझे दरकार नहीं—वैसा ही दे दो।

(१) सा० अकादमी को मेरी दो कविताएँ '५८—'५९ की चुनकर दे देना—शायद तुम्हीं संपादन कर रहे हो। भारत भूषण जी का पत्र आया था। अवश्य—धन्यवाद।

(२) अजित-अमित की जन्मपत्रियाँ इसी सप्ताह अवश्य भेज रहा हूँ—तेजी जी से मेरी ओर से विलंब के लिए क्षमा माँग देना। पहाड़ जाने से देर हो गई—फिर ध्यान से उतर गया।

(३) तुम्हारी पुस्तक शायद शाम तक या कल तक मिले—भूमिका अवश्य पढ़ूँगा। दिनकर जी की 'उर्वशी' बड़ी सजधज से निकली है—पढ़ रहा हूँ—बहुत अच्छी लग रही है।

(४) ओमप्रकाश जी के फ़ोन तथा पत्र से सूचना मिली कि शायद मुझे अगस्त में मास्को जाना पड़े—गया तो १०-१५ दिन लग ही जाएँगे। बाहर भी योरोप वग़ैरह संभव हुआ तो हो आऊँगा। अपना मत लिखना। उसके लिए क्या २ तैयारी करनी होगी। मैं तो गाँव वाला ठहरा। लिखना।

(५) अपने पाँव का इलाज अवश्य करवा लो। तुम्हारे साथ विदेश जाने को मिलता तो बड़ा अच्छा होता।

(६) अजित का लिखा लेख कहीं देखने को नहीं मिला तुम्हारे प्रस्तर शिल्प पर।

आशा है तुम सपरिवार प्रसन्न हो। श्री तेजी जी को मेरा बहुत स्नेहपूर्वक नमस्कार कहना। श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार जी का पत्र

आया था । बाबा जी के आशीर्वाद भी । मेरे पत्र के उत्तर में ।

अमित को प्यार देना—

शेष फिर—

बहुत प्यार—

साईंदा

६७

इलाहाबाद

१६-३-(६१)

प्रिय बच्चन,

पत्रवाहक गिरीश मेरा भतीजा है । इसने प्रयाग विश्वविद्यालय से फ़िज़िक्स (भौतिकी) में प्रथम श्रेणी में एम० एस-सी० किया है ; थर्ड पोज़ीशन लाया है—थ्रू आउट टाप पर रहा है । वहाँ डा० मजूमदार के अंडर रिसर्च करने जा रहा है । २-३ दिन दिल्ली रहेगा—चाहे तुम्हारे यहाँ चाहे डा० नगेन्द्र के यहाँ जहाँ इसे सुविधा होगी रहेगा । डा० नगेन्द्र ने ही इसे बुलाया है—डा० मजूमदार से उसीने इसके बारे में कहकर इसे उनके अंडर रिसर्च करने की स्वीकृति ली है । अतः तुम या तेजी इसे डा० नगेन्द्र के विश्वविद्यालय को जाने वाली बस आदि का नंबर और मार्ग बतला देना—पहुँचते ही तुम्हारे ही यहाँ ठहरेगा, इसीलिए आज तार से सूचना दे रहा हूँ । बच्चा है, तेजी जी से कहकर इसे डा० नगेन्द्र से मिलने की सुविधा का प्रबंध करवा देना—और डा० नगेन्द्र के यहाँ इसे सुविधा न हो तो अपने ही पास रख लेना—फिर यह प्रयाग लौट आएगा और वहाँ होस्टल में ऐडमिशन मिल जाने के बाद वहीं छात्रावास में रहेगा । होशियार लड़का है, अपना प्रबंध कर लेगा । इसके लिए छात्रवृत्ति का

प्रबंध भी डा० नगेन्द्र कर देंगे। मैं श्री शारदा जी और कपिला जी को भी पत्र लिख रहा हूँ। शेष ठीक। आशा है तुम कष्ट नहीं मानोगे।

प्यार—

तुम्हारा
साईंदा

प्रिय तेजी जी,

मेरा भतीजा गिरीश २-३ दिन के लिए आपको कष्ट देगा—आप इसका ख्याल कर दें। कल ही डा० नगेन्द्र के पत्र से पता चला कि डा० मजूमदार इसे अपने अंडर ले लेंगे। सीधा लड़का है, आपको कोई कष्ट नहीं देगा।

शेष बच्चन के पत्र में—

आपका
साईंदा

६८

१८/७ बी०, स्ट्रेनली रोड,
इलाहाबाद
२३-७-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिला—आशा है चि० गिरीश का कार्य हो गया है और वह अब प्रयाग आने वाला होगा। दिनकर की 'उर्वशी' अपने ढंग की बहुत अच्छी बन पड़ी है—दिनकर में कविता तो है ही—और शास्त्रीय पद्धति से विचारों का भी क्रमबद्ध उद्घाटन उसे करना आता है—वह उर्वशी में भी है—सेक्स-रेलिजन-लव, स्पिरिट आदि की समस्याओं पर प्रकाश संयत रूप से डालने की चेष्टा की है। क्षेत्र अलबत्ता

सीमित है पर संयोजन अच्छा हुआ है। तुम्हारी बहुत बातों से मैं सहमत हूँ।

तुमने 'खादी के फूल' के लिए जो पुस्तक सूची भेजी है वह ठीक है। मेरा पिछला पत्र मिल गया होगा जिसमें मैंने मास्को जाने की बात लिखी थी—उसके बाद श्री पंडित जी का स्टेटमेंट पत्रों में देखा—पता नहीं अब क्या होगा।

राष्ट्रपति अब अच्छे हैं—आज के पत्र में यह समाचार पढ़कर शांति मिली। आज मैं लीडर प्रेस जाने वाला हूँ—अमित-अजित की कुंडलियाँ भी लेता आऊँगा—शुक्ल जी ने बना ली होंगी—उन्हें पत्र से और फ़ोन से भी याद दिला चुका हूँ। तेजी जी प्रसन्न होंगी—उन्हें मेरी ओर से बहुत २ याद कर देना—प्यार भी देना—अमित को भी। यहाँ गर्मी बहुत है। पानी एक सप्ताह से नहीं बरसा है। नवीन समाचार तो विशेष नहीं। श्री वात्स्यायन जी आए थे। कहते थे अभी तो अमेरिका जा रहा हूँ, लौटने पर कुरुक्षेत्र वि० वि० में हिंदी विभाग के अध्यक्ष का पद सँभालूँगा।

अपने समाचार तुम्हीं लिखना—पाँव कैसा है ? मैं तो प्रायः ठीक ही हूँ।

शांता तुम्हें और तेजी जी को स्नेहपूर्वक नमस्कार कह रही है—यहीं खड़ी है। युनिवर्सिटी जाने की तैयारी में मुझे चाभी देने आई है।

सस्मिता ने यहाँ बी० ए० ज्वाइन कर लिया है—कल सिविल लाइन्ज़ में मिले थे—

शेष फिर—
मेरा बहुत २ प्यार—
साईंदा

६९

१८/७ बी, स्टेनली रोड़
इलाहाबाद
२७-७-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र और अजित का लेख मिल गया—अजित ने बहुत अच्छा लिखा है—छपा भी है ख़ूब सुरुचिपूर्ण ढंग से। गिरीश कल यहाँ पहुँच गया है, उसके लिए तुम्हें और तेजी जी को बहुत परेशानी उठानी पड़ी, बहुत कृतज्ञ हूँ। उसका ऐडमिशन हौस्टल में भी हो गया—२८ को यहाँ से चलकर २९ को वह सीधा अपने हौस्टल में चला जाएगा। कभी २ तुमसे मिलता रहेगा। क्योंकि वहाँ तुम्हीं उसके अभिभावक हुए।

तेजी जी तो हमेशा से ही बड़ी स्वीट हैं—मेरे साथ विदेश चलें तो भला मुझे क्या आपत्ति हो सकती है—मुझे तो बड़ी सुविधा हो जाएगी। मैं तो गाँव वाला हूँ—केम्ब्रिज से डाक्टरेट तो ली नहीं है। अतः तुम कह देना मैं अपने पिछले वादे को पूरा करने के लिए हमेशा तैयार हूँ। लेकिन अभी तो मुझे ही सोवियत सरकार का निमंत्रण नहीं मिला—इधर प्रधान मंत्री जी का भी स्टेटमेंट पत्रों में इस तरह विदेश जाने के लिए प्रतिकूल निकला था। पता नहीं, भारत सरकार की आज्ञा तो रूस सरकार ही लेगी। ओंप्रकाश जी ने भी इधर कुछ आगे की प्रगति के बारे में नहीं लिखा है।

गिरीश को दिल्ली बहुत पसंद आई। तुम्हारी और तेजी जी की बहुत प्रशंसा करता है। उसके पिता लच्छी सेठ तुम्हारे साथ थे यह जानकर प्रसन्नता हुई। गिरीश बड़ा अच्छा लड़का है, घर का नाम इसका गिरीन्द्र है। २-१ साल दिल्ली में रिसर्च करके फ़ारेन स्कालरशिप लेकर विदेश भी जाना चाहता है। युवकों में ऐमबिशन अच्छा होता है।

यहाँ आजकल ७-८ दिन से पानी न बरसने से इतनी कड़ी गर्मी पड़ रही है कि सिर में चक्कर आने लगता है। गिरीश कहता था कि तुम्हारे पाँव का एक्स-रे लिया गया है, क्या फल रहा ? आशा है तुम सब लोग वहाँ बहुत २ प्रसन्न हो।

हम लोग ठीक ही हैं। शांता तुम्हें और तेजी जी को स्नेहपूर्वक नमस्कार कहती है।

शेष बातें पिछले पत्र में लिख ही चुका हूँ। आजकल यहाँ 'उर्वशी' की नव साहित्यिकों में बड़ी चर्चा है—अधिकतर उसके विरोध ही में। मैंने तो दिनकर को अपनी सम्मति भेज दी है और उसे बहुत २ बधाई दी है।

'शिल्प और दर्शन' भेजवा रहा हूँ। अमित-अजित की कुंडलियाँ सोमवार को भेज सकूँगा। कल लीडर प्रेस गया था, शुक्ल जी ने प्रायः तैयार कर ली हैं।

शेष फिर
बहुत प्यार—
साईंदा

७०

इलाहाबाद
१-८-(६१)

प्रिय बच्चन,

चि० अमित-अजित की कुंडलियाँ भेज रहा हूँ—बहुत अच्छी हैं—तेजी जी को बहुत २ बधाई देना। अन्त में संक्षेप में विचार भी दे दिया है। शेष मेरे पिछले पत्र में—चि० गिरीश वहाँ हौस्टल में पहुँच गया होगा—वह हौस्टल बदलना चाहे तो उसे शायद १००-१५० और रुपयों की आवश्यकता पड़ेगी—तुम दोगे तो मुझे सूचना देना।

और समाचार सामान्य—कल गुप्त जी यहीं थे। अब चिरगाँव होते हुए प्रथम सप्ताह के अंत तक दिल्ली पहुँचेंगे। मैं इधर ४-६ दिन बीमार रहा—बुख़ार—पेट के कारण। अब प्रायः ठीक हूँ—तुम्हें, तेजी जी और अमित को बहुत प्यार— अमित की २५ वें में वायज बतलाई है—

बहुत प्यार—
साईंदा

७१

इलाहाबाद
५-८-(६१)

प्रिय तेजी जी,

आशा है, खूब प्रसन्न हैं। बच्चों की कुंडली भेज चुका हूँ, आशा है मिल गई हैं। आपका स्वास्थ्य अब ठीक रहता होगा। आपको समझने में कठिनाई न हो इसलिए अच्छे अक्षर बनाने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

तेजी जी, यह पत्र कांता के बारे में लिख रहा हूँ। वह अब इसलिए परेशान है कि भारती, ६२ के बाद उसे तलाक़ देकर स्वतंत्र हो जाएँगे। उसने यहाँ आने को लिखा है। यहाँ आए, पर उससे क्या लाभ होगा? अतः आपके पास आए तो आप ख़ूब स्पष्ट शब्दों में उसे विस्तार से समझा दें कि अब भारती का मोह छोड़कर उसे अपने भविष्य के लिए नई नींव डालनी चाहिए। और स्वतंत्र रूप से—चाहे विवाहित या अविवाहित—जीवन व्यतीत करने की बात सोचनी चाहिए। और यह कि भारती के साथ रहने में अब उसके लिए सुख, सम्मान, संपद, स्नेह आदि कुछ भी नहीं है—उसे इसे अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

और क्या लिखूं? आपको कष्ट तो होगा। पर उसे समझा अवश्य

दें—बच्चन से मेरी ओर से कह दें। मैं ठीक ही हूँ। आप सुना मेरे साथ विदेश जाने को तैयार हैं। इससे खुशी की बात क्या हो सकती है? अवश्य चलें—एक महीने के लिए बच्चन का धोखा छोड़िए! शांता अच्छी है—आपको नमस्कार भेजती है। और नवीन समाचार सामान्य हैं—आपको और बच्चन को बहुत २ प्यार—आपके हिस्से में तो बहुत अधिक है ही—

शेष फिर—

आपका

साइंदा

७२

इलाहाबाद

१२-८-(६१)

प्रिय बच्चन,

कभी से तुम्हारा पत्र न मिलने से चिन्तित हूँ—तुम अब अड़ी (बड़ी?) लंबी चुप्पी साधने लगे हो—क्या समाधिस्थ रहने का अभ्यास कर रहे हो?

बच्चों के हैरोस्कोप्स रजिस्टर्ड बुकपोस्ट से भेजे थे—उनकी पहुँच नहीं दी—एक पत्र तेजी जी को—दो पत्र तुम्हें दिए उनका उत्तर नहीं दिया—ये कैसी बातें सीख रहे हो!

संभव है कार्यव्यस्त हो! स्वास्थ्य तो सबका अच्छा है? तुम्हें फुर्सत न हो तो तेजी जी से दो पंक्तियाँ लिखने को कह दो—मेरा स्वास्थ्य भी इधर सामान्य ही रहा। नवीन समाचार लिखना—पत्र बहुत शीघ्र दो—

प्यार—

साइंदा

७३

इलाहाबाद
२१-८-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिल गया था। तेजी जी का भी—जिसका उत्तर मैं फिर दूंगा। इधर मेरा स्वास्थ्य बहुत ख़राब रहा। स्टूल्स से ब्लड पास करने लगा। अब तो रुक गया है पर बहुत ब्लड निकला। पाव भर तो पहिली बार था। डाक्टर तो कहते हैं पाइल्स के कारण हुआ, क्योंकि ब्लड बिल्कुल ही फ्रेश था पर उससे कमज़ोरी इतनी हो गई है कि दिन भर लेटा रहता हूँ। पढ़ने लिखने में सिर घूमने लगता है। तुम्हारी भी तबियत ठीक नहीं, जानकर चिन्ता हुई। इनफ़रा-रेड का लैम्प खरीद लेना ही अच्छा है। घर ही में सेंक लिया करो। मैंने तुम्हारे बारे में यहाँ पूछा था। डा० एस० के० मुकर्जी का भी कहना है कि होमियोपैथी पाँवों के काँटों के लिए अच्छी रहेगी। उन्होंने वहाँ के एक प्रसिद्ध होमियोपैथ का पता भी दिया है—डा० डी० जी० गुहा—९०/१७ केनाट सर्कस, नई दिल्ली—उनका फ़ोन न० है—४२०८८ बस इन्हें फ़ोन पर ज़रूर कानटैक्ट कर लो—वहाँ के बड़े होशियार डाक्टरों में हैं। डबल एट भर तुम्हें याद रखना पड़ेगा—४२० तुम खुद ही हुए। अतः फ़ोन करने में दिक्कत नहीं होनी चाहिए। तुम्हारी मलाई डाक्टरों ने बंद करवा दी, तेजी जी के पत्र से ज्ञात हुआ। मेरी हार्दिक संवेदना स्वीकार करो। हाँला, अब राजधानी में मलाई लोगों को मिला करेगी। इसके लाभ भी हैं। वैसे तो मैं प्रसन्न होता, पर मेरी भी चाय डाक्टरों ने बंद कर दी है—अतः उसकी कमी बहुत खलती है—पूछ देखूंगा कि चाय के बदले मलाई का उपयोग कर सकता हूँ कि नहीं। बच्चों की कुंडली न दिखाना ठीक ही है। सितारे तो अदृष्ट हैं—पर यत्नशील तो सदैव ही रहना चाहिए—जो बिना कुंडली

पर महत्व दिए भी आदमी रह सकता है। श्री शुक्ल जी का शुल्क उन्हें मिल जाएगा। तुम्हारे खाते में डाल दूंगा।

और फिर लिखूंगा। अभी काफ़ी कमजोरी है।

डा० गुहा की ज़रूर कान्सल्ट करना। शेष तुम्हें तेजी जी और अमित को बहुत प्यार—तेजी जी को बहुत धन्यवाद दे देना और बहुत याद कर देना।

सप्रेम—
साइंदा

७४

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
५-९-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिल गया था। मैं शीघ्र उत्तर न दे सका। अब मैं पहिले से बहुत अच्छा हूँ। लेकिन स्वास्थ्य अभी जैसा था वैसा नहीं हो सका—धीरे २ हो जाएगा। तुम्हें योग के आसनों से लाभ हो रहा है यह जानकर प्रसन्नता हुई। अब तुम धीरे २ पूरे योगी हो जाने वाले हो—हम सब लोग शिष्य मंडली में भर्ती हो कर गुरु जी की जय बोला करेंगे। अभी गिरीश के पत्र से ज्ञात हुआ कि उसने तुमसे रुपए लिए हैं। मैं यथा समय भेज दूंगा। जब मैं दिल्ली आऊँगा श्री धीरेन्द्र ब्रह्मचारी जी से मुझे भी मिला देना। मैं आसन वग़ैरह तो शायद अब न कर सकूंगा, पर उनसे मिलूंगा। तुम्हें इस बीच और भी फ़ायदा हुआ हो तो लिखना। तुम्हारा वज़न अब कितना घट गया है? और पाँव की हड्डी का क्या हाल है?

तुम्हारी 'प्रणय पत्रिका' एक मित्र ले गए हैं। शीघ्र ही लौटा

देने वाले हैं—उसके बाद ही मैं भी देखूंगा और भूमिका पर अपनी सम्मति लिखूंगा।

श्री तेजी जी से मेरा बहुत २ नमस्ते कह देना। और अमित को भी बहुत प्यार दे देना। नरेन्द्र के कभी से समाचार नहीं मिले। क्या तुमसे भेंट होती है? इधर क्या लिख पढ़ रहे हो? यहाँ तो बहुत गर्मी है। शायद सितंबर बीतने पर मौसम ठीक हो। अक्टूबर में एक बार तुमसे मिलने दिल्ली आना चाहता हूँ। दुर्गा पूजा की छुट्टी में—शायद तब शांता भी इला को देखने आना चाहे—बहरहाल ३-४ दिन के लिए आने से भेंट तो हो ही जाएगी—जलवायु का भी परिवर्तन हो जाएगा। तुम्हें क्या यह कार्यक्रम सूट करेगा? और तो कोई नहीं आ रहा है उस बीच?

अंतर्राष्ट्रीय स्थिति आजकल बड़ी शंकापूर्ण है—कब क्या हो जाए। यहाँ रूस से चेलिशेव आए थे, मुझे एक टैगोर मेडल भी दे गए। कहते थे एप्रिल में आपको मास्को बुलाएँगे—देखा जाएगा।

तुम अपने बारे में ढेर से समाचार देना—तेजी जी का स्वास्थ्य कैसा है यह भी लिखना। और भी कोई नवीन बात हो तो।

शांता तुम दोनों को बहुत स्नेहपूर्वक नमस्कार भेजती है।

शेष फिर—

बहुत प्यार—
साईंदा

७५

इलाहाबाद
३०-९-(६१)

प्रिय बच्चन,

कल ही मेरा तापमान नार्मल आया—ब्रांको निमोनिया से ८

रोज़ तक पड़ा रहा। अब ठीक हूँ—दुर्बल हूँ।

५ ता० की शाम को दिल्ली पहुँच रहा हूँ—मेल से—मुझे लेने स्टेशन पर किसी को भेज देना—तुम न आ सको तो अजित को तब भी भेज देना। मुझे संभवत: १० को रूस जाना पड़े—वहाँ से लंदन और योरोप भी हो आऊँगा—जल्दी ही लौट आऊँगा।

वहाँ संभवत: मुझे कुछ सामान लेना पड़े—तुम तैयार रहना—रुपए तुम्हें चेक से दूंगा। पुराने भी। २ जोड़ी गरम मोज़े—दो नाइट सूट (गरम हो सके तो बेहतर) और भी कई चीज़ें होंगी—कुछ तुमसे पूछ लूंगा। ओंप्रकाश भी मेरे साथ रहेंगे। इससे कोई कष्ट नहीं रहेगा।

आशा है तुम सपरिवार सानंद हो। अमित का आपरेशन संभवत: पहिले ही सप्ताह में होगा। व्यस्त रहोगे। और क्या लिखूं? मिलने पर सब बातें कहूँगा। ४-५ रोज़ वहीं हूँगा। हाँ, बिस्तरा नहीं लाऊँगा। तुम प्रबंध कर रखना। तेजी जी को बहुत नमस्ते कहना—अमित को प्यार—

सप्रेम—

साइंदा

७६

फ्रेंकफ़र्ट, (पश्चिमी जर्मनी)
२०-१०-'६१

प्रिय बच्चन,

मैं तुम्हें पहिले पत्र नहीं दे सका, बहुत घूमता रहा। अब आने पर ही बताऊँगा। आजकल फ्रेंकफ़र्ट में हूँ—विशाल नगर है। बुकफ़ेयर में कल गया था, ३० देशों के प्रकाशक आए हैं—७०,००० पुस्तकें हैं—सैकड़ों प्रकाशक हैं। यहाँ प्रेमी मित्र भी बन गए हैं। २२

ता० को फ्रांस, फिर वहाँ से २६-२८ तक लंदन जाने का विचार है। १०।११ तक दिल्ली पहुँच जाऊँगा—तुम्हें केबल करूँगा।

आशा है तुम सपरिवार प्रसन्न हो। अमित अब चंगा होगा।

नरेंद्र तथा टंडन जी को मेरा नमस्कार कहना।

तुम्हें बहुत प्यार—

सुमित्रानंदन पंत

७७

लंदन
३१-१०-(६१)

प्रिय बच्चन,

तुम्हें मेरा पिछला पत्र मिला होगा, और तुम सपरिवार सानंद होगे। यहाँ लंदन में बड़ी सर्दी है, मुझे तो ज़ुकाम भी हो गया है। २ ता० नवंबर को हम यहाँ से मास्को पहुँचेंगे। वहाँ से ८ ता० नवंबर को दिल्ली। १० ता० की प्रातः मैं प्रयाग को रवाना हूँगा। ११ ता० को मुझे आधे घंटे का एक छंद वाच्य आकाशवाणी को देना है, १८ को वह प्रसारित होगा। अभी स्क्रिप्ट लिखा नहीं गया है। दिल्ली से जाने के पहिले मुझे लखनऊ के एस० डी० का एक रिमाइंडर भी मिल गया था। तुम ८ ता० को तेजी के साथ एयर पोर्ट में अवश्य रहना, नहीं तो वहाँ कस्टम वाले शायद तंग करें। मैं तुम्हें मास्को से केबल द्वारा समय की सूचना दूंगा।

तुम एक पोस्टकार्ड मेरी भतीजी को लिख देना कि ६ ता० नवंबर को मुझे तुम्हारे यहाँ अवश्य मिले—शाम को ५॥ बजे। उसका पता है—कु० हेमा पंत, २८० (डबल स्टोरी फ़्लैट्स) न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली—डबल स्टोरी अवश्य लिखना पड़ता है—सिंगिल स्टोरी के भी यही नंबर हैं। यहाँ से जब से चला हूँ १६ से १८ घंटे प्रतिदिन

घूमना-फिरना पड़ा है—काफ़ी थक गया हूँ—अभी मास्को में भी काफ़ी कसरत करनी पड़ेगी—और बातें तो मिलने पर ही कहूँगा।

तेजी जी को बहुत याद कर देना। तुम्हें तेजी जी और अमित को प्यार—

शेष मास्को से—

सप्रेम—
साइंदा

७८

लंदन एअर पोर्ट
२-११-(६१)

प्रिय बच्चन,

इस समय १०॥ बजा है हम १॥ बजे के एअरोफ़्लोट में मास्को को रवाना होंगे—६ बजे तक वहाँ पहुँचेंगे। ८ ता० नवंबर को मैं दिल्ली पहुँच जाऊँगा। तुम पालम पर आ जाना और दो-चार सौ रुपए अपने पास रख लेना—शायद ड्यूटी वग़ैरह का झगड़ा उठाएँ। ओंप्रकाश जी १० ता० मास्को से आएँगे—मैं ८ ही को अकेला आ रहा हूँ।

तुम्हें केबल द्वारा मास्को से वक्त की सूचना दूँगा।

शेष फिर—

सप्रेम
साइंदा

७९

इलाहाबाद
१३-११-(६१)

प्रिय बच्चन,

मैं यहाँ सकुशल पहुँच गया था। इतने लोगों का आना जाना रहा कि तार करना एकदम भूल गया—बहुत २ क्षमा करना।

तुम्हारे और तेजी जी के स्नेह, सहायता और प्रयत्नों से किसी प्रकार विदेश यात्रा सकुशल समाप्त हो सकी इसके लिए तुम लोगों को धन्यवाद देना केवल औपचारिकता होगी। ऐसी सुनहली बातें मन में रखने की होती हैं। तुम लखनऊ कवि सम्मेलन में २० ता० को जा रहे हो या नहीं ? मैं विस्तार से तो फिर लिखूंगा—स्क्रिप्ट लिखने में व्यस्त हूँ। रवीन्द्र शती का कार्यक्रम कैसा हुआ लिखना—अवश्य—तुमने तो पूरा अटेंड किया होगा। चेलिशेव को तेजी जी ने सामान दे दिया होगा। उन्हें कितने पैसे मुझे देने हैं—यह भी पूछकर लिखना—चेक भेज दूंगा। शांता तुम्हें और तेजी जी को स्नेहपूर्वक नमस्ते कहती है। अब अपना वेट मत घटाने की फ़िक्र करो—मलाई खा सकते हो—सिर्फ़ जब मै वहाँ रहूँ तब खाना ठीक नहीं।

तेजी जी को बहुत २ स्नेहपूर्वक मेरा नमस्ते कहना—तुम्हें भी—अमित को प्यार देना—

सप्रेम
साईंदा

८०

इलाहाबाद
२५-११-(६१)

प्रिय बच्चन,

लखनऊ से कल ही लौटा। तुम्हारा पत्र मिल गया था।

टैगोर सेमिनार के समाचार तुम्हारे पत्र से ज्ञात हुए—चलो, ठीक है। तुम्हारी 'आधुनिक कवि' (७) की भूमिका बहुत पसंद आई। नपी तुली है। अपने बारे में लिखने में कठिनाइयों का वर्णन भी ठीक है। फिर तुम जैसे लोकप्रिय कवि का आलोचक जनता का हृदय है। सब बातें तुम्हें (तुमने ?) यथातथ्य लिखी हैं। शैली मँजी हुई है। 'एकांत संगीत' और 'प्रणयपत्रिका' के बारे में अगले पत्र में लिखूँगा।

तेजी जी से हिसाब पूछकर तुमने नहीं भेजा। चेलिशेव का कार्डिगन और स्कार्फ़ दे दिया होगा। यहाँ आजकल बड़े फ़ंक्शन्स हो रहे हैं। आने-जाने वालों की संख्या भी बहुत बढ़ गई है—अभी २ सज्जन आ कर ड्राइंगरूम में बैठे हुए हैं। माली जा रहा है, इससे जल्दी तुम्हें पत्र लिखकर भेज दे रहा हूँ।

रूस यात्रा के संस्मरण धीरे २ लिखूँगा—अभी तो व्यवस्थित भी नहीं हो पाया—व्हाइट वाश के कारण मेरी अनुपस्थिति में चीज़ें इधर-उधर हो गई हैं। धीरे २ ठीक हो जाएगा। कवि सम्मेलन में तुम्हारा अभाव बड़ा खटका। नवीन समाचार सामान्य। शांता तुम्हें और तेजी को नमस्कार कह रही है। तेजी जी को मेरा बहुत २ प्यार देना—तुम सब लोग अच्छे होगे। अमित ठीक होगा। तुमने एक चीज़ नहीं सीखी है— बच्चों को कैसे हैंडल करना चाहिए, कैसे उनमें प्रेरणा भर-कर उन्हें उठाना चाहिए। इसपर गंभीर विचार करके कुछ पुस्तकें

पेरेंट्स साइकोलोजी और एडोलेसेंस साइकोलोजी पर पढ़कर यह काम भी सीख लो।

मेरी सीख का बुरा न मानना—

बहुत २ प्यार—

साइंदा

बच्चे का बाप नहीं मित्र बनना होता है—

सु०

८१

१८/७ बी, स्टेनली रोड
इलाहाबाद
२-१२-(६१)

प्रिय बच्चन,

बहुत २ क्षमा करना—तुम्हें वर्षगाँठ के अवसर पर तार देना भूल गया—इसका कारण यह है कि यहाँ इस बीच इतने कार्यक्रमों और उत्सवों में भाग लेना पड़ा कि सुधबुध जाती रही—एक तो जनपद साहित्य सम्मेलन दूसरा कालिदास जयंती, प्रोग्रेसिव क्लब में भाषण, विश्वविद्यालय की हिंदी परिषद् का उद्घाटन, दर्शन विभाग की जिज्ञासु परिषद् का उद्घाटन आदि आदि—किससे नहीं कहा जाय।

खैर, ब्याज सहित तुम्हें नव वर्ष में प्रवेश करने के (लिए) अवसर पर अनेकानेक शुभकामनाएँ, प्यार और प्रेरणा भेजता हूँ कि नया वर्ष तुम्हारे सृजनकर्म में नवीन युग, नवीन उत्साह, नवीन वैभव लाए—और स्वास्थ्य सदैव तुम्हारा पहलवानों का-सा बना रहे—प्रत्येक डग के साथ धरती एक फुट धँसती रहे और चित्त मानसरोवर की तरह सदैव निर्मल प्रसन्न और तरंगित रहे। और जो गुप्त प्रकट मनोकामनाएँ हों सब

पूरी हों । इतनी ढेर सी शुभकामनाएँ तो तार द्वारा भेजना असंभव था। अतः अब तुम अपनी नाराज़ी वापस ले लो।

चेलिशेव की तुमने दावत की यह बड़ा अच्छा किया—मेरी ओर से की यह और भी अच्छा हुआ—बदले में मात्र १००) रु० तुम्हें देना यथोचित नहीं लगता—एक जागीर ही दिल्ली के आसपास तुम्हारे नाम करवा दे रहा हूँ—प्र० मंत्री जी से कहकर।

विदेश यात्रा पर समय आने पर अवश्य लिखूंगा। अभी तो और काम करने हैं।

बच्चों की देखरेख के संबंध में पुस्तकें पढ़ने से मेरा अभिप्राय था कि तुम इसपर विचार करो—मनीषी हो। मैं भी वहाँ आने पर अवश्य अमित से बातें करूँगा। पर वह बिलकुल ठीक लगता है—नारमल—अपने समय में क्या करना चाहिए यह भी उसे मालूम हो जाएगा—ज्योतिषाचार्य नरेन्द्र का कहना है कि सन् ६२ से उसकी चेतना जाग्रत होगी। बस अब ३-४ महीने की बात है—मार्च-एप्रिल तक अवश्य लाभ होगा। श्री तेजी जी प्रसन्न होंगी—मेरा नमस्कार कहना—कल यहाँ हमने प्रधान मंत्री जी का भाषण विश्वविद्यालय में सुना था, उनके दर्शन भी हो गए! बहुत लोग थे। शाम को विंटर स्कूल के फ़ंक्शन में नहीं जा सका—कामों में उलझ गया—भाषण का रिकार्डिंग ए० आई० आर० द्वारा सुन लिया है।

अब जनवरी ही में भेंट हो सकेगी—अभी तो शायद ८-९-१० को यहाँ नरेन्द्र और टंडन जी आने वाले हैं।

नवीन समाचार सामान्य ही हैं। शांता तुम्हें और तेजी जी को बहुत याद करती है और नमस्कार कहती है—माघ में गंगा स्नान का निमंत्रण भी भेजती है—

मैं अच्छा हूँ—नए वर्ष की फिर२ बहुत २ बधाई और प्यार लो—बहुत प्यार, जो प्रतिदिन बढ़ता रहे—

तुम्हारा
साईंदा

८२

१८/७ बी, क० गाँ० मार्ग
इलाहाबाद
११-९-६१

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिला, कुशल समाचार ज्ञात हुए। इधर यहाँ नरेन्द्र था; कल ही दिल्ली को गया। तुम्हारी जागीर का तो, भाई, दिल्ली में पूरा प्रबंध हो गया है। केवल प्र० मं० के हस्ताक्षर भर करवाने हैं—जो तेजी जी के ज़िम्मे छोड़ा है—बस दिल्ली राज्य तुम्हारा—वहाँ घर बनाने का इरादा बुरा नहीं, एक सेट मेरे लिए भी बनवाना—शेष आयु वहीं यमुना तट पर भजन-भोजन में (—भजन कम—भोजन अधिक—) व्यतीत होगी। रिटायर होने के बाद वहाँ जो भी प्रबंध करो—जैसे स्कूल खोलना—प्रकाशन गृह इत्यादि—उसमें मेरा भी साझा रखना—अभी तो अष्टग्रह योग को बीत जाने दो! —गोआ में कहीं हम हार न खा जाएं—क्या तमाशा हो रहा है! इलेक्शन भी हो पाते हैं कि नहीं, कौन जाने।

यहाँ ३-४ दिन में श्री पुराणी जी आने वाले हैं—संभवतः एक सप्ताह रहेंगे। तब कहीं कुछ करने का अवकाश मिल सकेगा। तुम्हारी 'एकांत संगीत' की भूमिका शुरू की थी—नरेन्द्र के कारण बहुत लोग आ गए—अब आज से फिर दोनों पुस्तकों का पारायण कर रहा हूँ। तुम्हारा निबंध संग्रह छपने चला गया, यह अच्छा हुआ।

नरेन्द्र ने सोवियत के बारे में मेरी एक इंटरव्यू यहाँ रिकार्ड की है—दिल्ली से ब्राडकास्ट होगी, सुनना। उसमें एक कमी रह गई है कि नरेन्द्र ने और देशों के बारे में प्रश्न नहीं पूछे हैं—सो वह एकांगी हो गई है। इधर आने जाने वालों के कारण मुसीबत है कि एक क्षण भी काम करने को—यहां तक कि पत्र लिखने को—भी नहीं मिलता—इसका मन में अवसाद रहता है। आशा है तुम्हारा और तेजी जी का

स्वास्थ्य अच्छा है—तेजी जी को बहुत २ याद कर देना। बंटी वहाँ माँ-बाप से मिलकर प्रसन्न होंगे, तेजी जी भी लाड़ले को पाकर सुखी होंगी। स्कूलों में वज़न घटना तो साधारण बात है—सब की यही शिकायत है, खाना जो बहुत सामान्य पुअर क्वालिटी का मिलता है—

अमित और बंटी को मेरा प्यार देना—

सप्रेम—

तुम्हारा ही
साईंदा

८३

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
२८-१२-६१

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे पिछले पत्र का उत्तर इसलिए नहीं दिया कि तुम्हारा कई दिन का बाहर जाने का कार्यक्रम था—इस जाड़े में तुम सकुशल लौटकर दिल्ली पहुँच गए, बधाई। साथ ही नए वर्ष की भी अनेकानेक शुभकामनाओं सहित तुमको सपरिवार बधाई। गोरखपुर में बाबा के दर्शन कर आए यह बड़ा अच्छा हुआ। मैं भी दो एक दिन में पोद्दार जी को अपने लौट आने के समाचार भेज दूंगा।

यहाँ इन दिनों श्री पुराणी जी रहे—४-५ दिन अनेकों भाषण उनके हुए और उसी में व्यस्त रहा—अब वह कलकत्ता चले गए हैं। सर्दी तो यहाँ इतनी है कि बस काटो तो खून नहीं ! नाड़ियाँ जम गई हैं—बड़ी मुश्किल से हीटर में हाथ गरम करके तुम्हें पत्र लिख पा रहा हूँ। मस्तिष्क में तो एकदम बरफ़ जम गया है—तुम होते तो मालिश करके पिघला देते।

'वाणांबरी' अरुण जी की मिल गई है—तुम भी तबतक पारायण कर रखना—और अपनी सम्मति देना—इधर बाहरी कामों में और मेहमानों में ही सब समय निकल गया—जाड़े के कारण आलस या जाड्य भी बहुत रहा इसलिए कोई काम नहीं हो सका। गोआ की फ़तह के लिए पंडित जी की मिनिस्ट्री में होने के कारण तुम भी आंशिक बधाई के पात्र हो। लगता है पत्रा देखकर विजय तथा धावे के लिए समय चुना था।

तुम्हारी सब भूमिकाएँ पढ़ गया हूँ—सब अपनी २ विशेषताएं लिए हैं। भूमिका लिखने की कला तुम्हारी सध गई है—संभवतः पी-एच० डी० लेने के लिए बहुत-सा आलोचनात्मक विदेशी साहित्य का अध्ययन करने में दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से देखने का हुनर आ गया है। मार्मिक भी है। श्री तेजी जी का स्वास्थ्य इस सर्दी में भी ठीक ही चल रहा यह जानकर बड़ा अच्छा लगा। दवा बराबर सेवन करनी चाहिए। अमित और बंटी भी प्रसन्न होंगे। और बंटी के आने से पिश्ती भी बहुत खुश होगी। आज गोपेश जी के यहाँ मुझे, श्री श्रीमती राव और महादेवी जी को रात्रि के भोजन के लिए जाना है। गोपेश २६ को यहाँ से चलकर दो-एक दिन दिल्ली रहकर रूस वापस जा रहे हैं—दिल्ली में तुमसे भेंट होगी। यहाँ इस बीच मदनमोहन मालवीय जी की शती का उत्सव बड़े ज़ोर से मनाया जा रहा है। कल शायद प्र० मंत्री जी भी भाषण देंगे। इधर मुझे भी कई जगह भाषण देने जाना पड़ा है—३१ को श्री राम-कृष्ण मिशन में भी श्री शारदा माता जी की जयंती के अवसर पर बोलने जाना है। क्या किया जाए—लोगों का अनुरोध टालना कठिन हो जाता है। अपना पढ़ना लिखना एकदम बंद है—लगता है अष्टग्रहों का फेर है—तुम्हारी राशि वाले तो प्रसन्न तथा लाभान्वित ही रहेंगे—पंडित जी के लिए भी बहुत सिद्धिकर है—पहिली विजय गोआ की ही शुरू हो गई है—१४ वर्ष बाद! १४ वर्ष हमारे देश के लिए विशेष पौराणिक महत्व रखते हैं।

आशा है तुम बाबा से मिलने के बाद खूब प्रसन्न हो—

बहुत प्यार—
साईंदा

८४

१८।७ बी, के० जी० मार्ग
इलाहाबाद
५ जनवरी, ६२

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिल गया था, इधर दफ़्तर का काम आ गया था, इसलिए उत्तर तुरंत नहीं दे सका।

'वाणांबरी' तुम्हें पसंद आई यह अच्छा हुआ। मैं तो अभी पढ़ नहीं पाया—वहाँ आने तक अवश्य पढ़ लूंगा—मेरे यहाँ तो आने जाने वाले इतने लगे रहते हैं कि मुझे अपने काम के लिए समय ही नहीं मिल पाता। अब मिलना कम कर देना चाहता हूँ।

अभी २/३ दिन हुए डा० सामंत ने रात्रि भोजन को बुलाया था। श्रीमती इंदिरा गाँधी भी खाने पर थीं। रूस आदि के बारे में बातें निकल आईं। मैंने स्वभावतः तारीफ़ की। पर उन्हें वहाँ का जीवन विशेष पसंद नहीं। उन्होंने कहा, उतनी अधिक व्यवस्था से ऊब छूटती है—हमारा देश जैसा है वही अच्छा है! मैंने कहा अधिक व्यवस्था न सही, पर अव्यवस्था भी तो हितकर नहीं। पर अधिक कहना मैंने ठीक नहीं समझा। व्यर्थ था। कहने लगीं, रूस में रेस्ट हाउसेज़ क्यों हैं? इसका अर्थ है लोगों से वहाँ इतना अधिक काम लेते हैं कि उन्हें विश्राम-गृहों की आवश्यकता पड़ती है। यह उनकी अजीब व्याख्या थी। मैं कह तो सकता था कि वहाँ तो ७ घंटे का कार्य दिवस है। पर मैंने उनकी

अद्भुत व्याख्या सुनकर चुप ही रहना ठीक समझा। खैर, बातों का रुख मैंने बदलकर हलके-फुलके स्तर पर उन्हें रख दिया। २-२।। घंटा वहाँ बैठी रहीं। बिचारी थकी-सी लगती हैं—इधर चुनाव के सिलसिले में गाँवों में प्रतिदिन ३।४ मीटिंगों में बोलना पड़ता है। कुछ एनीमिक भी लगीं।

अब मैं २४ ता० तक दिल्ली पहुँचूंगा। तभी तुम लोगों से भेंट होगी।

क्या बताएँ एक मित्र कहने को तुम हो पर 'तुम दिल्ली हम आगरा' वाली कहावत है—कैसे जल्दी-जल्दी भेंट हो। तुम लोगों ने तो प्रयाग का मोह ही छोड़ दिया है। अरे, और कुछ नहीं तो संगम में आकर एक-दो डुबकी ही लगा लेते, पाप क्षय होते हैं।

यहाँ उदयशंकर आने वाले हैं। दो-एक दिन वे लोग लेंगे। पैलेस में उनके ३।४ दिन के कार्यक्रम विज्ञापित हुए हैं।

तेजी जी कैसी हैं? उनसे मेरा बहुत २ नमस्ते कहना और बच्चों को प्यार देना। यहाँ भी सर्दी काफ़ी है। शांता तुम्हें और तेजी जी को बहुत याद करती है। शायद गणतंत्र दिवस पर दिल्ली चली आए।

बहुत प्यार—

तुम्हारा
साईंदा

पु०—गिरीश को १४ (१४ जनवरी, '६२) को इंटरव्यू के लिए अपीयर होना है। १४ ता० ९ बजे प्रातः इन दी कौंसिल आफ़ साएंटिफ़िक एण्ड इंडस्ट्रियल रिसर्च बिल्डिंग, रफ़ी मार्ग, नई दिल्ली—उसे खबर भिजवा सको तो बड़ा अच्छा हो। चिट्ठी कल भेज सकूँगा।

सु०

८५

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
१७-१-६२

प्रिय बच्चन,

इधर दिनकर जी आ गए थे, सरस्वती समारोह में—कल ही गए—उन्हीं के साथ व्यस्त रहने से तुम्हें पत्र नहीं दे सका। कल रामनरेश त्रिपाठी जी भी चल बसे, गंगा जी गया था। अष्टग्रह कुछ मेरे लिए भी ठीक नहीं प्रतीत होता—हालत खस्ता ही है।

२४ ता० तुम्हारी शादी की जन्मतिथि है—मैं तो उसी शाम को वहाँ कालका से पहुँच ही रहा हूँ—तुम लोगों की खुशी में मेरी भी खुशी सदैव मिली रहती है—बहुत २ बधाई — ऐसे अनेकानेक शुभदिन देखने को मिलें—तेजी जी का प्यार मेरी ओर बढ़े, तुम्हारा उनकी ओर। 'तीसरे हाथ' की माँग तुमने की ही है। भगवान तो देर में बढ़ाते हैं—मेरा शुरू से ही बढ़ा हुआ है।

आजकल जी घबड़ाता है—पता नहीं क्यों—फ़िज़िकल सिम्टम मालूम पड़ता है। बुढ़ापा तो है ही, वैसे ही कौन तीसमार खाँ रहा हूँ। संभव है, ठीक हो जाय। तुमने तो अवश्य ही बड़े सुंदर गीत और कविताएँ लिखी होंगी—मुझे तो बाहरी व्यस्तता, भीतरी असमंजस से क़लम उठाने का ही मौक़ा नहीं मिलता। आकर अवश्य सुनूंगा—एक शादी के दिन पर भी तो लिखो—२४ को सुनाओगे।

यहाँ तो दूसरी कोल्ड वेव आ गई है—घना कुहासा छाया हुआ है। कष्ट है। तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है ? तेजी जी का तुम ठीक ही बतलाते हो—यह जानकर प्रसन्नता है।

इंदिरा जी के साथ भोजन की बात तुम्हें कैसे मालूम हुई ? कोई मैंने अभद्रता तो उनसे अपने विचार प्रकट करके नहीं की ? पर

नम्रतापूर्वक ही कहा था। अभद्रता दिखाने पर मैं विश्वास नहीं करता।

नरेंद्र क्या सपरिवार वहाँ पहुँचा है? ठीक ही होगा। उसके प्रकाशन का क्या हुआ? भई, लालक़िले से तो बचाओ—२३ को है बड़ा अच्छा हुआ। मैं २४ को वहाँ पहुँच रहा हूँ। २६ को यहाँ पहुँचना है। गिरीश का पत्र आया था, वह प्रसन्न है। उसे भी कहला देना कि मैं २४ से २८ तक दिल्ली में हूँ। हो सका तो शांता को भी लाने का यत्न करूँगा।

परेड देखने से थकान ही हाथ लगेगी—तुम ले जाओगे तो चलूँगा—मेरे कैप्टन तो तुम्हीं हो—जहाँ ले जाओगे चलूँगा।

निराला-जयंती वहाँ मनाई जा रही है यह तो बड़ा अच्छा हुआ पर तब तक वहाँ रहना तो संभव नहीं हो सकेगा। प्रयाग में भी उस दिन—बसंत पंचमी को—यहाँ बड़ा समारोह इसी उपलक्ष्य में होने की बात है—उसमें रहना अधिक ठीक होगा।

आशा है तुम्हारा पैर और कंधा अब ठीक है—

शेष फिर—

प्यार

साईंदा—

८६

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
२६-१-(६२)

प्रिय बच्चन,

मथुरा से मैं २७ ता० की रात को १२ बजे तूफ़ान से यहाँ पहुँच गया था। थकान काफ़ी रही और पेट भी ठीक नहीं रहा। कल उपवास किया, आज कुछ ठीक हूँ। सीने में थोड़ी दर्द है—संभव है ठंड खा

गया हूँ। तुमसे वहाँ नाम मात्र को भेंट हो सकी—जिन गीतों का तुमने प्रलोभन दिया था उन्हें सुना नहीं सके। जल्दी ही चला आना पड़ा। मेरे काका जी (शांता के पिता) शल्य चिकित्सा से घबड़ाते हैं। वैसे होमियोपैथी की दवा से लाभ तो दीख रहा है—पर कितने रोज़ रहेगा कौन जाने ?

तेजी जी (टच वुड) अबके अच्छी हो रही थीं—ऐसा ही स्वास्थ्य रहे, मेरी प्रार्थना है। अबके दिल्ली रहने से कोई संतोष सचमुच नहीं हुआ। नरेन्द्र से भी एक ही भेंट हो सकेगी (सकी ?)—तुम यहाँ कब तक आओगे ? अरे, थोड़ा आराम मिल जाएगा—तेजी जी तो अमित की परीक्षा तक आ नहीं पाएँगी। तुम्हीं आ जाओ।

सर्दी यहाँ काफ़ी आज है—संभवतः पहाड़ों में बरफ़ बहुत गिरी है इससे।

नवीन समाचार सामान्य—

शेष फिर—

सप्रेम—
सुमित्रानंदन पंत

८७

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
८-२-(६२)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र और तुम्हारे नाम से दिया हुआ तार मिल गया था। तुम्हें मेरा पत्र बंबई से लौटने पर ही मिल सकेगा। मैं ६ ता० को निराला जयंती के अवसर पर मन से तो बहुत आना चाहता था, पर बाहरी सीमाओं के कारण नहीं आ पा रहा हूँ। इतनी दूर आना जाना

संभव नहीं। बड़ा स्ट्रेन पड़ता है। अतः तुम क्षमा करना।

अजित-अमित की पत्री शुक्ल जी से जाँचने को कहूँगा—अभी तो वह व्यस्त हैं। वसंत के बाद खाली होंगे। मैं सोचता हूँ वह ठीक ही होंगी—नरेन्द्र ने यों ही कह दिया—न उसके पास पत्रा था, न उसने बहुत ध्यान से ही देखा—ख़ैर, शुक्ल जी फिर देख लेंगे।

तुम मेरे दो ज़रूरी काम करवा देना—एक तो ४-५ फरवरी के 'नवभारत टाइम्स' में पद्मा सुधि का एक लेख निकला है जिसकी चर्चा उसने अपने पत्र में की है—उसकी कटिंग भेजवा देना—उसमें मेरी भी निराला जी के संबंध में चर्चा है। दूसरा, अजित से कहकर मिस किचलू (हुमायूँ कबीर की मिनिस्ट्री) के लिए दो-एक बार फ़ोन करवा के मेरे टी० ए० की याद दिलवा देना। मुझसे हस्ताक्षरित रसीदें नवंबर दूसरे सप्ताह ही में मंगवा ली थीं, तबसे कोई पत्र नहीं। रूस यात्रा के संबंध में मेरा इलाहाबाद-दिल्ली का टी० ए० उन्हें भेजवाना है। धन्यवाद। आशा है तुम्हें याद रहेगी।

तुम बंबई किस लिए गए थे? कोई कवि सम्मेलन था क्या? अष्टग्रह तो यों ही बीत गए। व्यर्थ में ज्योतिषियों ने डराया। यहाँ तो बड़े २ यज्ञ हुए।

आशा है तुम सब लोग प्रसन्न हो। तेजी जी भी स्वस्थ होंगी। उनसे मेरी बहुत २ नमस्ते कहना। अजित-अमित को प्यार—अपने समाचार लिखना—वहाँ निराला जयंती उत्सव कैसा रहा—यह भी लिखना। आशा है अगला पत्र तुम्हारा नए समाचारों से भरा होगा। शेष फिर—

बहुत प्यार—
साईंदा

८८

१८/७ बी, के० जी० मार्ग,
इलाहाबाद
१४-२-(६२)

प्रिय बच्चन,

मेरा पिछला पत्र मिल गया होगा। यह पत्र श्री ए० बी० पुराणी जी के बारे में लिख रहा हूँ। वह अमरीका सांस्कृतिक प्रचार के लिए जा रहे हैं—वहाँ से उन्हें बुलाया गया है। यदि प्रो० कबीर की मिनिस्ट्री से या तुम्हारी ओर से वहाँ के दूतावासों को श्री पुराणी जी के कार्यक्रम के बारे में लिख दिया जाय तो संभवतः उन्हें वहाँ सुविधा हो सके। ऐसा श्री पुराणी जी ने ही लिखा है। वह तुम्हें भी इस बारे में लिखेंगे और अपना कार्यक्रम भी भेजेंगे।

क्या इस संबंध में कुछ किया जा सकता है ? सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए तो वह श्रेष्ठ व्यक्ति हैं ही, पता नहीं मंत्रालयों के क्या नियम इस बारे में हैं।

श्री निराला जी का समारोह सुचारु रूपेण संपन्न हुआ होगा—पत्रों में बहुत संक्षिप्त समाचार मिले। तुम विस्तार से भेजना। हो सके तो पेपर कटिंग भी वहाँ के पत्रों के। मैंने अपने पिछले पत्र में जिन दो आवश्यक कामों के लिए लिखा था उनके बारे में भी लिखना। आशा है सपरिवार सानंद हो। श्री तेजी जी से मेरी बहुत २ नमस्ते कहना।

बच्चों को और बच्चन को प्यार—

साइंदा

८६

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
२०-२-(६२)

प्रिय बच्चन,

मेरा पिछला पत्र तुम्हें मिल गया होगा। तुम एक मास का अवकाश ले रहे हो और इसी बीच हर्निया का आपरेशन करा रहे हो, विदित हुआ। मेरी शुभ कामनाएँ लो। अब तुम्हें अधिक स्ट्रेन से हमेशा बचना चाहिए, क्योंकि नहीं तो फिर से आँत के गिरने का डर बना रहता है। आपरेशन में पेट की झिल्ली को सीकर आँत को यथास्थान ले आते हैं, पर उसके लिए सदैव ही होशियार रहना पड़ता है। अतः तुम ध्यान रखना।

मिस किचलू को अब याद दिलाने की ज़रूरत नहीं, उन्होंने चेक भेजवा दिया है। हाँ, पद्मा सुधि के लेख की कटिंग अवश्य भेजवा देना। तुम्हारे 'नए-पुराने झरोखे' इधर उधर-उलटे पलटे—निराला जी, नवीन जी और कला''चाँद वाले लेख पढ़े—बहुत सुंदर हैं। पूरी पुस्तक पढ़ूँगा—बहुत पसंद की जाएगी। तुम सिद्धहस्त जो ठहरे! सोपान की भूमिका अवश्य लिखूँगा—निश्चित रहो—पहाड़ जाने से पहिले ही भेज दूँगा।

इधर यहाँ पानी बरसने से अच्छा मौसम हो गया है। २५ ता० को यहाँ वोट देने जाना है—हमें कार्पेन्ट्री स्कूल में जाना है—शास्त्रीजी यहाँ से उम्मीदवार हैं। तुम आपरेशन से घबड़ाना नहीं—बड़ा माइनर आपरेशन माना जाता है। तेजी जी प्रसन्न और स्वस्थ होंगी। उन्हें मेरी बहुत नमस्ते देना। शांता कहती है तुम्हारे निबंधों की शैली बड़ी सजीव और रोचक है—बच्चन का व्यक्तित्व ही उनमें मुखर हो उठता है।

अमित खूब पढ़ रहा होगा।
शेष फिर—

मेरा बहुत प्यार लो
साईंदा

९०

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
२८-२-६२

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिला, समाचार ज्ञात हुए। आपरेशन हो जाने पर तेजी जी से कुछ समाचार भेजवा देना। आजकल तो इलेक्शन की ही धूमधाम है—अब रातदिन उसके परिणाम रेडियो से सुनता हूँ। कांग्रेसी विजय अबके पिछले चुनाव से कहीं अधिक है। डा० केसकर और डा० काटजू बिचारे हार गए। खैर, राज्यसभा आदि के द्वारा ले लिए जाएँगे।

इधर कोई विशेष कार्य नहीं किया—धूमधाम करता रहा। फ़्लावर शोज़ आजकल हो रहे हैं—गार्डन कंपेटीशंस भी। डा० मुकर्जी का बाग़ बहुत अच्छा लगा। तुम्हारे 'नए-पुराने झरोखे' भी कुछ और पढ़े—अब मौसम भी बदलने लगा है। तुम्हारे पिछले पत्र में तो कुछ उल्लेखनीय उत्तर देने लायक है नहीं। अमित हॉस्टल चला गया, अच्छा हुआ। खूब पढ़ रहा होगा। बन्टी भी जाने की तैयारी कर रहा होगा।

हम लोग यहाँ ठीक ही हैं। शांता कहती है १०८ बार नमस्ते करने की आवश्यकता नहीं—बच्चन सिद्धहस्त लेखक ठहरा—उसकी चीज़ कैसे बुरी हो सकती है। उसमें कहने वाले की क्या तारीफ़? सो तुम

जानो। अच्छा, खूब प्रसन्न मन से आपरेशन कराओ और आराम करो। चलो, आपरेशन ही के बहाने सही—संभव है लेटे २ भी काम करने लगो। पर आराम बड़ी चीज़ है। तेजी जी को मेरा बहुत प्यार देना। और तुम भी लेना—

तुम्हारा
साईंदा

भाई बच्चन जी,

१०८ बार नमस्कार तो वोट माँगनेवाले करते हैं। क्या आप भी कुछ तैयारी में हैं? आशा है आपका आपरेशन खूब सफल रहेगा। तेजी जी से सस्नेह नमस्कार।

सादर

शांता

९१

भारत सरकार
आकाशवाणी—इलाहाबाद

पत्र संख्या : इलाहा—१५ (३)।६१ पी० १

दिनांक ७ मार्च १९६२

प्रिय बच्चन,

* ता० २९ अप्रैल १९६२ को आकाशवाणी के इलाहाबाद केन्द्र से एक अखिल भारतीय कवि सम्मेलन रात्रि को ९॥ बजे प्रसारित होने का आयोजन निश्चित हुआ है। आपसे मेरी व्यक्तिगत रूप से प्रार्थना है कि

*कोट्स का हिस्सा रेडियो के गश्ती पत्र का है—संपादक

इस कवि सम्मेलन को सफलता प्रदान करने के लिए आप इसमें अवश्य सम्मिलित होने की कृपा करें।

आशा है आप इस आयोजन की शोभा बढ़ाकर मुझे कृतज्ञ करेंगे।" हमेशा मैंने ही दिल्ली आने का ठेका नहीं लिया है इसबार अवश्य आकर कुछ रोज़ यहाँ रहो—तुम्हें विश्राम भी मिल जाएगा—और भी बड़ा लाभ होगा तीर्थ राज का ! अभी से छुट्टी इत्यादि का प्रबंध करवा लेना।

(ह०)

सुमित्रा नन्दन पन्त

डा० हरिवंश राय बच्चन,
१३, विलिंगटन क्रिसेंट,
नई दिल्ली।

६२

१८।७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
८-३-(६२)

प्रिय तेजी जी,

मेरा तार मिल गया होगा। और बच्चन आराम से होगा। आपको मैं देर से पत्र लिख रहा हूँ, बच्चन ने अपने पिछले पत्र में लिखा था कि आप व्यस्त होंगी—अतः आपको जल्दी उत्तर देने की जरूरत नहीं। घाव भर रहा होगा और कोई काम्प्लीकेशन नहीं होगा।

बच्चन से कह दें कि 'सोपान' की भूमिका अप्रैल में अवश्य लिख दूंगा—कोई चिन्ता न करे। यह भी कह दीजिएगा कि मलाई का गिलास गटक कर जब 'हलाहल' लिखा तो पेट में छुरा लग जाने से अब

अर्जुन-भीम सा योद्धा तो अपने को अवश्य समझने लगा होगा। आशा है आपको मेरी हस्तलिपि पढ़ने में कठिनाई नहीं होगी।

शांता आप लोगों को याद कर रही है—और बच्चन के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिए शुभकामनाएँ भेजती है। कहती है कि मुझे बुलाया होता तो मैं काम कर देती।

अमित मज़े में होगा, खूब पढ़ रहा होगा।

आपको बच्चन को बहुत प्यार—

आपका
साईंदा

९३

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
११-३-(२६)

प्रिय रज्जन,

आपके पत्र से समाचार ज्ञात हुए। कुछ चिन्ता भी हुई। पर यह तो आपरेशन के बाद और क्लोरोफ़ार्म लेने के बाद थोड़ी बहुत मात्रा में कष्ट होता ही है। आशा है अब बच्चन ठीक होगा। कल शनिवार को तुम्हारा पत्र मिला था। अभी मैंने ३५०५३ को ट्रंक काल बुक किया था, पर यहाँ वाले ने कहा कि दिल्ली से इस नंबर पर कोई उत्तर नहीं दे रहा है। शायद आप और तेजी जी दोनों ही अस्पताल ही में होंगे। इसीलिए मैंने रात को फ़ोन किया था—अब उसके बाद ही यह पत्र लिख रहा हूँ।

भइया, शीघ्र समाचार देना कि अब तबियत कैसी है। मेरे समझ में तो अब वैसी कोई शिकायत नहीं होगी जैसी आपने पिछले पत्र में

लिखी है। ग्लूकोज़ लेना तो ठीक ही है। मेरा बच्चन से बहुत प्यार कह दीजिएगा। और यह कि भगवान से प्रार्थना है कि वह शीघ्र ठीक हो जाए। तेजी जी को भी बहुत २ नमस्ते कहिएगा। घबड़ाने की तो अब कोई बात रही नहीं होगी—न कोई काम्प्लीकेशन ही होने की संभावना है। आशा है आप अच्छे हैं। आपके वहाँ पहुँच जाने से तेजी जी और बच्चन को बहुत मदद मिलेगी। यह बड़ा अच्छा हुआ।

शेष फिर—

सस्नेह,
आपका
सुमित्रा नन्दनपन्त

प्रिय तेजी जी,

मुझे आशा है बच्चन अब काफ़ी ठीक होगा और उसे कोई तकलीफ़ अब नहीं रही होगी।

रज्जन से समाचार पाकर पहिले तो थोड़ी चिन्ता हुई पर पीछे सोचा कि यह स्वाभाविक ही है—हालाँ इतना भी कष्ट नहीं होना चाहिए था। पर अपना अपना सिस्टम है।

आशा है अब ठीक हैं और घबड़ा नहीं रही हैं।

आपको बहुत प्यार—
साईंदा

६४

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
१६-२-६२

प्रिय तेजी जी,

आपके पत्र से बच्चन के कुशल समाचार मिले—यह जानकर प्रसन्नता हुई कि बच्चन अब ठीक हो रहा है और उसकी दशा में सुधार हो रहा है। आप लोग शायद जब तक यह पत्र वहाँ पहुँचे घर पहुँच जाएँगे। और बच्चन एक सप्ताह में ठीक हो जाएगा। वैसे अब उसे पानी की बाल्टी वगैरह भारी चीज़ें नहीं उठानी चाहिए, बहुत सीढ़ियाँ भी नहीं चढ़नी चाहिए—न ऊँची चढ़ाई ही।

मेरा स्वास्थ्य भी इधर ठीक नहीं रहा। आज से डाइबिनीज़ खाना बंद कर दिया है—ब्लड शुगर इधर चिन्ताजनक बढ़ गई थी। कल से एक नए तरह का इनसूलिन चला है डाक्टर उसे बता रहे हैं—एक हफ़्ते के भीतर शुगर कंट्रोल पर आ जाएगी। वैसे गत वर्ष जितनी बढ़ गई थी उतनी नहीं बढ़ी है। फिर भी विश्राम करने को कहा है—सप्ताह भर तक।

रज्जन के पिता जी का स्वास्थ्य अब ठीक होगा। आप वहाँ अकेली पड़ गई थीं। बड़ी मेहनत पड़ी होगी। बच्चन से मेरा बहुत प्यार कहिएगा। एप्रिल में उसकी भूमिका ज़रूर लिखूंगा—और याद दिलाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। बच्चन ठीक होने पर आपसे अपनी वीरता तो क्या बघारेगा—आपका तो इससे भी सीरियस आपरेशन हो चुका है। हाँ, अजित से, मुझसे, और लोगों से डींग मारने को एक नया विषय उसे अवश्य मिल गया। शांता बहुत बिचारी चिंतित थी रज्जन का पत्र पढ़ कर। अब आपके पत्र को पाकर प्रसन्न है और बच्चन को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करने के लिए अपनी शुभकामनाएँ

भेजती है।

यहाँ तो अब गर्मी का भी दौरा है। पता नहीं बच्चन एप्रिल २६ को यहाँ कवि सम्मेलन में आ सकेगा कि नहीं। नरेन्द्र तो आ रहा है।

अमित प्रसन्न होगा—आपकी भी परेशानी अब कम होगी। मैं जल्दी ही ठीक हो जाऊँगा। शेष आपका पत्र आने पर—

सस्नेह—
आपका
साईंदा

६५

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
२१-३-(६२)

प्रिय बच्चन,

अजित का पत्र मिल गया था। उसे बहुत धन्यवाद दे देना। तुम अब अच्छे हो जानकर प्रसन्नता हुई। अब तो घर भी पहुँच गए होगे। तुम्हारी 'प्राण बुलबुल' कविता 'कादंबिनी' में पढ़ी—सुन भी चुका था—बड़ी अच्छी है।

तुम्हें, तेजी जी और अमित को होली की बहुत-बहुत बधाई भेजता हूँ। तुम्हारे दोनों गालों में अबीर गुलाल—और पेट में जहाँ पर आपरेशन हुआ है एक ज़ोर की रंग की पिचकारी! जिससे सब कष्ट दूर हो जाएगा। तेजी जी को भी होली की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ और प्यार भेजना हूँ।

अजित-स्नेह को भी मेरी ओर से बहुत बधाइयाँ कह देना—उसकी पुस्तक 'अंकित होने दो' अभी नहीं मिली—यह भी कह देना। तुम खूब

आराम करो। और मेरे आने तक पहलवान बन जाओ एकदम !

तुम्हारी भूमिका २ ता० एप्रिल से लिखना शुरू करूँगा। पहिली एप्रिल को तो तुम्हारा दिवस ही मनाया जाता है ! गर्मी यहाँ द्वितीय चरण बढ़ा चुकी है ! दिल्ली में सरगर्मी अलग हुई !

अपने समाचार जब अपनी लेखनी से भेजोगे विदाउट आफ़ कोर्स स्ट्रेनिंग योरसेल्फ़—तब संतोष होगा। शेष ठीक। शांता बहुत २ तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए शुभकामनाएँ भेजती है। बिचारी बार २ कहती थी कि बच्चन को न जाने कितना कष्ट है ! यह तो उसे भी मालूम था कि तुम बातों के ही वीर हो। वैसे तो होली के अ-वीर ही रहे।

अच्छा, बहुत २ शुभकामनाएँ और प्यार—

साईंदा

९६

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
१०-४-(६२)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा कार्ड मिल गया था। इधर मैं भी सिम्पेथेटिक वाइब्रेशन के कारण बीमार पड़ गया था। ब्लड शुगर तो मेरी प्रायः महीने भर से बढ़ गई है। बुखार भी आ गया था। अब भी बदन टूटा-टूटा रहता है। कुछ तो मौसम बदलने के कारण, कुछ अष्टग्रहों के कारण ! तुम्हें तो अष्टग्रहों ने पेट में छुरे का घाव करके महाभारत के वीरों की तरह प्रसिद्ध कर ही दिया है। इतने धैर्य से तो शायद ही उन्होंने खड्ग का आघात सहा हो। ख़ैर, अब तुम्हारे हाथ का लिखा पत्र पाकर बड़ा संतोष हुआ। अभी कमज़ोरी होगी, धीरे २ वह भी दूर हो जाएगी। श्री तेजी जी को

बड़ी परेशानी उठानी पड़ी तुम्हारी अस्वस्थता के कारण—आशा है अब उदर में वायु अवरोध के कारण कष्ट नहीं होता।

१४ ता० वहाँ आने का विचार था पर वर्तमान स्वास्थ्य की दशा में शायद ही आ पाऊँगा। शुगर बढ़ जाने के कारण रात भर नींद नहीं आती, बदन में भी दर्द रहता है। इधर किसी ने चने का पानी और नींबू बतलाया है—आजकल इनसूलिन के साथ वह भी ले रहा हूँ। तुम पता नहीं, २६ ता० के कवि सम्मेलन में आ रहे हो कि नहीं! हमारे आई० एण्ड बी० के मन्त्री तो श्री गोपाल रेड्डी साहब हो गए हैं, आज ही सबेरे के पत्र से मालूम हुआ! डा० केसकर अब क्या कर रहे हैं? तुम्हें मालूम हो तो या दिल्ली में किसी से पूछकर लिखना।

तुमने पुराणी जी के लिए इधर-उधर अमरीका में दूतावासों को लिख दिया, यह बड़ा अच्छा हुआ। वह २ ता० फ्लाई करके सिंगापुर होते हुए चले गए हैं। संभवतः ४/५ महीने या इससे भी अधिक बाहर रहें।

'सोपान' की भूमिका अभी पहिली ही सीढ़ी पार नहीं कर सकी है मेरी अस्वस्थता के कारण—पर उसे तो अब उठा ही लिया है—अभी लिखना तो नहीं शुरू किया पर महाकवि के मानसलोक में 'सोपान' लगाकर प्रवेश करने का प्रयत्न कर रहा हूँ—कुछ नोट्स मन में तैयार हो जाएँ तो क़लम उठाऊँ। लिखने में कितनी देर लगती है! पर तुम पर लिखना कोई आसान तो है नहीं—बहरहाल २-३ सप्ताह में जब भी हो सकेगा उसी को पूरा करने की चिन्ता में हूँ। अमित प्रसन्न होगा। अजित और स्नेह को भी याद कर देना। तेजी जी को मेरा बहुत २ प्यार देना—तुम्हारे बाद उन्हें मैं ही प्यार करता हूँ—यह सच है। इसमें कुढ़ने की कोई बात नहीं है।

पत्रोत्तर शीघ्र देना—वहाँ राजधानी के रोचक नवीन समाचार लिखना। यहाँ बड़ा शोर है कि दिनकर भी उपमंत्री इस बार होने जा रहे हैं—कहाँ तक सच है—पता नहीं! हम तो राष्ट्रपति भवन में रहने

और राष्ट्रपति बनने के लम्बे स्वप्न देखा करते हैं—तुम्हीं मदद कर सकते हो।

शेष फिर,

बहुत प्यार—
साईंदा

९७

इलाहाबाद
१६-४-(६२)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र १२ ता० शनिवार को मिला, तुम पहिले से अच्छे हो यह जानकर प्रसन्नता हुई।

बच्चन, मेरी ब्लड शुगर तो इस मौसम में बढ़ ही जाती है ४-५ सप्ताह में फिर धीरे २ ठीक होती है—इधर २-३ साल से तो ऐसा ही हो रहा है। डाक्टर तो ट्रेवल करने को मना करता है और २-३ घंटे से अधिक काम करना भी मना है। वसंतागम के बाद ही शुगर बढ़ना शुरू होती है—वह इलाहाबाद हो या दिल्ली। वहाँ तुम स्वयं ही परेशान हो—प्रत्येक सप्ताह युरीन और ब्लड टेस्ट करवाने में व्यर्थ में तुम लोगों को भी परेशानी होती—यहाँ तो फ़ैमीली डाक्टर हुआ—नियमितरूप से फ़ोन कर देने पर आकर यथोचित परीक्षण कर जाता है।

तुम्हें यहाँ आने को किस मुँह से कहूँ—सीढ़ियाँ तो यहाँ भी हैं—दिल्ली में भी—पर यदि तुम न्यू देहली से आओ—एक गाड़ी वहाँ से भी आती है—और यहाँ सिविल लाइन्ज़ की ओर से न आकर सिटी की ओर से आओ—जहाँ हमारी स्टेशन वैगन तुम्हारी प्रतीक्षा करेगी—तो यह बाधा तो अतिक्रम की जा सकती है—शेष रही कमज़ोरी, मन

की इच्छा, तेजी जी और डाक्टर की राय ! उसे तुम तै कर लो—वहाँ से आने को साथ नरेन्द्र का हुआ ही—वह रास्ते में तुम्हारी देख-रेख कर देगा—जहाँ जो तुम्हारा मिनू होगा लिख देना सब वैसा ही भोजन मिलेगा—रात को सब लोग बाहर सोएँगे—खूब अच्छा रहता है—एक सप्ताह की छुट्टी पर आओ तो विश्राम भी, प्यार भी—सभी कुछ हो जाए—तेजी जी को भी ले आओ तो फिर क्या पूछना—महादेवी जी की कविता है—'जो तुम आ जाते एक बार !'—

तुम्हारी भूमिका तो अब धीरे-धीरे दिमाग़ में रंग ला रही है—उसे तो लिखूंगा ही और मई में पहाड़ जाने से पहिले ही संशोधन के लिए तुम्हारे पास भेज दूंगा—जहाँ कमी रह जाएगी—मैं ठीक नहीं समझ पाऊँगा तुम सुझा देना—वह बदल दिया जाएगा।

अमित तो पास हो ही जाएगा—अब तुम्हारी तरह दम तोड़ कर मेहनत नहीं कर सकता, क्या किया जाय ! मैं भी नहीं कर सकता—देवता जो ठहरा !

खैर, अपनी ठीक से देखभाल करना और डिप्रेशन वग़ैरह को दूर भगाओ—मंगल भवन अमंगल हारी की अँगुली पकड़ कर भला क्या चिंता करना—खूब ठहाका लगाओ—प्रिय मित्रों से मिलो—जी बहलाओ—भगवान का स्मरण करो—जुलाई से सब बहुत अच्छा है—वैसे इधर १४ ता० से भी कुछ सुधार मनोदशा में होगा—पंडित जी के भी। अब उच्च का सूर्य दसवां आ गया है—विजय, उत्साह कोई विशिष्ट कार्य संपादन होगा। मंगल तीसरा पराक्रम में आ गया है। सो चिंता की बात नहीं रह गई है—माइनर पिन प्रिक्स रह जाएगी—उनकी कौन परवाह करता है—तुम तो ज्ञानी भक्त ठहरे। अमित और तेजी जी को बहुत प्यार देना—तुम्हें भी बहुत प्यार—पत्र शीघ्र देना—

सदैव,

सांइदा

९८

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
२८-४-६२

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिल गया था। पर मैं तुम्हारी 'सोपान' की भूमिका लिखने में व्यस्त था, अभी समाप्त की—१७ एफ़० सी० पृष्ठ मेरे हाथ की घनी लिखावट के हुए—बहुत संक्षेप में लिख सका जैसे कोई हवाई जहाज़ से यात्रा कर रहा हो—गर्मी बहुत है मेहनत नहीं हो सकी। अब रिवाइज़ भर करना है। तुम्हें कब चाहिए? तुम उसे देखकर काट-छांट कर लेना—जहाँ चाहो बदल भी लेना। जाड़ों में लिखता तो तुम्हारे साथ अधिक न्याय हो पाता—पर ख़ैर—जैसी है स्वीकार करो। तुम्हारे सजेशन्स इनकारपोरेट कर यत्रतत्र परिवर्तित परिवर्धित कर दूंगा।

कल प्रातः नरेन्द्र आ रहा है—कांता भी। तुम तो शायद ही आ पाओ—मैं ही मथुरा से शादी के बाद (शांता की भतीजी की) २१/२२ तक दिल्ली वहाँ से २५/२६ तक काश्मीर महादेवी—पाँडे जी के साथ जाने का विचार कर रहा हूँ—तुम लोग भी चलो तो बड़ा मज़ा रहे—कश्मीरी सुंदरियों को हम तुम बाँट लेंगे।

अमित को बंबई भेजने में कोई बुराई नहीं—उसे अभिनय का शौक है—अपनी क्षमता, वहाँ के वातावरण की परीक्षा कर लेगा और डिस-इल्यूज़ंड हो गया तो ठीक ही है—वहीं के लिए बना है तो वह भी मालूम पड़ जाएगा—न भेजने से उसके मन में क्षोभ-संशय बना ही रहेगा। तेजी जी की राय ले लो। तुम अब अच्छे हो जानकर प्रसन्नता हुई। गर्मी यहाँ इस छोटे घर में बहुत है—अभी एयर कांडीशनर आन नहीं किया है—कल से करने का विचार है। तेजी जी प्रसन्न होंगी—अमित घर आ गया होगा, उसके पर्चे ठीक हुए होंगे।

पंडित नेहरू जी का स्वास्थ्य अब अच्छा होगा—इधर के चित्र तो पत्रों में स्वस्थ आए हैं।

तुमने पत्र में न जाने क्या लिखा था। इस समय सफ़ाई कमरे की हो रही है—इसलिए पत्र मिल नहीं रहा है। बहरहाल, हम लोग ठीक हैं—तुम सपरिवार सानंद होगे। तुम्हें तेजी जी अमित को बहुत प्यार—

साँईदा

९९

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद।
८-२-('६२)

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र शाम की डाक से मिला—टंकित पत्र से मुक्ति मिली, चलो, अच्छा हुआ। कवि सम्मेलन के बारे में तुम्हारी राय ठीक है। पर अनेक कारणों से अनेक तरह के लोगों को रखना पड़ता है।

मैंने तो तुम्हारी भूमिका 'सोपान पर से' 'सोपान' ही को लक्ष्य करके लिखी है—अब तुम जिस में छपाओ। 'सिन्धु फेन' *नाम तो ठीक नहीं—फरोथ की सेंस देता है—'सिन्धुजा' रख लो—अपनी रचनाओं के समुद्र में जो संकलन (सार) तुमने निकाला है वह सिन्धुजा ऑर लक्ष्मी। सिन्धुपुष्प शंख को कहते हैं—शंख तुम हो सकते हो तुम्हारी रचनाएँ नहीं—शंखनाद रखो तो (तुम्हारे) तुम्हारी शंख वाली पर्सनेलिटी भी आ जाएगी—ध्वन्यार्थ। 'सिन्धुजा' अच्छा नाम है।

अपनी लिखी भूमिका टाइप करने दी है—कौन दुबारा कापी

*मैंने 'क्षीर फेम' लिखा था पंत जी ने उसे ग़लत पढ़ा।—संपादक

करता। पर भई, उसे तुम देख लो—इधर उधर बदलना पड़े तो बदली जाएगी—कोई ब्रह्मा का लिखा तो है नहीं कि बदला न जा सके। पुनश्च में तो मैंने दो एक पंक्तियाँ न छपने के लिए लिखी हैं। संभव है कहीं मैं न समझा होऊँ—जल्दी में तो लिखी ही है। मुझे मालूम होता कि सोपान की अभी ४०० प्रतियाँ हैं तो मैं जाड़ों में लिखता। पर जैसी बन पड़ी है बहुत असंतोषप्रद न हो। पर तुम पढ़ कर निःसंकोच अपना मत देना—मैं जब दिल्ली आऊँगा, बदल दूँगा। बृहस्पतिवार को टाइपिस्ट लाएगा—शुक्रवार को तुम्हारे पास भेज दूँगा। आज मंगल है। पहिले भेज देता, द्विवेदी (टाइपिस्ट) बीमार पड़ गया—उसने आफ़िस से ४ दिन की छुट्टी ले ली। कल उसका फ़ोन आया था कि बृहस्पतिवार तक वह ले आएगा। बहुत संभव है मैं १५ ता० को दिल्ली होता हुआ १७ को मथुरा जाऊं। तार से ठीक सूचना दूँगा। २० ता० को तो मथुरा ही रहना होगा। १९ को शादी है। जून में अल्मोड़े में मेरी भतीजी की शादी तय हो गई—स्व० हरदत्त पंत जी की बड़ी लड़की।

अमित क्या बंबई जा रहा है? तेजी जी की क्या राय है? तुमने पंडित जी के स्वास्थ्य के बारे में नहीं लिखा—यहाँ जनरव है कि उन्हें डा० मेहता ने कैंसर बतलाया है! मैं सोचता हूँ यह जनरव ही होगा।

पत्रोत्तर शीघ्र देना। मेरा स्वास्थ्य भी धीरे २ ठीक हो रहा है। काश्मीर जाने की बात तो नहीं रही अब—अल्मोड़ा जो जाना पड़ेगा भतीजी की शादी करने! वैसे भी मुझे तेजी जी का ध्यान रखना पड़ता, सुंदरियाँ तुम्हें वैसे भी नहीं मिल सकतीं।

'मधुशाला' मिल गई थी—अपनी पैराडी भी देख ली थी। नवीन समाचार सामान्य हैं गर्मी यहाँ अच्छी है—दिन भर ऊंघता रहता हूँ। तेजी जी और अमित को बहुत प्यार देना—अपने को भी—

तुम्हारा ही
साईंदा

१००

१८/७ बी, स्टैनली रोड,
इलाहाबाद
११-५-(६२)

प्रिय बच्चन,

मेरा पिछला पत्र मिला होगा—तुम्हारे काव्य का एक छोटा-मोटा लेखाजोखा भेज रहा हूँ : यह अंतिम रूप नहीं, प्रारूप भर है तुम देख लो—नि:संकोच होकर अपनी राय दो; जहाँ ठीक न लगे, निशान लगा दो—जब मैं शादी के बाद मथुरा से दिल्ली २।३ दिन को आऊँगा, तब ठीक कर दूँगा—टंकन की त्रुटियाँ भी रह गई हों—तुम उसके बाद इसे पुन: टंकित वहाँ करवा लेना। अपनी निष्पक्ष राय अवश्य लिखना—जाड़ों में अधिक विस्तार से लिख पाता—पर संक्षिप्त भी बुरा नहीं। कभी आगे देखा जाएगा।

गर्मी अच्छी है यहाँ। दिन भर ऊँघ आती है। तुम सपरिवार प्रसन्न होगे। राहुल बाबा के लिए क्या भेजा जाए, तुमने नहीं बताया—या संभवत: मैं पूछना भूल गया होऊँ—महादेवीजी तो भेजने के खिलाफ़ हैं। कहती हैं, राहुल जी ने उनसे स्वयं कहा है कि उन्हें पैसों की कमी नहीं, १५०० प्रति मास तो रायल्टी ही आती है। पर अपनी पत्नी की लोभवृत्ति से दु:खी थे—महादेवी जी का कहना है। फिर भी तुम जो आदेश दोगे भेज दूँगा—या वहाँ पहुँचने पर दे दूँगा। इधर मेरा भी घन घोर व्यय हो रहा है। अभी अल्मोड़े जाकर हर दा की लड़की की भी शादी करनी है। पर तुम उचित समझते हो तो कुछ दे दूँगा।

श्री तेजी जी सानंद होंगी। उन्हें और अमित को मेरा बहुत प्यार देना। तुम्हारा स्वास्थ्य निश्चय ही मेरे पहुँचने तक ठीक हो जाएगा। एक बार तुम्हें दंगल में हराने की बड़ी इच्छा है। अबके

बड़ी दौड़धूप करनी है—जी घबड़ा रहा है यात्रा से। मैं १७ ता० तक यहाँ से सीधा मथुरा ही जाऊँगा—क्योंकि उससे पहिले शांता फ्री नहीं—कापियाँ देखनी हैं। तुम्हें प्रयाग से गंगाजल के अतिरिक्त और कोई चीज़ दरकार हो तो लिखना—

बहुत प्यार

साईंदा

एवं भी घर के बड़े-बूढ़े उसे गोसाईं दत्त, गुसैं या केवल सैं कहकर पुकारते हैं। (सुमित्रानंदन पंत जीवन और साहित्य' पृ० २२
शांति जोशी।

सुमित्रानन्दन पंत

२० मई, १९०० ई० के दिन कौसानी में श्री सुमित्रानन्दन पंत का जन्म हुआ। अधिकतर इलाहाबाद में इनकी शिक्षा-दीक्षा हुई।

हिन्दी संसार में पंत की ख्याति 'पल्लव' नामक काव्य-संग्रह से हुई जो सर्वप्रथम १९२६ में प्रकाशित हुआ था। 'पल्लव' ने पंतजी को हिन्दी कवि के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। तब से आज तक वे बराबर लिखते रहे हैं। हिन्दी कवियों की अगली पंक्ति में इनकी गणना होती है। भारतीय ज्ञानपीठ और साहित्य अकादेमी ने अपने पुरस्कारों से इन्हें सम्मानित किया है। 'लोकायतन' नामक काव्य-ग्रंथ पर इन्हें सोवियत सरकार ने पुरस्कृत किया। पंत छायावाद के प्रवर्तकों में से एक हैं।

हरिवंशराय बच्चन

डॉ० हरिवंशराय बच्चन का जन्म इलाहाबाद में २७ नवम्बर, १९०७ को हुआ और शिक्षा भी वहीं हुई। बच्चन की ख्याति 'मधुशाला' की रचना के साथ हुई जो सन् १९३५ में प्रकाशित हुई थी। इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, आकाशवाणी, इलाहाबाद आदि स्थानों में कुछ दिन रहकर वे भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ के रूप में काम करने लगे। तदनन्तर राष्ट्रपति द्वारा वे राज्य सभा के सदस्य मनोनीत हुए। साहित्य अकादेमी और सोवियत सरकार के पुरस्कारों से उन्हें सम्मानित किया गया है। बच्चन हिन्दी के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि के रूप में साहित्य-संसार में आए और यह लोकप्रियता अक्षुण्ण रूप में उन्हें अब तक प्राप्त है।

पंत के कुछ सद्यः प्रकाशित काव्य-संकलन

चित्रांगदा (स्वयं कवि द्वारा अपने समस्त संकलनों से चुनी हुई कविताएं)	१२·००
पतझर : एक भाव-क्रांति	१२·००
हरी बांसुरी सुनहरी टेर (सौंदर्य और शृंगारपरक कविताओं का कवि द्वारा संकलित संग्रह)	३·००
आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि पंत (संपादक : बच्चन)	३·००

बच्चन की कुछ नई पुस्तकें

क्या भूलूं क्या याद करूं	(आत्म-चित्रण)	८·००
उभरते प्रतिमानों के रूप	(काव्य)	८·००
कटती प्रतिमाओं की आवाज़	(काव्य)	८·००
हैमलेट	(मुक्त छंद में हिन्दी अनुवाद)	५·००
भाषा अपनी भाव पराये	(विविध भारतीय भाषाओं की चुनी हुई कविताओं का अनुवाद)	५·००

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, द्वारा प्रकाशित